

मङ्सिर - २

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष २८, अङ्क १६

२०७६, मङ्सिर १६-३०

पूर्णाङ्क ६५८



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७२८, ४२००७२९, ४२००७५० Ext. २५११ (सम्पादन), २५१४ (छापाखाना), २१३१ (बिक्री)

फ्याक्स: ४२००७४९, पो.व.नं. २०४३८

Email: [info@supremecourt.gov.np](mailto:info@supremecourt.gov.np), Web: [www.supremecourt.gov.np](http://www.supremecourt.gov.np)

सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

|  |              |
|--|--------------|
| माननीय न्यायाधीश श्री सपना प्रधान मल्ल, सर्वोच्च अदालत                               | - अध्यक्ष    |
| मुख्य रजिष्ट्रार श्री नृपध्वज निरौला, सर्वोच्च अदालत                                 | - सदस्य      |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पदमप्रसाद पाण्डेय, प्रतिनिधि, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय | - सदस्य      |
| रजिष्ट्रार श्री नारायणप्रसाद पन्थी, सर्वोच्च अदालत                                   | - सदस्य      |
| अधिवक्ता श्री रुद्रप्रसाद पोख्रेल, कोषाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन                    | - सदस्य      |
| वरिष्ठ अधिवक्ता श्री खगेन्द्रप्रसाद अधिकारी, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन    | - सदस्य      |
| प्रा.डा.विजय सिंह सिजापति, डिन, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय                  | - सदस्य      |
| सहरजिष्ट्रार श्री भीमकुमार श्रेष्ठ, सर्वोच्च अदालत                                   | - सदस्य सचिव |

सम्पादक : श्री रामप्रसाद पौडेल

सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत्  
कर्मचारीहरू

शाखा अधिकृत श्री देवी चौधरी  
शाखा अधिकृत श्री गोपी विश्वकर्मा  
शाखा अधिकृत श्री नेत्र प्रसाद पौडेल  
कम्प्युटर अधिकृत श्री विक्रम प्रधान  
ना.सु. श्री गीता लुइँटेल  
ना.सु. श्री यशोदा निरौला  
सि.कं. श्री ध्रुव सापकोटा  
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी  
कार्यालय सहयोगी श्री राजेश तिमल्सिना

भाषाविद् : श्री रामचन्द्र फुयाल

बिक्री शाखा

ना.सु.श्री अर्जुन चौधरी

मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

मुद्रण अधिकृत श्री कान्छा श्रेष्ठ  
मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल  
सिनियर हेल्पर श्री तुलसीनारायण महर्जन  
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल  
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी  
सहायक डिजायनर श्री रसना बज्राचार्य  
सिनियर बुकबाइन्डर श्री रमेश बासुकला  
कम्पोजिटर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने  
सिनियर प्रेसम्यान श्री अर्जुन घिमिरे  
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला  
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी  
बुकबाइन्डर श्री गंगा थापा  
बुकबाइन्डर श्री धनमाया मानन्धर

विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा  
प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू

|                 |    |              |    |
|-----------------|----|--------------|----|
| संवैधानिक इजलास | १  |              |    |
| संयुक्त इजलास   | ४  |              |    |
| इजलास नं. १     | ४  | इजलास नं. १० | ५  |
| इजलास नं. २     | ५  | इजलास नं. ११ | ३  |
| इजलास नं. ३     | १५ | इजलास नं. १२ | २  |
| इजलास नं. ४     | १४ | इजलास नं. १४ | २  |
| इजलास नं. ५     | ५  | इजलास नं. १५ | २  |
| इजलास नं. ६     | ५  | इजलास नं. १६ | २  |
| इजलास नं. ७     | ७  | एकल इजलास    | १  |
| इजलास नं. ८     | १२ |              |    |
| इजलास नं. ९     | १० |              |    |
| जम्मा           | ८२ | जम्मा        | १७ |

कूल जम्मा ८२ + १७ = ९९

# नेपाल कानून पत्रिका

मा प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि  
हालसम्म)

हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

**[www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np)**

मा जानुहोला ।

## खोज्ने तरिका

सर्वप्रथम **[www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np)** लगइन गरेपश्चात् गृहपृष्ठमा देखिने **शब्दबाट फैसला खोज्नुहोस्** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गर्नुहोस् । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा वेबसाइटको दोस्रो शीर्षकमा रहेको **वृहत् खोज** खोलेर विभिन्न किसिमले फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाफ्रो बारेमा** समेत हेर्न सक्नुहुनेछ ।

यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्नेछ:

सअ बुलेटिन, २०७०, ... - १ वा २, पृष्ठ ....

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थ: सअ बुलेटिन, २०७६, मङ्सिर - २, पृष्ठ १

## सूचना

**"नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन"** को **"वार्षिक ग्राहक"** बन्न चाहनेका लागि **२०७६ वैशाख अङ्क** देखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ ।

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई **नेपाल कानून पत्रिका रु.७५** र **सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रु.४०** कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ ।

सर्वोच्च अदालतबाट २०७५ सालमा प्रकाशित **नेपाल कानून पत्रिका अतिरिक्ताङ्क २०७१** सीमित मात्रामा रहेकाले आफ्नो प्रति सुरक्षित गर्न सम्बन्धित सबैको लागि जानकारी गराइन्छ ।

ने.का.प.को अतिरिक्ताङ्क २०७२ र २०७३ क्रमशः प्रकाशन हुँदै गरेको पनि जानकारीका लागि अनुरोध छ । साथै सर्वोच्च अदालतबाट नेपाल कानून पत्रिका संवैधानिक इजलास खण्डको छुट्टै प्रकाशन भएको जानकारी गराउन चाहन्छौं । यस वर्ष **वातावरणसँग सम्बन्धित फैसलाहरूको सङ्कालो, २०७६** पनि प्रकाशन भएकाले आफ्नो प्रति बेलैमा सुरक्षित गर्न सम्बन्धित सबैको लागि अनुरोध छ ।

मूल्य रु.४०।-

मुद्रक: सर्वोच्च अदालत, छापाखाना

## विषयसूची

| क्र.सं.                | विषय                               | पक्ष / विपक्ष  | पृष्ठ |                    |  |  |                |
|------------------------|------------------------------------|--|-------|--------------------|--|--|----------------|
| <b>संवैधानिक इजलास</b> |                                    |  |       | <b>१ - २</b>       |  |  |                |
| १.                     | उत्प्रेषण                          | अमिट के.सी. भन्ने<br>चित्रबहादुर खत्री वि.<br>प्रधानमन्त्री तथा<br>मन्त्रिपरिषद्को<br>कार्यालयसमेत | १     | ९.                 | नापी दर्ता<br>बदर गरी<br>दर्ता<br>गरिपाउँ  | माकुरजङ्ग पालुडबा<br>वि. दिपेस बरालसमेत                        | ९              |
| <b>संयुक्त इजलास</b>   |                                    |  |       | <b>२ - ५</b>       |  |  |                |
| २.                     | कर्तव्य<br>ज्यान                   | नेपाल सरकार वि.<br>देवीराम नेपाली  | २     | १०.                | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                     | बाबु भण्डारीसमेत वि.<br>महानगरीय अपराध<br>महाशाखा, टेकुसमेत    | १०             |
| ३.                     | मानव<br>बेचबिखन<br>तथा<br>ओसारपसार | हुकुम सिंह डाँगी वि.<br>नेपाल सरकार  | ३     | ११.                | कर्तव्य<br>ज्यान                           | बलबहादुर कुँवर वि.<br>नेपाल सरकार                              | १०             |
| ४.                     | उत्प्रेषण /<br>परमादेश             | मिलन कुर्मीसमेत वि.<br>भूमिसुधार तथा<br>व्यवस्था मन्त्रालयसमेत                                     | ४     | १२.                | आ.व.<br>०६१।६२<br>मूल्य<br>अभिवृद्धि<br>कर | दीर्घराज मैनाली वि.<br>गौरा दोलखा ज्वाइन्ट<br>भेन्चर, विराटनगर | ११             |
| ५.                     | उत्प्रेषण /<br>परमादेश             | अधिवक्ता गणेशप्रसाद<br>दुलाल वि. प्रधानमन्त्री<br>तथा मन्त्रिपरिषद्को<br>कार्यालयसमेत              | ४     | <b>इजलास नं. ३</b> |  |  | <b>११ - १८</b> |
| <b>इजलास नं. १</b>     |                                    |  |       | <b>५ - ९</b>       |  |  |                |
| ६.                     | अंश                                | जनार्दन विश्वकर्मा<br>बढैसमेत वि. डिराम बढै  | ५     | १३.                | लेनदेन                                     | दीपकरत्न तुलाधर वि.<br>स्याकार कम्पनी लि.                      | ११             |
| ७.                     | शेषपछिको<br>बकसपत्र<br>लिखत बदर    | विजयहरि शर्मा वि.<br>अजयहरि ढुंगाना  | ७     | १४.                | मानव<br>बेचबिखन<br>तथा<br>ओसारपसार         | मुस्तान बरमनसमेत वि.<br>नेपाल सरकार                            | १२             |
| <b>इजलास नं. २</b>     |                                    |  |       | <b>९ - ११</b>      |  |  |                |
| ८.                     | निषेधाज्ञा                         | रामलाल बम्जन वि.<br>जिल्ला प्रशासन<br>कार्यालय,<br>कलैयासमेत                                       | ९     | १५.                | उत्प्रेषण                                  | रूपनारायण श्रेष्ठ वि.<br>राजकुमार श्रेष्ठ                      | १३             |
| ९.                     | उत्प्रेषण /<br>परमादेश             | नेत्रबहादुर लिम्बू वि.<br>शिक्षा मन्त्रालय,<br>सिंहदरबारसमेत                                       | ९     | १६.                | मानव<br>अपहरण<br>तथा<br>शरीरबन्धक          | नेपाल सरकार वि.<br>सुमन तामाडसमेत                              | १४             |
| १०.                    | कर्तव्य<br>ज्यान                   | नेपाल सरकार वि.<br>डम्बरबहादुर चोडवाड  | १५    | १७.                | उत्प्रेषण /<br>परमादेश                     | नेत्रबहादुर लिम्बू वि.<br>शिक्षा मन्त्रालय,<br>सिंहदरबारसमेत   | १६             |

| इजलास नं. ४ |  |  | १८ - ३४ |
|-------------|--|--|---------|
| १९.         | बैंकिङ कसुर                                    | नेपाल सरकार वि.<br>MITKO<br>STOYANOV<br>MITEV  | १८      |
| २०.         | बन्दी प्रत्यक्षीकरण                            | मिस्रा पुन वि. गृह मन्त्रालय,<br>सिंहदरबारसमेत   | १९      |
| २१.         | सरकारी छाप दस्तखत कित्तै                       | नेपाल सरकार वि.<br>सुरेश महर्जन  | १९      |
| २२.         | उत्प्रेषण / परमादेश                            | यशबर्धन मोर वि. अर्थ मन्त्रालय,<br>सिंहदरबारसमेत                                       | २०      |
| २३.         | झुट्टा विवरण दिई नागरिकता लिएको                | नेपाल सरकार वि.<br>चन्द्रबहादुर कुँवरसमेत  | २१      |
| २४.         | उत्प्रेषण / परमादेश                            | कमलप्रसाद ज्ञवाली वि.<br>उच्च अदालत पाटन,<br>ललितपुरसमेत                               | २३      |
| २५.         | डाँका चोरी ज्यान मार्ने उद्योग                 | नेपाल सरकार वि.<br>रघुनाथ लोनियासमेत   | २५      |
| २६.         | बन्दी प्रत्यक्षीकरण                            | अर्जुन खड्का वि. गृह मन्त्रालय,<br>सिंहदरबारसमेत                                       | २६      |
| २७.         | कित्तै जालसाजी                                 | कमलवती देवी वि. बेचु मण्डलसमेत   | २७      |
| इजलास नं. ५ |  |  | २८ - ३२ |
| २८.         | कर्तव्य ज्यान                                  | नेपाल सरकार वि.<br>मिमकोसा विष्ट   | २८      |
| २९.         | मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार                      | नेपाल सरकार वि.<br>बाबुकृष्ण रिमाल   | २८      |
| ३०.         | ठगी  | नेपाल सरकार वि.<br>अस्मिता खड्कासमेत   | २९      |
| ३१.         | उत्प्रेषण / परमादेश                            | रामवृक्ष महतोसमेत वि.<br>सामान्य प्रशासन मन्त्रालय,<br>सिंहदरबारसमेत                   | ३०      |
| ३२.         | उत्प्रेषण / परमादेश                            | मधुसुदन दिक्षित वि.<br>थान्सिङ्ग गाउँ विकास समितिको कार्यालय,<br>थान्सिङ्ग नुवाकोटसमेत | ३१      |
| इजलास नं. ६ |  |  | ३२ - ३७ |
| ३३.         | जबरजस्ती करणी                                  | नेपाल सरकार वि.<br>विष्णुबहादुर ठडराई  | ३२      |
| ३४.         | गौवध   | नेपाल सरकार वि. छेदर भोटेसमेत  | ३३      |
| ३५.         | लागु औषध                                       | नेपाल सरकार वि.<br>गणेश श्रेष्ठसमेत  | ३३      |
| ३६.         | लागु औषध (खैरो हेरोइन)                         | नेपाल सरकार वि.<br>राजकुमार साहसमेत  | ३५      |
| ३७.         | कर्तव्य ज्यान                                  | देवीराम पाण्डे वि.<br>नेपाल सरकार  | ३६      |
| इजलास नं. ७ |  |  | ३७ - ४५ |
| ३८.         | जबरजस्ती करणी उद्योग                           | नेपाल सरकार वि.<br>मानबहादुर पुलामीमगर   | ३७      |
| ३९.         | लागु औषध ब्राउन सुगर भनी अन्य पदार्थको कारोबार | नेपाल सरकार वि. सालु सल्मानीसमेत   | ३८      |

|                    |  |   |                |
|--------------------|--|---|----------------|
| ४०.                | मानव<br>बेचबिखन<br>तथा<br>ओसारपसार                         | पद्म वि.क. वि. नेपाल<br>सरकार   | ३९             |
| ४१.                | अंशबन्डा   | लिलादेवी अधिकारी वि.<br>पूर्णकुमारी महतो<br>अधिकारी   | ४१             |
| ४२.                | कर्तव्य<br>ज्यान   | नेपाल सरकार वि.<br>चमेली थामीमगरसमेत  | ४२             |
| ४३.                | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण                                     | LILY TIAN को हकमा<br>सविना तुलाधर वि.<br>त्रिभुवन विमानस्थल<br>भन्सार कार्यालय,<br>काठमाडौंसमेत | ४४             |
| <b>इजलास नं. ८</b> |  |   | <b>४५ - ५३</b> |
| ४४.                | जबरजस्ती<br>करणी   | नेपाल सरकार वि.<br>ढाकबहादुर तामाङ  | ४५             |
| ४५.                | कर्तव्य ज्यान  | नेपाल सरकार वि.<br>राजेश राना   | ४५             |
| ४६.                | कर्तव्य ज्यान  | नेपाल सरकार वि.<br>खड्कबहादुर मगर   | ४६             |
| ४७.                | कर्तव्य ज्यान  | नेपाल सरकार वि.<br>जङ्गला सरदारसमेत   | ४७             |
| ४८.                | कर्तव्य ज्यान  | नेपाल सरकार वि.<br>कुलबहादुर बुढा   | ४७             |
| ४९.                | सार्वजनिक<br>जग्गा खिचोला<br>छोडाई घर<br>नाद भत्काई<br>चलन | भुवन बैठा धोबी वि.<br>जंगी साह कानूसमेत   | ४८             |
| ५०.                | हक कायम<br>नामसारी   | गजेन्द्रनाथ<br>श्रीवास्तवसमेत वि.<br>निशाकुमारी श्रीवास्तव                                      | ४८             |

|                     |                               |   |                |
|---------------------|-------------------------------|---|----------------|
| ५१.                 | कर्तव्य ज्यान                 | चन्द्रेश्वर राय यादवसमेत<br>वि. नेपाल सरकार                             | ४९             |
| ५२.                 | लिखत बदर                      | बालकृष्ण शाक्यसमेत<br>वि. कपना श्रेष्ठ                                  | ५१             |
| ५३.                 | अंश चलन                       | खेरू गन्नाई वि. हेवला<br>गन्नाईसमेत                                     | ५२             |
| ५४.                 | अदालतको<br>अवहेलना            | फणिन्द्रकुमार यादव वि.<br>नरेन्द्र शर्मा                                | ५३             |
| <b>इजलास नं. ९</b>  |                               |   | <b>५३ - ६०</b> |
| ५५.                 | उत्प्रेषण /<br>परमादेश        | जगदेव चौधरी वि.<br>स्वास्थ्य तथा<br>जनसंख्या मन्त्रालय,<br>रामशाहपथसमेत | ५३             |
| ५६.                 | मानव<br>छोडपत्रको<br>लिखत बदर | ब्रजेश भारतीसमेत वि.<br>विशाल भारती                                     | ५५             |
| ५७.                 | वैदेशिक<br>रोजगार कसुर        | नेपाल सरकार वि.<br>धनबहादुर थापासमेत                                    | ५६             |
| ५८.                 | कर्तव्य ज्यान                 | नेपाल सरकार वि.<br>जनकुमारी राई   | ५७             |
| ५९.                 | कर्तव्य ज्यान                 | नेपाल सरकार वि.<br>दिलबहादुर सिंह                                       | ५९             |
| <b>इजलास नं. १०</b> |                               |   | <b>६० - ६४</b> |
| ६०.                 | कर्तव्य<br>ज्यान              | नेपाल सरकार वि.<br>ताक्सी लामा तामाङ                                    | ६०             |
| ६१.                 | निषेधाज्ञा                    | कृष्णबहादुर गुरुङ वि.<br>फागुराम आलेमगर                                 | ६१             |
| ६२.                 | अंश चलन                       | रामझरिया थरुनीसमेत<br>वि. जोधा चौधरीसमेत                                | ६१             |
| ६३.                 | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण        | ईश्वर पल्ली मगर वि.<br>धादिङ जिल्ला<br>अदालत, धादिङसमेत                 | ६२             |

|                     |                                  |  |                |
|---------------------|----------------------------------|--|----------------|
| ६४.                 | राष्ट्रिय वनको जग्गाको दर्ता बदर | गोविन्दप्रसाद सापकोटासमेत वि. शंकरनगर सामुदायिक वन उपभोक्ता समिति, रूपन्देही | ६३             |
| <b>इजलास नं. ११</b> |                                  |  | <b>६४ – ६७</b> |
| ६५.                 | बन्दी प्रत्यक्षीकरण              | राजकुमार खड्गी वि. ललितपुर जिल्ला अदालत, (तहसिल शाखा) समेत                   | ६४             |
| ६६.                 | कर्तव्य ज्यान                    | नेपाल सरकार वि. रामबहादुर थापा मगर   | ६५             |
| ६७.                 | ठगी                              | नेपाल सरकार वि. कमल खड्का  | ६६             |
| <b>इजलास नं. १२</b> |                                  |  | <b>६७ – ६८</b> |
| ६८.                 | जबरजस्ती र नकबजनी चोरी           | नेपाल सरकार वि. छेदा रानासमेत  | ६७             |
| ६९.                 | बहुविवाह                         | नेपाल सरकार वि. शोभा श्रेष्ठ गुरुङ   | ६८             |

|                     |                      |  |                |
|---------------------|----------------------|--|----------------|
| <b>इजलास नं. १४</b> |                      |  | <b>६९ – ७२</b> |
| ७०.                 | कर्तव्य ज्यान        | नेपाल सरकार वि. ईन्द्रा कुमाल  | ६९             |
| ७१.                 | कर्तव्य ज्यान        | नेपाल सरकार वि. प्रमोद अर्यालसमेत  | ६९             |
| <b>इजलास नं. १५</b> |                      |  | <b>७२ – ७३</b> |
| ७२.                 | नामसारी दर्तासमेत    | प्रकाशमान कंसाकार वि. शरणरत्न स्थापित                                      | ७२             |
| ७३.                 | कर्तव्य ज्यान        | नेपाल सरकार वि. केदारप्रसाद दाहाल  | ७२             |
| <b>इजलास नं. १६</b> |                      |  | <b>७३ – ७५</b> |
| ७४.                 | लागु औषध ब्राउन सुगर | नेपाल सरकार वि. गणेश जि.सी.समेत  | ७३             |
| ७५.                 | कर्तव्य ज्यान        | नेपाल सरकार वि. सविन्द्रसेन ठकुरीसमेत                                      | ७४             |
| <b>एकल इजलास</b>    |                      |  | <b>७५ – ७६</b> |
| ७६.                 | परमादेश              | सर्वदेवप्रसाद ओझा वि. सम्माननीय अध्यक्ष न्याय परिषद् सचिवालय, रामशाहपथसमेत | ७५             |



संवैधानिक इजलास

स.प्र.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा., मा.न्या. श्री दीपककुमार कार्की, मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे, मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की, ०७४-WC-००४६, उत्प्रेषण, अमिट के.सी. भन्ने चित्रबहादुर खत्री वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत

शारीरिक रूपमा अत्यन्त सबल देखिने सबै व्यक्ति पर्वतारोहणका लागि योग्य हुन्छन् र कुनै शारीरिक अपाङ्गता भएकै आधारमा त्यस्तो व्यक्ति सदाका लागि पर्वतारोहण गर्ने नसक्ने गरी अयोग्य हुन्छ भनी योग्यता र अयोग्यता निर्धारण गर्ने कुनै वैज्ञानिक आधार नदेखिने।

मूलभूत रूपमा मानिसको इच्छाशक्ति, दृढ अटोट, मानसिक साहस र पदमार्गको पर्याप्त ज्ञान, उचाइमा पुग्ने उपलब्ध हुने पथ प्रदर्शकको सहयोग, उचाइमा पुग्ने आवश्यक भौतिक सामग्रीहरूको उपलब्धता, भौगोलिक उचाइको प्रतिक्रिया सहन गर्ने र प्राण वायुको रूपमा रहने अक्सिजन दोहन गर्न सक्ने क्षमताजस्ता आधारभूत विषयहरूले कुनै व्यक्तिलाई पर्वतारोहणका लागि योग्य बनाउन सक्ने।

पर्वतारोहणको लागि केवल सग्लो हात खुट्टा र दृष्टि क्षमताको प्राचुर्यता मात्रै योग्यता मानक हुने र त्यसको अभाव भएको प्रत्येक व्यक्ति सोको लागि अयोग्य हुने भन्ने बुझाई आफैँमा पूर्ण, सर्वोपरी र शाश्वत नदेखिने।

संविधानले विशेष संरक्षण र विशेष अवसरको प्रत्याभूति गर्नुपर्ने वर्गका व्यक्तिलाई राज्यको कुनै सेवा, रोजगारी वा अवसरहरूमा भाग लिन दिँदा उनीहरूको शारीरिक वा मानसिक अवस्थाको कारणले कुनै जोखिम हुने देखिएमा त्यस्तो जोखिम न्यूनीकरणका लागि संरक्षणात्मक उपायहरू अपनाउने वा थप सुरक्षाको

प्रत्याभूति गर्नुपर्नेमा त्यस्तो सेवा वा अवसरमा सहभागी हुन नै प्रतिबन्ध लगाएर संरक्षण गरेको भन्ने तर्क गर्नु प्रकारान्तरले राज्य आफ्नो दायित्वबाट पन्छिएको देखिने।

राज्यले सबै नागरिकलाई भेदभावरहित समान व्यवहार गर्नुपर्छ। अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरू क्षमताविहीन व्यक्ति नभई फरक क्षमता भएका व्यक्तिहरू हुँदा त्यस्ता व्यक्तिहरूको क्षमता, दक्षता र तत्परतासमेतमा प्रश्न उठाई त्यस्ता व्यक्तिहरूप्रति पूर्वाग्रही बनी राज्यबाट त्यस्ता व्यक्तिहरूको क्षमताको अवमूल्याङ्कन गर्नु संविधान तथा अन्तर्राष्ट्रिय मानव अधिकारको मान्यताविपरीत हुने। अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूलाई स्वनिर्भर भई जिउन तथा जीवनका हरेक पक्षमा पूर्णरूपमा सहभागी हुन सक्षम तुल्याउन त्यस्ता व्यक्तिहरूलाई सबै प्रकारका सार्वजनिक सुविधा र सेवामा पहुँच सुनिश्चित गर्न उपयुक्त उपाय अवलम्बन गर्ने राज्यको दायित्व हो। त्यस्ता व्यक्तिहरूलाई सार्वजनिक जीवनको हरेक क्षेत्रमा सक्रिय सहभागिताको सुनिश्चितता कायम गर्ने दायित्व निर्वाह गर्नुपर्ने राज्य आफैँले नागरिकहरूबिच विभेदपूर्ण व्यवहारलाई अनुमति दिने गरी कानून बनाउने कार्यले समानताको सिद्धान्तलाई उपहास गर्छ। संविधान देशको मूल कानून एवम् विधायिकाद्वारा निर्मित कानूनको मातृ कानूनसमेत भएको एवम् संविधानको निर्माण सार्वभौमसत्ता सम्पन्न नागरिकहरूबाट गरिएको हुँदा सार्वभौम निकायबाट निर्माण गरिएको संविधानको भावना र मर्मलाई संकुचन गर्ने वा गलत अर्थ गरी कानून निर्माण गर्नु संविधानविपरीत हुन्छ। अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूले पर्वतारोहण गर्न सक्दैनन् भन्ने पूर्वानुमान गरी त्यस्ता व्यक्तिहरूको क्षमतामाथि प्रश्न उठाई उनीहरूको जीवनको सुरक्षा गर्ने बहानामा पर्वतारोहणको लागि अनुमति नै नदिने गरी कानून बनाउनु अपाङ्गताको आधारमा भेदभाव नगरिने भनी नेपालको संविधानको धारा १८(२) द्वारा प्रदत्त

अधिकारको बर्खिलाफ भएको देखिन्छ । तसर्थ दुवै आँखा देख्न नसक्ने व्यक्तिहरूलाई पर्वतारोहणका लागि अनुमति नदिने भनी पर्वतारोहणसम्बन्धी नियमावली, २०५९ मा पाँचौँ संशोधनद्वारा थप गरिएको नियम ३ को उपनियम (२क) को खण्ड (ग) को व्यवस्था नेपालको संविधानको धारा १८(२) तथा ४२(३) समेतको प्रतिकूल देखियो । साथै यसै प्रकृतिको यसै संवैधानिक इजलासबाट माधवप्रसाद चौलागाईंले दर्ता गरेको ०७४-WC-००३९ को रिट निवेदनमा मिति २०७५।३।१३ मा पर्वतारोहणसम्बन्धी नियमावली, २०५९ मा पाँचौँ संशोधनद्वारा थप गरिएको नियम ३ को उपनियम (२क) को खण्ड (ग) मा भएको “दुवै हात खुट्टा नभएको” व्यक्तिलाई पर्वतारोहण गर्न रोक लगाउने गरी व्यवस्था गरेको प्रावधान नै खारेज गर्ने आदेश भएको देखिने ।

अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूलाई पर्वतारोहणका लागि अनुमति नै नदिने गरी भएको कानूनी व्यवस्था समानताको सिद्धान्तविपरीत भई विभेदपूर्ण रहेको र सो व्यवस्थाले अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको आत्मसम्मानपूर्वक तथा मर्यादित जीवनयापन गर्न पाउने तथा सार्वजनिक सेवा तथा सुविधामा समान पहुँच कायम हुने अवस्थालाई निरुत्साहित गर्ने, त्यस्ता व्यक्तिहरूको मानवीय संवेदनशीलतामा आघात पार्ने, आत्मसम्मानपूर्वक जीवनयापन गर्न पाउने र सार्वजनिक सेवा तथा सुविधामा समान पहुँच कायम हुने अवसरबाट वञ्चित गर्ने गरी तर्जुमा गरिएको देखिएको हुँदा पर्वतारोहणसम्बन्धी नियमावली, २०५९ को को नियम ३ को उपनियम (२क) को खण्ड (ग) को व्यवस्था कायम रहन सक्ने नहुँदा उक्त खण्ड (ग) को कानूनी व्यवस्था आजैका मितिबाट अमान्य र बदर हुने ।

इजलास अधिकृत: पुजा खत्री

कम्प्युटर: विशाल खड्गी

इति संवत् २०७६ साल असार १३ गते रोज ६ शुभम् ।

### संयुक्त इजलास

१

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७१-CR-०५६९, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. देवीराम नेपाली**

प्रतिवादीउपरको किटानी जाहेरी, जाहेरवालाले सो जाहेरीलाई पुष्टि हुने गरी अदालतसमक्ष गरेको बकपत्र, प्रतिवादीले कसुरलाई स्वीकार गरी गरेको बयान, मृतकको मृत्यु टाउकोमा लागेको चोटको कारणबाट भएको भन्ने शव परीक्षण प्रतिवेदन, कसुर गर्दा प्रयोग गरेको ढुंगा बरामद भएको बरामदी मुचुल्कासमेतका मिसिल संलग्न प्रमाण कागजबाट यी प्रतिवादी देवीराम नेपालीको कुटपिटको कारण पत्नी सुनिमाया नेपालीको मृत्यु भएको र सो कसुर अपराधमा निजको संलग्नता रहेको तथ्य स्थापित हुन आउने ।

ज्यानसम्बन्धीको १४ नं. को कानूनी व्यवस्था हेर्दा ज्यान मार्नाको मनसाय रहेनछ, ज्यान लिनुपर्नेसम्मको इवी पनि रहेनछ, लुकिचोरीकन हानेको पनि रहेनछ उसै मौकामा उठेको कुनै कुरामा रिस थाम्न नसकी जोखिमी हतियारले हानेको वा विष खुवाएकोमा बाहेक साधारण लाठी ढुंगा लात मुक्का इत्यादिले हान्दा सोही चोटपिरले ऐनका म्यादभित्र ज्यान मरेमा १० वर्ष कैद गर्नुपर्छ भन्ने रहेको देखिन्छ । उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाबाट मनसायपूर्वक भएको हत्यामा ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. तथा उसै मौकामा उठेको कुनै कुरामा रिस थाम्न नसकी भएको आवेशप्रेरित हत्यामा ऐ.को १४ नं. आकर्षित हुने ।

प्रतिवादी तथा मृतकको बिचमा ज्यानै मार्नुपर्नेसम्मको रिसइवी रहे भएको भन्ने मिसिल प्रमाणबाट पुष्टि भएको देखिएन । साथै पूर्वयोजना बनाई नियोजित रूपले हतियार प्रयोग भएको अवस्थासमेत छैन । मोबाइल चार्ज गर्ने विषयमा भएको सामान्य

विवादको कारण वारदातको सिर्जना भएको भन्ने देखिन्छ। मोबाइल चार्ज गर्न रातिको समयमा अरूको घरमा जानु हुँदैन भनी प्रतिवादीले भन्दा सोही विषयमा मृतक रिसाई प्रतिवादीउपर ढुङ्गा प्रहार गरेकोमा प्रतिवादी उत्तेजित भई सोही ढुङ्गाले मृतकलाई प्रहार गर्दा सोही स्थानमै पत्नीको मृत्यु भएको भन्ने देखिन्छ। मार्ने मनसायलाई पत्नीलाई प्रहार गरेको भन्ने पनि मिसिल प्रमाणबाट देखिँदैन। पत्नीले ढुङ्गाले आफूउपर प्रहार गरेको अवस्थामा तत्काल आवेशमा आई सोही ढुङ्गा पत्नीउपर प्रहार गर्दा टाउकोमा लाग्न गई पत्नीको ज्यान मरेको स्थितिमा प्रस्तुत वारदात ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिमको कसुर अपराधअन्तर्गत पर्ने भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने।

अतः प्रतिवादी देवीराम नेपालीलाई मु.ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय ठहर गरेको सुरु बागलुङ जिल्ला अदालतको मिति २०७०।१०।८ को फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत बागलुङबाट मिति २०७१।३।३१ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दिलीपराज पन्त

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७४ साल असार २६ गते रोज ६ शुभम्।

२

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७१-CR-११७२, १४७८, १५००, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, हुकुम सिंह डाँगी वि. नेपाल सरकार, विनोद ढकाल भन्ने अमरबहादुर राय वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. विनोद ढकाल भन्ने अमरबहादुर राय**

प्रतिवादीहरूले परिवर्तित नाम B थापालाई विवाहको परिपञ्च रची आफ्नो नामथर, वतन ढाँटी बेहुलीलाई आफ्नो घर लान्छु भनी मादी होटलमा बस्नुजस्ता व्यवहार मानव बेचबिखन गर्ने कार्य भएको

विश्वास लाग्छ भनी वस्तुस्थिति मुचुल्कामा बस्ने पवित्रराज सुवेदीले विश्वास लागेको कुरासम्म व्यक्त गरी बकपत्र गरेबाट बेचबिखन गर्ने उद्देश्य नै रहेको भनी अनुमान गर्न मनासिब नदेखिने।

विवाह गरी भारतको बेङ्गलोर तिर लाने भन्ने तथ्य शङ्कारहित तवरबाट पुष्टि हुने अवस्था नदेखिएको स्थितिमा केवल जाहेरवालीको शङ्कास्पद भनाइलाई प्रमाणमा लिई मानव बेचबिखनजस्तो अपराध कायम गर्न मिल्ने देखिएन। भारतको बेङ्गलोरतिर लगी बेचबिखन गर्ने उद्देश्यले विवाह गरेको भनी जाहेरी दिई सोहीअनुरूप बयान प्रमाणित भएको भन्ने आधारमा मात्र निजको सो कथनलाई समर्थन गर्ने अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबिना सो भनाइलाई नै अकाट्य प्रमाणको रूपमा ग्रहण गरी प्रतिवादीलाई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण ऐनको दफा ४(२)(क) बमोजिमको सजाय गर्न न्यायसङ्गत नहुने।

पुनरावेदक प्रतिवादी अमरबहादुरले शोषण गर्ने उद्देश्यले आफ्नो नाम वतन र घरमा जेठी श्रीमती भएको कुरा ढाँटी जाहेरवालीसँग विवाह गरेको र अन्य प्रतिवादीहरू जन्तीसम्म गएको अवस्था देखिँदा प्रतिवादी अमरबहादुरको उक्त कार्य ऐनको दफा ४ को उपदफा २(ख) अन्तर्गतको निषेधित कार्यभित्र पर्न जाने देखियो। यस अवस्थामा प्रतिवादी विनोद ढकाल भन्ने अमरबहादुर राय र प्रतिवादी हुकुम सिंह डाँगीलाई अभियोग दाबीअनुसार मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२) (ख) को कसुरमा दफा १५(१)(छ) बमोजिम ७ वर्ष कैद र प्रतिवादी अर्जुन भन्ने मनबहादुर घिमिरेलाई ऐ. को १५(१)(ज) को कसुरमा ऐ. दफाअनुसार ३ वर्ष ६ महिना कैद हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत धनकुटाबाट मिति २०७१।९।१४ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी हुने। पुनरावेदक प्रतिवादी अमरबहादुर रायलाई मानव बेचबिखन तथा

ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२) (ख) को कसुरमा ऐ.ऐनको दफा १५(१)(च) बमोजिम २ वर्ष कैद हुने र पुनरावेदक प्रतिवादी हुकुम सिंह डाँगी र पुनरावेदन नगर्ने प्रतिवादी मनबहादुर घिमिरेले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने।

इजलास अधिकृत: दिलीपराज पन्त

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७४ साल असार २३ गते रोज ५ शुभम्।

३

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७३-WO-०२८४, उत्प्रेषण / परमादेश, मिलन कुर्मीसमेत वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालयसमेत**

निवेदन परेको लामो समयसम्म जग्गा जस्तो आधारभूत विषयमा उचित निकास नदिई अनिर्णित अवस्थामा रहन दिनु न्यायको रोहमा मिल्ने हुँदैन। निवेदकहरूले निवेदनसाथ पेस गरेका निस्सा प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी विवादित जग्गा निवेदकहरूको नाउँमा दर्ता हुने नहुने भन्ने सम्बन्धमा यथासमयमा आवश्यक निर्णय नहुँदा निवेदकहरूको साम्पत्तिक अधिकारमा असर पर्न जाने।

जग्गा नापजाँच एवम् छुट जग्गा दर्ता गर्ने र त्यस्तो जग्गा सम्बन्धमा आवश्यक निर्णय गर्नेसमेतका कार्य मालपोत कार्यालय र नापी कार्यालयको क्षेत्राधिकारभित्र पर्ने र सो सम्बन्धमा ऐनले निर्धारण गरेको प्रक्रिया र समयभित्र निर्णय गर्नुपर्ने कर्तव्य तत् निकायको रहेको देखिन्छ। निवेदकहरूले साबिकदेखि भोगचलन गर्दै आएको भनिएका छुट जग्गा दर्ता गरिपाउँ भनी दिएको निवेदनउपर आवश्यक कारबाही गर्ने दायित्व भएका कार्यालयले यथासमयमा आवश्यक कारबाही गर्नु नै पर्ने जग्गा नापजाँच ऐनको मनसाय रहेको देखिने।

साधिकार निकायले सार्वजनिक जिम्मेवारी रहेको आफ्नो कर्तव्य निर्वाह गर्दा विधि र प्रक्रियालाई

महत्त्वसाथ हेर्नुपर्छ। जग्गा जमिन जस्तो आधारभूत एवम् प्राथमिक आवश्यकतासँग सम्बन्धित विषयमा आफूसमक्ष प्रस्तुत भएका विवादलाई यथोचित समयमा किनारा लगाउनेतर्फ बढी संवेदनशील हुनुपर्ने हुन्छ। निवेदकहरूले छुट जग्गा दर्ता गरिपाउँ भनी समयसमयमा दर्ता गरेको निवेदनमा लामो समयसम्म निर्णय नगरी सो सम्बन्धमा दर्ता खुलेका बखत कारबाही गर्ने गरी निवेदन फाइल सामेल गर्नु भनी मिति २०७३।५।३१ मा मालपोत कार्यालय, कपिलवस्तुबाट भएको तोक आदेश उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने।

साथै निवेदकले पेस गरेको निवेदनसाथ संलग्न विवादित जग्गा सम्बन्धमा भएका निस्सा प्रमाणहरूको मूल्याङ्कन गरी विवादित जग्गा रिट निवेदकहरूको हकभोग तिरोको हो होइन, उक्त जग्गा निवेदकहरूका नाममा दर्ता हुने प्रकृतिको हो होइन, दर्ता गर्नुपर्ने आधार र कारण देखिएमा दर्ता गर्नु र दर्ता हुने प्रकृतिको नदेखिएमा सोहीबमोजिमको निर्णय गर्नु भनी विपक्षी मालपोत कार्यालय, कपिलवस्तुका नाउँमा मागबमोजिमको परमादेशको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत: दिलीपराज पन्त

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७४ साल असार २१ गते रोज ४ शुभम्।

४

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७३-WO-०२८४, उत्प्रेषण / परमादेश, अधिवक्ता गणेशप्रसाद दुलाल वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत**

नेपाल सरकारले आवश्यक प्रक्रिया पूरा गरी मन्त्रिपरिषद्को निर्णयअनुसार कार्यकारी निर्देशकको पदमा नियुक्ति गरिसकेको विषयमा सो विषयसँग सार्थक सम्बन्ध र सरोकार रहेको व्यक्ति वा वर्गलाई असर परेको भएमा उपचार माग गर्न सक्ने अवस्थाको विद्यमानतालाई ध्यान नदिई सबै किसिमका विवादहरूलाई सार्वजनिक सरोकारको विषय ठानी

रिट क्षेत्राधिकारको अवलम्बन गर्न मिल्ने हुँदैन। रेडियो प्रसार सेवा समितिको कार्यकारी निर्देशकको नियुक्तिको विवादमा सबै सम्बद्ध वा सर्वसाधारणको हित रहेको र निजहरूको प्रतिनिधित्व रिट निवेदकले गरेको भन्ने संज्ञा दिन मिल्ने पनि होइन। सार्वजनिक सरोकारको विवादमा निवेदन दिन कुनै समुदायको व्यक्ति स्वयम् आउन नसक्ने, निवेदकसमेत त्यस्तो समुदाय वा वर्गको व्यक्ति भई निवेदन दिनु परेको आधार र कारण निवेदनमा खुलाएको पाइएन। प्रस्तुत विवादमा निवेदकको सार्थक सम्बन्ध र सरोकार रहेको भन्ने पनि रिट निवेदनबाट नदेखिएकोले मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न मिलेन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।  
इजलास अधिकृत: दिलीपराज पन्त  
कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन  
इति संवत् २०७४ साल असार २१ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. १

१

मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे, ०६८-CI-१२३४, अंश, जनार्दन विश्वकर्मा बढैसमेत वि. डिराम बढै

सर्वप्रथम त वादी प्रतिवादीहरूबिच नाता सम्बन्धमा, फिराद परेको अधिल्लो मितिसम्ममा विधिवत् अंशबन्डा नभएको तथ्यमा र निजहरूको परिवारमा बन्डा गर्नुपर्ने सम्पत्ति रहेको कुरामा मुख मिलेकै देखिन आयो। यसरी वादी प्रतिवादीबिचको नाता सम्बन्धमा विवाद नरहेको, वादीहरू रामरती बढै, डिराम बढै तथा प्रतिवादी जनार्दन विश्वकर्मा बढै एकासगोलको अंशियार रहेको, निजहरूका बिचमा फिराद परेको अधिल्लो मितिसम्म विधिवत् अंशबन्डा नभएको र वादीहरूले आआफ्नो भाग अंशबन्डा गरी प्रतिवादीहरूको सँगसाथबाट छुट्टिन चाहिँ फिराद गरेको अवस्थामा वादी तथा प्रतिवादीबिच जम्मा ३ अंश भाग

लगाई ३ भागको २ भाग अंश वादीहरूले प्रतिवादीबाट छुट्ट्याई लिन पाउने नै देखिँदा वादी प्रतिवादीबाट पेस भएको तायदाती फाँटवारीमा उल्लिखित सम्पत्तिलाई ३ भाग लगाई वादीहरूको १-१ भाग गरी जम्मा २ भाग अंश वादीहरूले प्रतिवादीबाट छुट्ट्याई लिन पाउने गरी भएको सुरु कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको मिति २०६६।४।३२ को फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६७।३।१६ को फैसलालाई पुनरावेदक (निवेदक) हरूले अन्यथा नभनी सो हदसम्म उक्त फैसला स्वीकार नै गरी बसेबाट त्यसतर्फ यस अदालतबाट विचार गरिरहन नपर्ने।

वादीहरू र आफूहरूबिच मिति २०६१।१०।१ मा नै चुलो मानो छुट्टिएको भन्ने प्रतिवादीहरूको जिकिर वादीको दाबीसँग मेल नखाएको देखिनुका साथै उक्त मितिमा वादीहरू र प्रतिवादीहरूबिच मानो छुट्टिएको तथ्य प्रमाणित गर्ने कुनै लिखत प्रमाण प्रतिवादीहरूले पेस गर्न सकेको देखिएन। मुलुकी ऐन, रजिस्ट्रेशनको महलको १ नं. मा अचल सम्पत्ति भएकाको मानो छुट्टिएको वा मानो जोडिएको लिखत गर्दा गराउँदा रजिस्ट्रेशन गराउनुपर्छ भन्ने कानूनी व्यवस्था उल्लेख रहेको छ। उक्त व्यवस्थाअनुसार वादी प्रतिवादीहरूबिच मिति २०६१।१०।१ मा मानो छुट्टिएको बेहोराको लिखत भएको र उक्त लिखत मुलुकी ऐन, रजिस्ट्रेशनको महलको १ नं. अनुसार रजिस्ट्रेशन भएको भन्ने तथ्य प्रतिवादीहरूले उक्त बेहोराको लिखत पेस गरी प्रमाणित गर्न नसकेबाट प्रतिवादीहरूको उक्त जिकिर स्वीकारयोग्य देखिएन। तसर्थ; पारित लिखतको अभावमा मिति २०६१।१०।१ मा वादी प्रतिवादीहरूबिच मानो छुट्टिएको भन्ने प्रतिवादीहरूको जिकिर मान्न नसकिएपछि वादी दाबीबमोजिम प्रस्तुत मुद्दाको फिराद परेको अधिल्लो दिनलाई नै मानो छुट्टिएको मिति कायम गरी उक्त मितिसम्म वादी प्रतिवादीहरू एकासगोलमा रहेको मानी एकासगोलमा रहेको अवधिमा सगोलको परिवारका सदस्यको नाममा

रहेको सम्पत्तिबाट नै वादी प्रतिवादीहरूबिच अंशबन्डा गर्नुपर्ने भन्ने मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको महलको कानूनी व्यवस्थाबमोजिम वादी रामरती बढै र डिराम बढै तथा प्रतिवादीहरूमध्ये जनार्दन विश्वकर्मा बढै गरी जम्मा ३ जना मूल अंशियार कायम गरी ती ३ जनाबिच १-१ भाग अंशबन्डा गर्नुपर्ने नै हुन आउने ।

सगोलमा रहेको अवधिमा सगोलको आर्जनस्वरूप खरिद गरेको वा बढेबढाएको सम्पत्तिको सगोलका कुनै अंशियारको नाममा दर्ता कायम रहेको भए पनि उक्त सम्पत्ति अन्य अंशियारहरूको सहमतिबेगर बिक्री गर्न नपाइने, उक्त सम्पत्तिको बिक्री वा हक हस्तान्तरण गर्दा सबै अंशियारहरूको अनिवार्यरूपमा विधिवत् मन्जुरी वा सहमति लिनुपर्ने, अन्यथा अन्य अंशियारहरूले मन्जुर नगरी निजहरूको उजुर परे निजहरूको हकजति सो लिखत बदर हुनसक्ने भन्ने मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको महलको १८ नं. र लेनदेन व्यवहारको महलको १० नं. को कानूनी व्यवस्थाबमोजिम वादी प्रतिवादीहरू सगोलमा बस्दाकै अवस्थामा प्रतिवादी किसलावतीको नाममा खरिद गरिएको जग्गा निजले वादीहरूको मन्जुरीबेगर तथा निजहरूलाई थाहा जानकारी नै नदिई नैनमतीलाई बिक्री गरी मिति २०६५।२।२ को पारित राजीनामाको लिखतबाट हक हस्तान्तरण गरेको लिखतमा उल्लिखित जग्गाहरूलाई समेत वादीहरूको अंशहक लाग्ने जग्गा हो भन्ने मानी सोबाट समेत वादीहरूको अंशहक कायम गरेको सुरु. फैसला र सोलाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसलालाई कानूनप्रतिकूल वा अन्यायपूर्ण मान्न सकिएन । सो सम्बन्धमा भएको उक्त फैसला प्रचलित कानून र न्यायसम्मत नै मान्नुपर्ने देखिन आउने ।

एकातिर एकासगोलमा बस्दाको अवस्थामा सबै अंशियारले आआफ्नो क्षमता र सिप प्रयोग गरी सगोलको आर्जन वृद्धिमा यथाशक्य सहयोग गरेको

देखिन्छ भने अर्कोतिर वादीहरूसँग सगोलमा बस्दाको अवस्थामा प्रतिवादी किसलावतीको नाममा खरिद गरिएको उक्त जग्गा प्रतिवादी जनार्दन विश्वकर्मा बढईको शुद्ध निजी कमाईबाट खरिद गरिएको निजी आर्जनको जग्गा हो भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाणद्वारा प्रतिवादीहरूले प्रमाणित गर्न सकेको देखिँदैन । तसर्थ; उक्त जग्गाहरू प्रतिवादीहरूको निजी आर्जनको रहेको भन्ने कुरा कि त वादीहरूले स्वीकार्नु पर्‍यो कि त प्रतिवादीहरूले अकाट्य प्रमाणद्वारा प्रमाणित नै गर्नुपर्‍यो । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६(क) अनुसार अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म एकाघरसँगका अंशियारहरूमध्ये जुनसुकै अंशियारका नाममा रहेको सम्पत्ति सगोलको सम्पत्ति हो भनी अदालतले अनुमान गर्नेछ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ भने उक्त ऐनको दफा २९ मा अदालतले यस ऐनबमोजिम अनुमान गरेको कुनै कुरा कुनै पक्षले खण्डन गर्न चाहेमा त्यसको प्रमाण पुऱ्याउने भार सोही पक्षको हुनेछ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ । उपर्युक्त कानूनी व्यवस्थाको परिप्रेक्ष्यमा हेर्दा पनि प्रतिवादी किसलावतीको नाममा तत्काल खरिद गरिएको उक्त जग्गाहरू प्रतिवादीहरूको निजी आर्जनको सम्पत्ति हो भनी वस्तुनिष्ठ तवरले प्रमाणित गर्ने भार पुनरावेदक प्रतिवादीहरूउपर नै रहन्छ; जुन निजहरूले प्रमाणित गर्न सकेको देखिँदैन । त्यसकारण पुनरावेदक प्रतिवादी किसलावती बढईको नाममा तत्काल खरिद गरिएको उक्त सम्पत्ति वादी प्रतिवादीहरूको सगोलको आर्जनको सम्पत्ति हो भनी अदालतले अनुमान गर्नुपर्ने नै देखिने । तसर्थ; प्रतिवादी किसलावतीको नाममा तत्काल खरिद गरिएको उक्त जग्गाहरू वादी प्रतिवादीहरू एकासगोलमा रहँदाका बखत सगोलको कमाईबाट खरिद गरिएको सामूहिक आर्जनको जग्गा हो र उक्त जग्गामा वादीहरूसमेतको अंशहक लाग्छ भन्ने आधारमा उक्त जग्गाबाट समेत ३ भागको २ भाग वादीहरूले बन्डा गरी लिन पाउने

तहच्याएको सुरु फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको फैसलालाई कानूनसम्मत नै मान्नुपर्ने देखिन आउने।

अतः उपर्युक्त आधार प्रमाणहरूबाट प्रस्तुत मुद्दामा वादी प्रतिवादीहरूले पेस गरेको तायदाती फाँटवारीमा उल्लिखित सम्पत्तिलाई नरम करम मिलाई ३ भाग लगाई ३ भागको १-१ भाग अंश वादीहरूले प्रतिवादीबाट छुट्ट्याई बन्डा पाउने तहच्याई भएको कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको मिति २०६६।४।३२ को फैसलालाई सदर गर्ने तहच्याएको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६७।३।१६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : प्रदीपकुमार उपाध्याय

कम्प्युटर: रमला पराजुली

इति संवत् २०७५ साल कात्तिक १९ गते रोज २ शुभम्। यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ :

- ०६८-CI-१२३५, राजीनामा दर्ता बदर, अंश हक कायम, जनार्दन विश्वकर्मा बढई वि. डिराम बढैसमेत
- ०६८-CI-१२३६, हक कायम, राजीनामा दर्ता बदर, नैनमती बढईनसमेत वि. डिराम बढै

२

**मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा**, ०६७-CI-१२११, शेषपछिको बकसपत्र लिखत बदर, *विजयहरि शर्मा वि. अजयहरि ढुंगाना*

फिरादपत्रमा उल्लेख भएबमोजिम विभिन्न प्रकृतिको ६ वटा रोगहरूले पीडित भइरहेको अवस्थाको ७६ वर्षीय वृद्ध आमाको मिति २०५९।४।३ मा खुट्टासमेत भाँच्चिएको कारणले मिति २०५९।४।८ मा सुनसरी जिल्लाको धरानस्थित वि.पी. कोइराला स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठान नामको

अस्पतालमा उपचारार्थ भर्ना भइरहेको अवस्थाकी अशक्त बिरामीको उक्त विभिन्न प्रकृतिको बिरामीको कारणले पूर्ण होस हवास ठेगानमा रहेकै थियो भन्न सकिँदैन। निज वृद्ध आमा सुशीलादेवी शर्माको मिति २०५८।५।१४ मा देहावसान भएको पनि देखियो। त्यस्तो वृद्ध, अशक्त र मृत्युनजिक पुगेको अवस्थाकी व्यक्तिको हकको निज बस्ने घरमा डोर नबोलाई उनाउ स्थानमा डोर ल्याई शेषपछिको बकसपत्र लिखतमा सहिछाप गराइएको छ भने अर्कोतर्फ सम्पत्ति लिने छोराबाहेक निजको शेषपछिको अपुताली खाने वादी वा अन्य हकदार छोराको रोहबरमा उक्त लिखत तयार भएको छैन। आफूले सम्पत्ति लिने गरी भएको लिखतमा वादी वा अर्का हकदार छोरालाई साक्षीको रूपमा राखिएको नदेखिएबाट उक्त लिखत मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महलको २४ नं. को कानूनी प्रावधानको मनसायअनुरूप दाताको हकवाला वा संरक्षकको रोहबरमा भएको मान्न सकिँदैन। यसरी वादीले फिरादपत्रमा दाबी लिएझैं मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महलको २४ नं., कागज जाँचको महलको ५ नं. र रजिस्ट्रेसनको महलको ११ नं. विपरीत तथा मिति २०३०।३।३१ मा पारित अंशबन्डापत्रको मर्म र भावनाविपरीत दाबीको लिखत तयार गरी पारित गरे गराएको देखिएबाट दाबीको शेषपछिको बकसपत्रको लिखत वादीले प्राप्त गर्ने अपुताली हक हरण गर्ने उद्देश्यले समेत गरे गराएको होइन भन्न सकिने नदेखिने।

प्रतिवादीले वादीको दाबी मुलुकी ऐन, अ.बं. ८२ नं. बमोजिमको हकदैयाविहीन रहेको तथा पुनरावेदन अदालत विराटनगरसमेतबाट भएको फैसला मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको महलको १० नं. दान बकसको महलको १ नं., स्त्री अंशधनको महलको १ र २ नं. विपरीतसमेत रहेकोले वादीको फिराद दाबीबमोजिम शेषपछिको बकसपत्रको पारित लिखत बदर हुने होइन भन्नेसमेत बेहोराको पुनरावेदक

प्रतिवादीको प्रतिवाद तथा पुनरावेदन जिकिर रहेको छ । पुनरावेदक प्रतिवादीले जिकिर लिएको उपर्युक्त कानूनी व्यवस्थाहरूको मनसायतर्फ हेर्दा, सुशिलादेवी शर्माको शेषपछि दाबीको लिखतमा उल्लिखित घरजग्गासहितको सुशिलादेवी शर्माको हकको सम्पत्ति निज सुशिलादेवीका तीनै भाइ छोराहरूले बराबरीको दरले बाँडी खान पाउने भन्ने मिति २०३०।३।३१ को पारित अंशबन्डापत्रमा उल्लिखित बेहोराको उद्देश्य, मनसाय, मर्म र भावनाअनुसार सुशिलादेवी शर्माको अपुताली खान पाउने हकदार यी वादीसमेत भएकाले सुशिलादेवी शर्माको अपुतालीको विषयमा यी वादीको फिराद गर्ने हकद्वैया छैन भन्न मिल्दैन । सगोलको सम्पत्ति बिक्री गर्दा वा कुनै किसिमले हक हस्तान्तरण गर्दा सगोलको अंशियारको मन्जुरी भए मात्र उक्त लिखत सदर ठहर्ने नत्र बदर हुन सक्ने भन्ने मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको महलको १० नं. को कानूनी व्यवस्थाको मनसाय एकासगोलमा बस्ने एकभन्दा बढी अंशियार रहेको अवस्थामा सगोलको सम्पत्तिको हक हस्तान्तरण गर्दा अन्य अंशियारसमेतको मन्जुरी अनिवार्यरूपले लिनुपर्ने भन्ने रहेको देखिने । प्रस्तुत मुद्दामा शेषपछिको बकसपत्र गरिदिने दाता सुशिलादेवी शर्मा वादी प्रतिवादीसमेतका छोराहरूबाट मिति २०३०।३।३१ देखि नै छुट्टिई भिन्न बसेको देखिएबाट लेनदेन व्यवहारको उक्त १० नं. बमोजिम निजले एकासगोलमा हुँदै नभएका छोराहरूको मन्जुरी लिनुपर्ने भन्ने अवस्था नभए पनि प्रस्तुत मुद्दामा विवादको मुख्य विषयवस्तुको रूपमा रहेको देखिएको विभिन्न प्रकृतिको बिरामीको कारणले अशक्त र अचेत अवस्थामा भई होस हवाससमेत ठेगानमा नरहेकी ७६ वर्षीय वृद्धाबाट अस्पतालमा उपचार हुन नसकी घर फिर्ता ल्याउँदाको अवस्थामा अन्य हकवाला छोराहरूको अनुपस्थितिमा निजहरूलाई थाहै नदिई तथा निजहरूको मन्जुरी नलिई बेइलाका र घरबार नरहेको स्थानमा शेषपछिको बकसपत्रको लिखत

तयार गराई सोमा ऐनबमोजिमको सहिछापसमेत पूरा नगराई लिखतमा उल्लेख भएविपरीत बेजिल्लाको मालपोत कार्यालयबाट घरदेखि टाढा बाटोमा डोर झिकाई लिखत पारित गराएको, उक्त लिखत मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महलको २४ नं., कागज जाँचको महलको ५ नं., रजिस्ट्रेशनको महलको ११ नं. र मिति २०३०।३।३१ मा पारित अंशबन्डापत्रमा उल्लिखित बेहोराको विपरीत रही दाताको शेषपछि अपुताली पाउने अन्य हकदारको हक हरण गर्ने उद्देश्यले गरे गराएको भन्ने रहेको अवस्थामा वादीको मुख्य दाबीलाई प्रतिवादीले कानूनी एवम् तथ्ययुक्त प्रकृतिबाट खण्डन गर्न सकेको नपाइने ।

प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीले मिति २०५९।४।१७ मा पारित गराई लिएको शेषपछिको बकसपत्र लिखत बदर गरिपाउँ भन्ने वादीको दाबी वस्तुगत आधारसम्मत, औचित्यपूर्ण, कानूनसम्मत र न्यायपूर्ण देखिन आयो भने प्रतिवादीको प्रतिउत्तर जिकिर र पुनरावेदन जिकिर मिति २०३०।३।३१ को बन्डापत्रको आधारमा तथा रजिस्ट्रेशन पारित गर्न अपनाइएका तौरतरिकाबाट कानूनसम्मत, औचित्यपूर्ण र न्यायसम्मत देखिएन । साथै, यस अदालतबाट मिति २०६८।१।२ मा निस्सा प्रदान हुँदा आधार लिएका कानूनी व्यवस्थाहरू प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा सान्दर्भिक नदेखिएको भन्ने कुरा यसअघि विभिन्न प्रकरणहरूमा विश्लेषण भइसकेको, उक्त आदेशमा उल्लिखित नजिरहरू पनि प्रस्तुत मुद्दामा सान्दर्भिक नदेखिएको र बहसको क्रममा पुनरावेदक प्रतिवादी पक्षका विद्वान् वरिष्ठ अधिवक्ता र अधिवक्ताबाट पेस भएका नजिरहरूसमेत प्रस्तुत मुद्दामा अवलम्बन गर्न सकिने अवस्था र प्रकृतिको नरहेकोले यस अदालतको मिति २०६८।१।२ को आदेश र पुनरावेदक प्रतिवादी पक्षबाट प्रस्तुत भएका बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः विभिन्न प्रकरणहरूमा भएको



विश्लेषणको आधारमा प्रस्तुत मुद्दामा हाल प्रमाणमा आएको यिनै वादी प्रतिवादीसमेत बिच चलेको मिलापत्र बदर मुद्दामा मिति २०३०।३।३१ मा पारित बन्डापत्रको मर्म र भावनाअनुरूप मिलापत्र बदर भएको देखिएको, मिति २०३०।३।३१ को पारित बन्डापत्रमा शिवहरि शर्मा र सुशिलादेवी शर्माले आफ्नो अंशहकको सम्पत्तिबाट आफ्नो जीवनकालमा दान पुण्य गरी बाँकी रहेको सम्पत्ति निजहरूको शेषपछि निजहरूका तीनैजना छोराहरूले बराबरीका दरले पाउने भन्ने बेहोरा उल्लेख भएबाट यी प्रतिवादीको मात्र हक सिर्जना हुने अवस्था नदेखिएको, प्रस्तुत मुद्दाको फिराद र प्रतिउत्तर बेहोराबाट सुशिलादेवी शर्मा बिरामी परेपछि निजलाई वादी प्रतिवादीसमेतका छोराहरूले उपचार गराउन भनी अस्पतालमा लगेको भनेको, ७६ वर्षीय वृद्ध आमा बिरामी परी उपचारार्थ अस्पतालमा भर्ना भएको अशक्त अवस्थामा अस्पतालमा लिखत तयार गरी बाटोमा पर्ने दुहवी-७ मा लगी अशक्त व्यक्तिबाट सनाखत गराई वादीसमेतका अन्य दाजुभाइलाई थाहै नदिई लिखत पारित गराएको देखिएबाट दाता र वादी प्रतिवादीसमेतका बिच मिति २०३०।३।३१ मा पारित उक्त अंशबन्डापत्रको लिखतको मनसाय, मर्म र भावनाविपरीत लिखत तयार तथा पारित भएको देखिएको र न्यायको रोहमा हेर्दासमेत मिति २०३०।३।३१ मा पारित अंशबन्डाको लिखतअनुसार वादी प्रतिवादीसहितका सबै दाजुभाइले पाउने सम्पत्ति कुनै एकजनाले मात्र पाउने भन्नु उचित नदेखिएको हुँदा प्रस्तुत मुद्दामा वादीले बदर गरिपाउँ भनी दाबी लिएको मिति २०५९।४।१७ मा पारित शेषपछिको बकसपत्रको लिखतमा उल्लिखित घरजग्गामध्ये ३ भागको १ भाग घरजग्गाको लिखत बदर गरी सोमा वादीको हक कायम हुने ठहर्‍याएको सुरु मोरङ जिल्ला अदालतको मिति २०६२।२।१ को फैसलालाई सदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको मिति २०६४।१।२२ को फैसला मिलेकै देखिँदा

सदर हुने।

इजलास अधिकृत: प्रदीपकुमार उपाध्याय

कम्प्युटर: कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७५ साल मङ्सिर ६ गते रोज ५ शुभम्।

इजलास नं. २

१

मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या. श्री मीरा खडका, ०७२-CI-१६६१, निषेधाज्ञा, रामलाल बम्जन वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय, बारा कलैयासमेत

विपक्षीहरूको लिखित जवाफहरूबाट निजहरूले कानूनबमोजिम प्राप्त अधिकार प्रयोग गरी राष्ट्रिय वनको संरक्षण र सुरक्षाको लागि रिट निवेदकले कानूनविपरीत निर्माण गरेका भौतिक संरचनाहरू भत्काई हटाई सकेको भन्ने देखिएबाट आशङ्काको स्थिति विद्यमान रहेको नदेखिने।

निवेदकको निर्विवादित हकरहेको नदेखिएको, निवेदनमा उल्लिखित संरचनाहरू भत्काई सकेको देखिएबाट आशङ्काको स्थिति विद्यमान रहेकोसमेत देखिएन। अतः रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको मिति ०७२।३।२ को आदेश मिलेकै देखिँदा प्रत्यर्थी झिकाउनु पर्ने देखिएन। निषेधाज्ञाको निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको मिति २०७२।३।२ को आदेश सदर हुने।

इजलास अधिकृत: मुकुन्द आचार्य

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा

इति संवत् २०७३ साल फागुन २४ गते रोज ३ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०६७-CI-०६५५, नापी दर्ता बदर गरी दर्ता गरिपाउँ, माकुरजङ्ग पालुडबा वि.

दिपेस बरालसमेत

४

पुनरावेदन अदालत इलामले हदम्यादको प्रश्नमा निरूपण गरी फैसला गरेको र सो फैसला यथावत् रहेको अवस्थामा हदम्यादभित्र फिरादपत्र नपरेको भनी निराकरण गरिसकेको विषयको विपरीत हुने गरी मुद्दा खारेज हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत इलामबाट मिति २०६७।३।७ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा बदर हुने।

सबुद प्रमाण बुझी पुनः इन्साफ गर्न पक्ष विपक्षलाई पुनरावेदन अदालत इलाममा हाजिर हुन जाने तारेख तोकी मिसिल पुनरावेदन अदालत इलाममा पठाइदिने।

इजलास अधिकृत: शिवहरि पौड्याल

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल भदौ २५ गते रोज १ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या. श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७४-WH-००२४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, बाबु भण्डारीसमेत वि. महानगरीय अपराध महाशाखा, टेकुसमेत**

निवेदकहरूलाई पक्राउ पुर्जी दिएको भन्ने विपक्षी महानगरीय प्रहरी परिसरको लिखित जवाफबाट खुल्न आएको पाइयो। पक्राउको जानकारी दिएर पक्राउ गरी थुनुवापुर्जीसमेत दिएको भनी परेको लिखित जवाफलाई रिट निवेदकहरूले अदालतमा उपस्थित भई खण्डन गरी रिट निवेदकलाई गरिएको पक्राउ र थुनालाई गैरकानूनी भनी पुष्टि गराउने दायित्व यी रिट निवेदकहरूमा रहेको अवस्थामा सो दायित्व पूरा नगरी तोकिएको तारेख नै गुजारी बसेको भन्ने मिसिलबाट देखिन्छ। यस्तो अवस्थामा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदन दिएको भन्ने मात्र आधारमा रिट जारी हुन सक्ने हुँदैन। रिट खारेज हुने।

उपरजिस्ट्रार: इन्दिरा शर्मा

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ७ गते रोज ५ शुभम्।

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०६७-CR-०९७० र ०६७-CR-१०८८, कर्तव्य ज्यान, बलबहादुर कुँवर वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. बलबहादुर कुँवर**

पुनरावेदक प्रतिवादीले नै कालीबहादुरको हत्या गरेको भन्ने देख्ने चशमदिद गवाह कोही नभएको, पहिलोपट दिएको जाहेरी दरखास्तमा प्रतिवादीउपर शङ्कासम्म गर्न नसकेको, जाहेरवालाले बकपत्र गर्दा प्रतिवादीले नै हत्या गरेकोमा शङ्का लाग्छसम्म भनी खुलाएकोसमेतका परिस्थितिजन्य प्रमाणबाट पुनरावेदक प्रतिवादीले कालीबहादुरको हत्या गरेका हुन् भनी अनुमान गर्न सकिने अवस्था नहुँदा पुनरावेदक प्रतिवादी बलबहादुरलाई कसुरदार ठहर गरी भएको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरको फैसला मिलेको देखिएन। उक्त फैसला उल्टी भई पुनरावेदक प्रतिवादीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने।

प्रतिवादीले कालीबहादुरलाई धक्का दिई भीरबाट लडाएको देख्ने चशमदिद गवाहसमेत नरहेको र प्रतिवादीले नै कालीबहादुरको हत्या गरेका हुन् भन्ने पुष्टि हुने ठोस र वस्तुगत प्रमाण अभियोजन पक्षले गुजारी निजको अपराध पुष्टि गर्न सकेकोसमेत देखिएन। जाहेरवालाले शङ्काको आधारमा दिएको जाहेरी दरखास्त, प्रतिवादी बलबहादुरले नै कालीबहादुरको हत्या गरेकोमा शङ्का लाग्छ भनी गरेको बकपत्र, वादीका साक्षी नेपबहादुर बुढाथोकी र रेशमबहादुर बुढाथोकीले प्रतिवादीले मारेकोमा शङ्का लाग्छ भनी बकपत्र गरेको अवस्थामा शङ्काको आधारमा कुनै पनि व्यक्तिलाई कसुरदार कायम गर्न सक्ने नदेखिँदा प्रतिवादी बलबहादुरलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्छ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः उल्लिखित तथ्य एवम् प्रमाणबाट

प्रतिवादी बलबहादुरले कालीबहादुरलाई भीरबाट धकेली हत्या गरेको भन्ने पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा निजलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिनु पर्नेमा निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरेको सल्यान जिल्ला अदालतको मिति २०६६।१०।१९ को फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादी बलबहादुर कुँवरलाई ऐ. महलको ५ नं. को कसुरमा ऐ. ६ नं. को देहाय २ बमोजिम कैद वर्ष २ सजाय हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरबाट मिति २०६७।९।२६ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी हुन्छ र प्रतिवादीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने।

उपरजिस्ट्रार: इन्दिरा शर्मा

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ६ गते रोज ४ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या. श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०६८-CR-०१६९, आ.व. ०६१।६२ मूल्य अभिवृद्धि कर, दीर्घराज मैनाली वि. गौरा दोलखा ज्वाइन्ट भेन्चर, विराटनगर**

Working progress लाई नै आय विवरण मानी रु.१,५२,२३,४२६।३५ को मूल्य अभिवृद्धि कर प्रत्यर्थी प्रतिवादीले नतिरे नबुझाएको भनी उक्त आयको मूल्य अभिवृद्धि कर र जरिवानासमेत गरी जम्मा रु. ३९,५८,०९०।- रकम प्रत्यर्थी प्रतिवादीले तिर्नु बुझाउनु पर्ने गरी मिति २०६६।६।१६ मा प्रारम्भिक कर निर्धारणको निर्णय गरेको र मिति २०६६।६।३१ मा आन्तरिक राजस्व कार्यालय, विराटनगरबाट सो रकम प्रत्यर्थी प्रतिवादीले तिर्नु बुझाउनु पर्ने गरी अन्तिम कर निर्धारण आदेश गरेको पाइयो। आ.व. २०६१।६२ मा सो रकमको बिजक जारी भएको भन्ने मिसिल संलग्न प्रमाणबाट नदेखिएको एवम् सो आ.व. मै प्रत्यर्थी प्रतिवादीले सो रकम प्रतिफलको रूपमा प्राप्त गरिसकेको भन्ने ठोस

प्रमाणसमेत पुनरावेदक वादीले पेस गर्न सकेको नपाइने। बिजक जारी नै नभएको र विवादित आ.व. मै प्रत्यर्थी प्रतिवादीले उक्त रकम प्रतिफलको रूपमा प्राप्त गरेको भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभावमा कर लाग्ने रकम लुकाएको भनी पुनरावेदक वादीबाट कर निर्धारण गरी भएको निर्णयलाई न्यायोचित मान्न नमिल्ने हुँदा पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिँदा राजस्व न्यायाधिकरण विराटनगरबाट भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न नसकिने।

अतः विवेचित तथ्य एवम् प्रमाणबाट करदाताले बिल बिजक जारी नगरेको अवस्थामा भ्याट लिई लुकाएको भन्न सकिने अवस्था नरहँदा पुनरावेदक करदातासँग २०६२ आषाढमा मूल्य अभिवृद्धि कर र जरिवानासमेत रु.३९,५८,०९०।- लगाउने गरी भएको आन्तरिक राजस्व कार्यालय, विराटनगरको मिति २०६६।३।३१ को निर्णय र अन्तिम कर निर्धारण आदेश तथा आन्तरिक राजस्व विभागको मिति २०६६।८।२६ को प्रशासकीय पुनरावलोकनसमेत मिलेको नदेखिँदा उल्टी हुने ठहर गरी राजस्व न्यायाधिकरण विराटनगरबाट मिति २०६७।७।१४ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: इन्दिरा शर्मा

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ६ गते रोज ४ शुभम्।

**इजलास नं. ३**

१

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७२-CI-०६३०, लेनदेन, दीपकरत्न तुलाधर वि. स्याकार कम्पनी लि.**

सर्वप्रथम पुनरावेदक प्रतिवादी दीपकरत्न तुलाधरले आफू एस एन्ड एस इलेक्ट्रोनिक्स तथा सुदी इलेक्ट्रोनिक्स दुवै फर्मका प्रोपाइटर नभएको भए

तापनि प्रोपाइटर भएको भनी जिम्मेवार ठहर्‍याएको भनी लिएको जिकिरतर्फ हेर्दा, पुनरावेदक प्रतिवादी दीपकरत्न तुलाधरले एस एन्ड एस इलेक्ट्रोनिक्स, सुदी इलेक्ट्रोनिक्स र प्रत्यर्थी वादी स्याकार कम्पनी लिमिटेडबिच भएको विभिन्न पत्राचार तथा कागजातहरूमा उक्त एस एण्ड एस इलेक्ट्रोनिक्स र सुदी इलेक्ट्रोनिक्सको तर्फबाट हस्ताक्षर गरेको पाइन्छ। त्यस्तै एस एण्ड एस इलेक्ट्रोनिक्स र सुदी इलेक्ट्रोनिक्सका तर्फबाट आधिकारिक व्यक्ति (Authorized Person) दीपकरत्न तुलाधरलाई तोकी निजले व्यापारिक कारोबारका सिलसिलामा मिति ०६२।०३।०८ मा यिनै पुनरावेदक प्रतिवादी दीपकरत्न तुलाधरले सम्झौतासमेत गरेको देखिन्छ। व्यापारिक कारोबारको सिलसिलामा वादी स्याकार कम्पनीसँग यिनै प्रतिवादीलाई आधिकारिक व्यक्ति भनी पत्र पठाई ०६२ सालमा नै निज प्रतिवादीले वादी कम्पनीसँग व्यापारिक कारोबारको सम्झौता गरेको देखिन्छ। यसरी, उक्त फर्महरूको प्रोपाइटरको हैसियतले के कुन कारणले हस्ताक्षर गरेको र यदि आफू उक्त फर्महरूको प्रोपाइटर नभए के कुन व्यक्ति प्रोपाइटर हुन् भनी स्पष्ट रूपमा कुनै प्रमाण पुनरावेदक प्रतिवादीले पेश गर्न सकेको पाइँदैन। उक्त फर्महरूले तिर्नुपर्ने रकम आफूले तिर्न मन्जुर रहेको भनी हस्ताक्षर गरी, स्वीकार गरेको तथ्यलाई प्रतिवादीले कुनै बहानामा अस्वीकार गर्न विवन्धनको सिद्धान्तले मिल्ने नदेखिने।

व्यापारिक कारोबारमा उधारो लेनदेन हुने गर्दछ। उधारो कारोबार भई कम्पनीलाई तिर्नु पर्ने रकम नतिरी रहेको तर तिर्ने सहमति भएको देखिँदा उधारो कारोबारको हिसाब किताब के कति रहेको भनी यकिन गरी आपसी सहमतिबाट निर्धारण गरेको सो सहमति कागजले उधारो कारोबारको निरन्तरताको रूप रहेको मान्नु पर्ने हुन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा पुनरावेदक प्रतिवादी दीपकरत्न तुलाधरले दुवै फर्मको तर्फबाट

कम्पनीलाई तिर्नुपर्ने रकम कम्पनीले निर्धारण गरेको तालिकाअनुसार नतिरेमा कानूनबमोजिम भोग्न मन्जुर गर्दछु भनी मिति २०६७।२।११ मा कागज गरेको र उक्त कागज भएको मितिबाट २ वर्षभित्रै मिति २०६९।२।११ मा फिराद दर्ता भएको देखिँदा पुनरावेदक प्रतिवादीको वादीको फिराद हदम्यादभित्र नपरेको हुँदा खारेज गर्नुपर्ने भन्ने जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः उक्त फर्महरूको तर्फबाट कम्पनीलाई तिर्नुपर्ने देखिन आउने रकम कम्पनीले निर्धारण गरेको तालिकाअनुसार नतिरेमा कानूनबमोजिम भोग्न मन्जुर गर्दछु भनी पुनरावेदक प्रतिवादी आफैँले हस्ताक्षर गरी स्वीकार गरेको हुँदा सो रकम वादीलाई बुझाउनु पर्ने दायित्वबाट उन्मुक्ति नपाउने हुँदा पुनरावेदन अदालतको फैसला बदर गरी उक्त दायित्वबाट मुक्ति पाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, पुनरावेदक प्रतिवादी दीपकरत्न तुलाधरबाट मिति २०६७।२।११ गतेको कागजमा उल्लिखित साँवा रु.१७,७०,७४२।९६ (सत्र लाख सत्तरी हजार सात सय बयालिस रुपैयाँ छयानबबे पैसा) मात्र भराई पाउने ठहर्‍याई मिति ०७१।१।११ मा पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः हिरा डंगोल

कम्प्युटरः कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७४ साल माघ ७ गते रोज १ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७४-CR-००१०, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, मुस्तान बरमनसमेत वि. नेपाल सरकार**

मानव बेचबिखनजस्तो गम्भीर प्रकृतिको कसुर एउटा व्यक्तिले मात्र चाहेर वा एउटा व्यक्तिको मात्र संलग्नताले पूरा हुन सक्दैन। यस्तो कसुरमा एकभन्दा बढी व्यक्ति संलग्न रहने हुँदा यो एउटा संगठित

अपराधअन्तर्गत पर्ने कसुर हो। संगठित रूपमा हुने यस प्रकारको अपराधमा पीडित तथा सबै प्रतिवादीहरूका बिच एकआपसमा चिनजान हुन्छ नै भन्ने हुँदैन। यस अवस्थामा प्रस्तुत मुद्दाका प्रतिवादीहरूको राजेश राय र पीडितासँग चिनजान नरहेको भन्दैमा प्रतिवादीहरूले अपराध नै गरेको होइन भनी मान्न नमिल्ने।

प्रतिवादीहरूले वारदात भएको दिन निजहरू विराटनगर स्थित टेन्टहाउसमै काम गरिरहेको भन्ने जिकिर लिए तापनि उक्त कुरा निज प्रतिवादीहरूले शङ्काहित तवरबाट पुष्टि गर्न सकेको नदेखिने।

प्रतिवादीहरूउपर पीडिताकी आमाले दिएको किटानी जाहेरी एवम् घटना विवरण तथा वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिसहरू सन्तोष शर्मा, अलखलाल दास र अरुणकुमार यादवसमेतले पीडिता घरबाट हराएपछि खोजी गर्न जाँदा दुर्गा टेन्टहाउसमा काम गर्ने तीनजना केटाहरूले भारतको बंगाल श्यामपुर भन्ने ठाउँमा पुऱ्याएको भन्ने थाहा भई मसमेतले पीडिताको उद्धार गरी ल्याएको हो भनी गरेको बकपत्रबाट समेत प्रतिवादीहरूले मौकामा कसुरमा साबिती रही गरेको कागजको बेहोरासँग मेल खान गएको देखिने।

तसर्थ, प्रतिवादीहरूउपर परेको किटानी जाहेरी, प्रतिवादीहरूले आफूलाई विराटनगर हुँदै जोगबनीबाट भारत पुऱ्याएको भनी नाबालिका पीडिता मोरङ “द” ले घटनाको सिलसिलेवार वर्णन गर्दै अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरेको घटना विवरण कागजको पुष्टि हुने गरी अदालतसमक्ष दिएको बकपत्र तथा वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिसहरूको बकपत्रसमेतबाट यी प्रतिवादीहरू चञ्चल वरमन, तपस वरमन र मुस्तान वरमनले अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको देखिन आएकोमा अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको होइन भनी देखिनेसम्मको तथ्ययुक्त एवम् विश्वसनीय सबुद प्रमाण प्रतिवादीहरूले पेस गर्न नसकेबाट उच्च अदालत विराटनगरको प्रतिवादीहरूलाई अभियोग

दाबीबमोजिम सजाय हुने ठहऱ्याएको फैसला मिलेको देखिने।

अतः उपर्युक्त विवेचित आधार कारणहरूबाट प्रतिवादीहरू चञ्चल वरमन, तपस वरमन र मुस्तान वरमनले अभियोग दाबीबमोजिम मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२)(क) को कसुर गरेको पुष्टि हुन आएकोले निज प्रतिवादीहरूलाई सोही ऐनको दफा १५(१)(ड)(१) बमोजिम पीडिता नाबालिगसमेत देखिँदा जनही १५ वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ जरिवानासमेत हुने र सोही ऐनको दफा १७ बमोजिम प्रतिवादीहरूलाई भएको जरिवानाको ५० प्रतिशतमा नघट्ने गरी पीडिताले प्रतिवादीहरूबाट क्षतिपूर्तिसमेत भरिपाउने ठहरी मोरङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।१२।१ मा भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत विराटनगरबाट मिति २०७३।८।१ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः इशा सुवेदी

कम्प्युटरः सन्तोष अवाल

इति संवत् २०७५ साल साउन १३ गते रोज १ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही, ०६९-WO-११११, उत्प्रेषण, रूपनारायण श्रेष्ठ वि. राजकुमार श्रेष्ठ**

विपक्षी वादी राजनारायण श्रेष्ठले बुबाबाट आफ्नो अंश पाउने नैसर्गिक हकबाट वञ्चित हुन नपरोस् भनी उल्लिखित जग्गा रोक्का राखिपाउँ भनी निवेदन दिएको देखिन्छ। वादीले प्रतिवादीबाट अंश पाउन सक्ने देखिएपछि विवादित सम्पत्ति रोक्का राख्ने प्रक्रिया अपनाइन्छ। यो विषय मुद्दाको एउटा प्रक्रियागत विषय हो। पुनरावेदन अदालतबाट यस सम्बन्धमा भएको आदेश अन्तिम फैसला होइन। अन्तिम फैसला हुँदा अंश पाउने नपाउने, कुन कुन सम्पत्ति बन्डा लाग्ने भन्ने कुराको विश्लेषण हुने नै

हुन्छ। अदालतबाट फैसला भइसकेपछि पनि आफूलाई चित्त नबुझेको कुरामा पुनरावेदनको अधिकार पक्षलाई सुरक्षित नै रहने।

यस्तो सुरक्षित वैकल्पिक अधिकार रहँदा रहँदै सम्पति रोक्का राख्ने गरी भएको आदेशउपर निवेदक असाधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गत यस अदालत प्रवेश गरेको देखिन्छ र त्यस्तो आदेशउपर परेको प्रस्तुत निवेदनमा निवेदकको मागबमोजिम गरिदिने हो भने सुरु जिल्ला अदालतमा चलेको अंश मुद्दामा प्रत्यक्ष असर पर्न जान्छ। माथिल्लो अदालतले तल्लो अदालतमा विचाराधीन कुनै मुद्दालाई असर पर्ने गरी कुनै पनि आदेश जारी गर्नु उपयुक्त नहुने।

जिल्ला अदालतमा विचाराधीन मुद्दाबाट निवेदकको हक हनन् भएको वा हकमा अपूरणीय क्षति पुग्न गएको भनी कहींकतैबाट देखिँदैन। यसरी जिल्ला अदालतबाट निर्णय नै नभई निज निवेदक आफ्नो संवैधानिक उपचारको हक प्रयोग गरी यस अदालतमा प्रवेश गरेको देखिन्छ। उक्त अंश चलन मुद्दामा बुझ्नु पर्ने प्रमाण बुझी सुरु अदालतबाट निर्णय हुने नै हुँदा हाल उक्त विचाराधीन रहेको मुद्दाको काम कारबाहीमा असर पर्ने गरी यस अदालतबाट रिट जारी गर्न उपयुक्त हुँदैन। प्रस्तुत मुद्दामा वैकल्पिक उपचारको समाप्ती भएको मान्न मिल्ने देखिएन। वैकल्पिक उपचारको बाटो रहेभएको अवस्थामा उक्त संवैधानिक व्यवस्थाअनुसार रिट क्षेत्राधिकार आकर्षित हुने नदेखिने।

अतः उक्त सामान्य क्षेत्राधिकारअन्तर्गत चलिरहेको मुद्दामा हुने फैसलाउपर पुनरावेदन गर्ने हक सुरक्षित नै हुने भई वैकल्पिक उपचारको पर्याप्तता रहेभएको देखिएको हुँदा रिट निवेदनबाट मातहतको अदालतमा विचाराधीन रहेको मुद्दाको काम कारबाहीमा असर पर्ने गरी रिट जारी गर्नपर्ने अवस्था नदेखिँदा रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : इशा सुवेदी

इति संवत् २०७५ साल असोज १० गते रोज ४ शुभम्।

४

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही, ०७२-CR-१०१०, मानव अपहरण तथा शरीरबन्धक, नेपाल सरकार वि. सुमन तामाडसमेत

मिति २०६७।६।२३ गते बेलुका अं.७:५० बजेको समयमा म खाना खाएर सुतिरहेको अवस्थामा मैले नचिनेका ७/८ जना केटाहरूले मलाई सानो काम छ हिँड् भन्दै जोर जुलुमपूर्वक घरदेखि उत्तर चारकोसे जंगलमा पुऱ्याई प्रतिवादी पुष्प खनालसमेतको निर्देशनमा योजना बनाई सबै प्रतिवादीहरू संगठित भई विवादित जग्गाको विषयमा बन्धक बनाई कुटपिट गर्ने, उल्लिखित ४ कोसे जंगलमा लगी लान्ती, हात र मुक्काले शरीरको जत्रतत्र भागमा हानी घटनाकोबारेमा कहींकतै नभन्न, रिपोर्ट गरे तेरो परिवार ७ दिनभित्र सखाप पारी दिन्छौं भनी रु.२५,०००।- फिरौती दिने सर्तमा रातको १०:१५ बजे छाडेको हुँदा प्रतिवादीहरूलाई कानूनबमोजिम कारबाही गरिपाउँ भन्ने खेमबहादुर गौलीको किटानी जाहेरी दरखास्त परेको देखिन्छ। पक्राउ परेका प्रतिवादी उपहार भन्ने सुमन तामाडले अनुसन्धानमा बयान गर्दा जाहेरवालाको जाहेरी दरखास्तमा उल्लेख भएको बेहोराबमोजिम मिति २०६७।६।२३ गते बेलुका पुष्प खनालसमेतको निर्देशनमा योजना बनाई सबै प्रतिवादीहरू संगठित भई विवादित जग्गाको विषयमा बन्धक बनाई कुटपिट गरी रकमसमेत माग गरेको भन्ने सुनेको हुँ भनी वारदातमा संलग्न रहेको कुरामा साबित रही बयान गरेको र अदालतमा बयान गर्दा कसुरमा इन्कार रही आफू जिल्ला बाहिर रहेको भनी बयान गरेको भए तापनि अनुसन्धानमा भएको निजको बयान कागजलाई अन्यथा पुष्टि गर्न सकेको देखिँदैन। यसरी नै जाहेरवालाले जाहेरी बेहोरालाई पुष्टि हुने गरी अदालतमा आई बकपत्रसमेत गरेको देखिने।

अपहरण सम्बन्धमा भएको कानूनी व्यवस्था

हेर्दा मुलुकी ऐन, अपहरण गर्ने तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १ नं. मा कसैले कुनै व्यक्तिलाई बल प्रयोग गरी वा प्रयोग गर्ने धम्की दिई, डर त्रास देखाई, जोरजुलुम गरी, हातहतियार देखाई, छलकपट गरी, झुक्यानमा पारी वा नशालु वा मादक पदार्थ सेवन गराई वा कुनै यातायातको साधन कुनै किसिमले कब्जा वा नियन्त्रणमा लिई कुनै ठाउँमा लैजान हुँदैन । सो गरे अपहरण गरेको मानिनेछ भन्ने र २ नं.मा कसैले कुनै व्यक्तिलाई बल प्रयोग गरी वा प्रयोग गर्ने धम्की दिई, डर त्रास देखाई, जोरजुलुम गरी, हातहतियार देखाई, छलकपट गरी, झुक्यानमा पारी वा नशालु वा मादक पदार्थ सेवन गराई वा कुनै यातायातको साधन वा ठाउँ कुनै किसिमले कब्जामा लिई वा त्यसउपर अनधिकृत तवरले नियन्त्रणमा लिई थुन्न हुँदैन । सो गरे शरीर बन्धक लिएको मानिनेछ भन्ने व्यवस्था रहेबाट निज प्रतिवादीहरूको कार्य उल्लिखित दफाले परिभाषित गरेको अपराध रहेको देखिने ।

अतः उल्लिखित तथ्य एवं कानूनी व्यवस्थाको रोहबाट हेर्दा किटानी जाहेरी दर्खास्त, प्रतिवादीको अनुसन्धानको साबिती बयान, जाहेरवालाको बकपत्रसमेतका बेहोराबाट समेत प्रतिवादीहरूले अपहरण तथा शरीर बन्धकको कार्य गरेको पुष्टि भएको देखिएको अवस्था रहे पनि लगाउका ०७०-CS-२५४ र ०७१-CS-००२८ को मानव अपहरण र शरीरबन्धक मुद्दाको वारदात र प्रस्तुत मुद्दाको वारदात एउटै भएको र अर्को मुद्दामा प्रतिवादीहरूलाई वादी दाबीबमोजिम सजाय भइसकेको हुँदा प्रस्तुत मुद्दामा सजाय नगर्ने हदसम्म पुनरावेदन अदालत इलामको फैसला मिलेकै देखिँदा सो हदसम्म सदर हुन्छ । उक्त फैसलामा क्षतिपूर्तिको हकमा केही नबोलेकोले सोतर्फ विचार गर्दा दुवै मुद्दामा फरकफरक पीडित रहेको देखिएको र अर्को मुद्दामा पीडितले क्षतिपूर्ति पाएको अवस्थामा यस मुद्दाका पीडितले क्षतिपूर्ति नपाउने भन्न मिलेन । तसर्थ प्रस्तुत मुद्दाका पीडितले पनि

रु.५०००।- क्षतिपूर्ति पाउने हुँदा सो हदसम्म पुनरावेदन अदालत इलामको फैसला केही उल्टी हुने ।  
इजलास अधिकृत: राजकुमार दाहाल  
कम्प्युटर: रमला पराजुली  
इति संवत् २०७६ साल वैशाख ४ गते रोज ४ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही, ०७५-RC-००८५, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. उम्बरबहादुर चोडवाड**

प्रतिवादी उम्बरबहादुर चोडवाडले मादक पदार्थ सेवन गरी आफ्नो सहोदर बाबुलाई अंशको निहुमा झगडा गरी छुरा प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको भन्ने निजउपर मौकामा किटानी जाहेरी दरखास्त परेको पाइन्छ । मिसिल संलग्न लासजाँच मुचुल्का र शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट मृतक शेरबहादुर चोडवाडको आङ जिउमा अनेकौं घाउचोट परेको देखिन्छ । मौकामा घटना विवरण कागज गर्ने धनबहादुर थापासमेतले प्रतिवादीले मृतक शेरबहादुर चोडवाडलाई कुटपिट गरी कर्तव्य गरी मारेकोमा विश्वास लाग्छ भनी लेखाएको देखिन्छ । प्रतिवादीले मादक पदार्थ सेवन गरी अंशको विषयलाई लिएर झगडा गरी मृतकलाई छुरा प्रहार गरी घाइते बनाएकोले उपचारका क्रममा मृत्यु भएको भनी भोलानाथ भट्टराईसमेतले वस्तुस्थिति मुचुल्कामा बेहोरा लेखाएको र मौकामा भएको किटानी बेहोरालाई अदालतसमक्ष बकपत्र गरी पुष्टि गरिदिएको देखिन्छ । यसका अतिरिक्त कञ्चटमा बोक्सिङको आकारको निलडाम देखिएको, दायाँ-बायाँ गालामा र नाकडाँडीमा र दुवै गालाछेउ पुग्ने गरी काटिएको घाउ गहिराई १ १/२ इन्च भएको भन्ने लास प्रकृति एवम् घटनास्थल प्रकृति मुचुल्कामा उल्लेख भएको, Post mortem report मा मृत्युको कारण Cause of death is excessive internal hemorrhage due to rupture spleen and liver भन्ने उल्लेख भएको मिसिल संलग्न सबुद प्रमाणबाट देखिन आउने ।

माथि विवेचित तथ्यका आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी उम्बरबहादुर चोडवाडले मादक पदार्थ सेवन गरी अंशसम्बन्धी विवाद सिर्जना गरी आफ्नै बाबु मृतक शेरबहादुर चोडवाडलाई हात मुक्काले कुटपिट एवम् छुरा प्रहारसमेत गरी शरीरको विभिन्न भागमा घाउचोट पारी मरणासन्न अवस्थामा पारी आफू त्यहाँबाट भागेको र गाउँले छिमेकीहरूसमेत भई उपचारार्थ अस्पतालमा लैजाँदै गरेको अवस्थामा बाटोमा मृत्यु भएको तथ्य शङ्कारहित तवरले पुष्टि हुन आएकोले प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने नै देखिने।

तसर्थ उपर्युक्त तथ्य आधार र कारणबाट प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई भएको झापा जिल्ला अदालतको फैसला सदर कायम हुने ठहर्‍याएको उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासको मिति २०७५।०३।२९ को फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: चिन्तामणि शर्मा  
इति संवत् २०७५ साल माघ २२ गते रोज ३ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७१-WO-०००८, उत्प्रेषण / परमादेश, नेत्रबहादुर लिम्बू वि. शिक्षा मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत**

माध्यमिक शिक्षा परिषद्ले विद्यालयको सम्बन्धन रद्द गर्दा भौतिक शास्त्रको प्रश्नपत्र out गरेको भन्ने विषयलाई आधार लिएको देखिएको छ। जिलेट उच्च मा.वि.मा भौतिकशास्त्रसम्बन्धी विषयको पढाई नै नहुने भन्ने देखिँदा उक्त विषयसँग निज विद्यालयले कुनै सरोकार राख्ने अवस्था रहेन। उक्त प्रश्नपत्रहरू सुरक्षाकर्मीको निगरानीमा कालीमाटी प्रहरी वृत्तमा राखिएकोमा रूद्रबहादुर अधिकारीले परीक्षा सुरु हुनुभन्दा १ घण्टा पहिले गई आफूलाई

झुक्‍याई लिएको भन्ने निज गुप्तबहादुर क्षेत्रीको भनाइ रहेको छ। आफ्नो विद्यालयका विद्यार्थीहरूको सरोकार नै नभएको विषयको प्रश्नपत्र out गर्नुपर्ने औचित्यता नै नरहेको अवस्थामा उक्त प्रश्नपत्र out गरे होलान् भनी मान्न सकिने अवस्था रहेन अर्कोतर्फ उक्त प्रश्नपत्र जिलेट उच्च मा.वि.मा भेटिएको नभई युनिभर्सल कलेजमा भेटिएको छ। सोही विषयमा निवेदक नेत्रबहादुर लिम्बूलाई भ्रष्टाचार मुद्दा लागी निजले अभियोग दाबीबाट सफाई पाएको देखिएको छ। निजले सफाई पाएको अवस्थाले निज प्रश्नपत्र out गर्ने कार्यमा संलग्न नरहेको भन्ने तथ्य स्थापित हुन आएको छ। विद्यालयमा आंशिकरूपमा कार्यरत शिक्षक रूद्र अधिकारीबाट प्रश्नपत्रको गोपनीयता भङ्ग गर्ने कार्य भएकै हो भने पनि निजले गरेको कसुरको दायित्व यी निवेदकलाई पनि हुने भन्न मिल्ने देखिएन। सो हुँदा यी निवेदकले उक्त प्रश्नपत्रको गोपनीयता भङ्ग गरेको भन्ने नदेखिने।

सम्बन्धन प्रदान गर्दा चाहिने कानूनमा उल्लिखित सर्त उल्लङ्घन गरे नगरेको सम्बन्धमा छानबिन गरी सो सम्बन्धमा यी निवेदकसमेतलाई बुझी सफाई पेस गर्न मनासिब मौका दिई तत्सम्बन्धमा निर्णय गर्नुपर्नेमा सो नगरी प्रश्नपत्रको गोपनीयता भङ्ग गरेको भन्ने विषयलाई लिएर सम्बन्धन रद्द गरेको अवस्थाले निवेदकलाई सुनुवाइको मौका प्रदान नगरी प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तविपरीतको कार्य गरेको देखिने।

मिति २०६८।०१।२९ गतेको परीक्षाको प्रश्नपत्रको गोपनीयता भङ्ग गरेको भन्ने सम्बन्धमा जिलेट उच्च मा.वि.को प्रमुख भई काम गर्ने यी निवेदक नेत्रबहादुर लिम्बूको संलग्नता रहेको नदेखिएको भनी सोही विषयमा परेको भ्रष्टाचार मुद्दामा विशेष अदालतको मिति २०७१।०१।२३ को फैसलाले निजले सफाई पाई उक्त फैसला अन्तिम भएको अवस्थाले यी निवेदकलाई सो कार्यमा संलग्न रहेको भन्न मिल्ने देखिएन। विद्यालयको सम्बन्धन वा



सम्बन्धन खारेज र प्रश्नपत्रको गोपनीयता भङ्ग भन्ने विषय एक अर्कामा अन्तरनिहित रहेको नभई दुई अलग विषय हुन् । प्रश्नपत्रको गोपनीयता भङ्ग व्यक्तिको अपराधिक कार्यसँग सम्बन्ध छ भने विद्यालयको सम्बन्धन वा सम्बन्धन रद्द विद्यालयले कानूनबमोजिम सर्तको पालना गरे नगरेको विषयसँग सम्बन्ध छ । भ्रष्टाचार मुद्दा लागी उक्त मुद्दामा सफाइ पाएपछि प्रश्नपत्रको गोपनीयता भङ्ग गरेको सम्बन्धमा रहेको विवाद एकअर्थमा समाप्त भएको अवस्थामा पुनः सोही विषयमा कारबाही गर्नु प्राङ्गन्याय सिद्धान्तविपरीत हुन जाने ।

निवेदकले आफूले अभियोगबाट सफाइ पाएपछि सम्बन्धन स्थगन फुकुवा गरी पठन पाठन तथा भर्ना प्रक्रिया सुचारू गरिपाउँ भनी उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्मा निवेदन दिएकोमा सो निवेदनउपर कुनै कारबाही नभई विद्यालयको सम्बन्धन रद्द र लगत कट्टा गरिएको पत्र पठाएको देखिन्छ । शिक्षा ऐन, २०२८, शिक्षा नियमावली, २०५९ तथा शिक्षासम्बन्धी विनियमहरू, २०५५ मा कानूनको उल्लङ्घन गरेमा, जिम्मेवारी पूरा गर्न नसकेमा, सर्तको पालना नगरेमा सो सम्बन्धमा कारबाही गरी सफाइ पेस गर्ने मनासिब माफिकको समय दिनु पर्ने व्यवस्था रहेको देखिने कानूनी प्रावधानको पालना नगरेको अवस्थामा समेत निजलाई आफ्नो सफाइ पेस गर्न मनासिब मौका दिनु पर्ने स्पष्ट कानूनी व्यवस्था भइरहेको अवस्थामा रिट निवेदकले कानूनले निर्धारण गरेको सर्त पालना नगरेको भनी विपक्षीहरूले भन्न नसकेको स्थितिमा निवेदक विद्यालयलाई प्रदान गरेको सम्बन्धन रद्दसमेत गरेको उच्च शिक्षा परिषद्को निर्णय त्रुटिपूर्ण रहेको देखिने ।

तसर्थ माथि दफा दफामा विवेचित तथ्य, प्रमाण र आधारमा निवेदक जिलेट आवासीय उच्च माध्यमिक विद्यालयको सम्बन्धन रद्द गर्ने गरेको मिति २०७१।३।३० को निर्णय कानूनसम्मत भन्न मिलेन । त्यस्तो निर्णयको आधारमा यी निवेदकलाई

उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्ले मिति २०७१।०३।३१ मा लेखेको पत्रसमेत कानूनसम्मत भन्न नमिलेबाट उक्त निर्णय उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब निवेदक जिलेट आवासीय उच्च माध्यमिक विद्यालयलाई प्रदान गरिएको मिति २०५७।०३।१४ (कोड नं.२७९८) को सम्बन्धनबमोजिम निर्विवादरूपमा पठन पाठन गर्न दिई विद्यालयलाई यथावत् सञ्चालन गर्न दिनु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: चिन्तामणी शर्मा

इति संवत् २०७५ साल माघ २१ गते रोज २ शुभम् ।  
यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार भएका छन्:

- ०७१-WO-०८९५, उत्प्रेषण, सौगात के.सी.समेत वि. उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्, सानोठिमीसमेत
- ०७१-MS-००२०, अदालतको आदेशको अवहेलना, नेत्रबहादुर लिम्बू वि. नारायणप्रसाद कोइरालासमेत
- ०७१-MS-००३६, अदालतको अवहेलना, नेत्रबहादुर लिम्बू वि. चैतन्य शर्मा उपाध्यायसमेत
- ०७२-WO-०६८७, उत्प्रेषण, ममता राईसमेत वि. उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्, सानोठिमीसमेत
- ०७२-WO-०७१२, उत्प्रेषण, सिता ओझासमेत वि. उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्, सानोठिमीसमेत
- ०७२-WO-०३२८, उत्प्रेषण / परमादेश, खड्ग राज खरेल वि. उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्, सानोठिमीसमेत
- ०७२-WO-०५२३, उत्प्रेषण, सौगात के.सी.समेत वि. उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्, सानोठिमीसमेत

- ०७३-WO-१००७, उत्प्रेषण, जिलेट उच्च माध्यमिक विद्यालय वि. शिक्षा विभाग सानोठिमीसमेत
- ०७३-WO-१२४२, परमादेश / उत्प्रेषण / निषेधाज्ञा, विनिता तामाडसमेत वि. शिक्षा विभाग सानोठिमीसमेत

इजलास नं. ४

१

मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७५-RB-०१३५, बैंकिङ कसुर, नेपाल सरकार वि. MITKO STOYANOV MITEV

प्रतिवादीका साथबाट बरामद भएका सामानहरूको विवरण एवम् प्रकृति हेर्दा पर्यटक भिसामा नेपाल भ्रमण गर्न आउने अन्य विदेशीहरूको भन्दा फरक शङ्कास्पद सामानहरू जस्तै Card Reader गैरकानूनी इलेक्ट्रोनिक कार्ड, नेपाली नगद रु.४,४०,०००/- समेत निजको साथबाट बरामद भएको देखिने।

प्रतिवादीले मौकामा कागज गर्दा विभिन्न बैंकका शाखाबाट नक्कली ATM कार्ड प्रयोग गरी आफूले रु.३,५०,०००/- निकालेको भनी लेखाउनु र निजको साथबाट रु. ३,५०,०००/- भन्दा बढी नै रकम बरामद भएकोमा सोको स्रोत खुलाउन नसक्नु, CCTV फुटेजमा देखिएको मानिस आफू नै हो भनी सनाखत गर्नु जस्ता कार्यसमेतका आधारबाट यी प्रतिवादीले अभियोग दाबीअनुसार बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा ५ र ६ को परिभाषित कसुर गरेकोमा विवाद नरहने।

प्रतिवादी MITKO STOYANOV MITEV स्वयम्ले रु.३,५०,०००/- मात्र ATM बाट निकालेको भनी कसुर स्वीकार गरेको अवस्थामा अभियोग

माग दाबीबमोजिमको बरामदी बिगो अमेरिकी डलर २० (बीस) को ने.रु. २,०४७।२० र नेपाली रु. ४,४०,०००/- गरी जम्मा रु. ४,४२,०४७।२० नै ATM प्रयोग गरी निकालेको भन्ने मिसिल संलग्न प्रमाण कागजातहरूबाट पुष्टि हुन आएको नदेखिँदा र प्रतिवादीले आफ्नो बयानमा अवैध तरिकाले रु.३,५०,०००/- निकालेको छु भनी लेखाइदिएकोमा प्रतिवादीको साथबाट बरामद भएको अमेरिकी डलर २० (बिस) बराबरको नेपाली रूपैयाँ २,०४७।२० र नेपाली ४,४०,०००/- (चार लाख चालिस हजार) गरी जम्मा रु. ४,४२,०४७।२० (चार लाख बयालिस हजार सत्चालिस रूपैयाँ बिस पैसा) रकम बिगो कायम गरी बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा १५(२) बमोजिम सम्बन्धित बैंकहरूलाई उक्त बैंकहरूको मागदाबीअनुसार भराई पाउन र बिगो रु. ४,४२,०४७।२० बमोजिम प्रतिवादीलाई जरिवानासमेत हुन् भन्ने अभियोगपत्रमा उल्लेख भएको पाइए पनि प्रतिवादीले स्वीकार गरेकोभन्दा बढी रकम एटिएमबाट झिकेको रकम हो भनी यकिन भन्न सकिएको अवस्था नहुँदा यी प्रतिवादीलाई बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा १५(२) (क) बमोजिम ५ महिना कैदको सजाय र जरिवानाका हकमा रु. ३,५०,०००/- (तीन लाख पचास हजार) बिगो कायम गरी बिगोबमोजिम जरिवानासमेत हुने ठहर गरेको उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला मनासिब नै देखिँदा यी प्रतिवादीलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम नै गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार र कारणसमेतबाट उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।१०।७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: माधब भण्डारी

इति संवत् २०७६ साल असार २ गते रोज २ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई**, ०७५-WH-०१९५, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, *मिस्रा पुन वि. गृह मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत*

मिसिल कागजात हेर्दा संगठित अपराध निवारण ऐनअन्तर्गतको मुद्दामा अनुसन्धानकै क्रममा निवेदकका तर्फबाट मिति २०७६।२।८ मा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदन यस अदालतमा दर्ता भएकोमा मिति २०७६।२।९ मा कारण देखाउ आदेश जारी भएको र मिति २०७६।२।१० मा उक्त संगठित अपराध मुद्दाको अभियोग कैलाली जिल्ला अदालतमा दर्ता भएको देखिन्छ । उक्त मिति २०७६।२।८ मा दर्ता भएको बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनको विपक्षीका नाउँको म्याद मिति २०७६।२।१३ मा जारी भएकोमा उक्त म्याद कैलाली जिल्ला अदालत, जिल्ला प्रहरी कार्यालय, कैलालीलगायतको विपक्षीहरूका नाउँमा तामेल हुनुपूर्व नै मिति २०७६।२।१० मा अभियोग दायर भएको संगठित अपराध मुद्दाको थुनछेक आदेश मिति २०७६।२।१४ मा भएको र थुनछेक आदेश हुँदा यी निवेदक प्रतिवादी दानबहादुर फडेरासँग धरौट रू. १,५०,०००।- माग भएकोमा सो माग भएको धरौट बुझाउन नसकी यी निवेदक थुनामा रहेको भन्ने तथ्य कैलाली जिल्ला अदालत, जिल्ला प्रहरी कार्यालय, कैलालीसमेतको लिखित जवाफलगायतका मिसिल कागजबाट देखिने ।

यसरी कानूनबमोजिम जाहेरी परी पक्राउ अनुमति प्राप्त भई मुद्दा दर्ता भई अनुसन्धान भएको र समयमै अनुसन्धान कार्य समाप्त भई अभियोग पत्र दायर भएको भन्ने तथ्य मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट खुल्न आएको र त्यसरी अभियोग दर्ता भई बयान कार्य सम्पन्न भई हाल अदालतबाट माग भएको धरौट दाखिल नगरी निवेदक थुनामा रहेको देखियो । प्रस्तुत बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदन दर्ता हुँदाको थुनाको

अवस्था परिवर्तन भई हाल निवेदकसँग अधिकारप्राप्त अदालतले प्रचलित कानूनको अधीनमा रही पूर्पक्षको सिलसिलामा धरौट माग गरेको र निवेदकले सो माग भएको धरौट नबुझाई थुनामा बसेको देखिँदा मुद्दाको कारबाहीको क्रममा जिल्ला अदालतले गरेको थुनछेकको आदेशउपर चित्त नबुझे मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा ७३ बमोजिम पुनरावेदन सुन्ने उच्च अदालतमा निवेदन दिन सक्ने वैकल्पिक उपचार रहिरहेको र अदालतको आदेशबमोजिम माग भएको धरौटी दाखिल नगरी बसेको कुरालाई गैरकानूनी थुना मान्न नमिल्ने हुँदा निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी हुने अवस्था नदेखिने ।

तसर्थ: यसमा अदालतमा मुद्दा दायर भई थुनछेक आदेशसमेत भइसकेको परिप्रेक्ष्यमा जिल्ला अदालतमा कारबाहीयुक्त अवस्थामा रहेको मुद्दामा असर पर्ने गरी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिटबाट मुद्दाको औचित्यतामा प्रवेश गर्ने अवस्था नभएकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रराज काफ्ले

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७६ साल असार १७ गते रोज ३ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी**, ०७०-CR-०६७२, सरकारी छाप दस्तखत कित्ते, *नेपाल सरकार वि. सुरेश महर्जन*

प्रतिवादी सुरेश महर्जनले आन्तरिक राजस्व कार्यालय, ललितपुरको कर चुक्ता प्रमाणपत्रलाई घरमा भएको कम्प्युटरमा राखी स्क्यानिङ गरी आन्तरिक राजस्व कार्यालय, ललितपुरको लेटरप्याडमा सो कार्यालयको छाप प्रयोग गरी च.नं. ४४८६ को मिति २०६६।१२।२२ को कर चुक्ता प्रमाणपत्र कित्ते गरी नक्कली बनाई उद्योग विभागमा पेस गरेको भनी स्वीकार गरी अनुसन्धान अधिकारी र अदालतसमक्ष

गरेको बयानलाई घटनास्थल मुचुल्का, घटना विवरण कागज र प्रतिवादीले पेस गरेको उक्त च.नं. ४४८६ मिति २०६६।१२।२२ को कर चुक्ताको प्रमाणपत्र आन्तरिक राजस्व कार्यालयबाट जारी नभएको भन्ने आन्तरिक राजस्व कार्यालय, ललितपुरको च.नं. २७९ मिति २०६७।४।३१ र च.नं. ३६० को मिति २०६७।५।७ को पत्रहरूबाट समेत पुष्टि भएको देखिने।

यसरी प्रतिवादी सुरेश महर्जनले पहिले नक्कली कर चुक्ता प्रमाणपत्र बनाई आन्तरिक राजस्व कार्यालय, ललितपुरमा कर छल्ने उद्देश्यले उद्योग विभागमा पेस गरेपछि मिति २०६७।४।३१ मा निज पक्राउ परी मुद्दाको छानबिन सुरु भएपश्चात् जियोस्पासियल प्रा.लि.पुल्चोक, ललितपुरले तिर्नु पर्ने आ.व. ०६५।६६ को करबापतको रकम मिति ०६७।५।३ मा मात्र तिरेको भन्ने आन्तरिक राजस्व कार्यालय, ललितपुरको च.नं. ३२२ मिति ०६७।५।३ को कर चुक्ता प्रमाण पत्रबाट देखियो। निज प्रतिवादीले राज्यलाई तिर्नु बुझाउनु पर्ने दायित्वभित्र रहेको रकम लिई खाई मासी सरकारलाई क्षति पुऱ्याउने र आफूलाई फाइदा हुने काम गरेको देखिएको स्थितिमा नक्कली कर चुक्ता प्रमाणपत्र बनाउने र लाभ लिने क्रियाकलाप सम्पन्न भई यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी सुरेश महर्जनलाई पक्राउ गरी मुद्दाको अनुसन्धान सुरु भएपछि कर रकम तिरेको कारणबाट मात्र आपराधिक दायित्वबाट उन्मुक्ति पाउन सक्ने अवस्था नदेखिँदा नदेखिँदै तिर्नुपर्ने कर प्रस्तुत मुद्दा अदालतमा पेस हुनु अगावै चुक्ता गरिसकेको देखिएको हुँदा प्रतिवादी सुरेश महर्जनउपरको अभियोग दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्छ भनी सुरु ललितपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेको देखिन नआउने।

तसर्थ, उल्लिखित आधार कारणबाट सुरु ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६७।१।१८

मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६८।१२।१२ मा भएको फैसला प्रमाण मूल्याङ्कनको रोहमा त्रुटिपूर्ण देखिन आएकोले बदर गरी दिएको छ। निज प्रतिवादी सुरेश महर्जनले कित्ते कागजको महलको १ र १२ नं. बमोजिमको कसुर गरेको देखिन आएकोले निजलाई कित्ते कागजको महलको १२ नं. बमोजिम कैद वर्ष १(एक) र सोही महलको ९ नं. बमोजिम रु.५०।- (पचास रुपैयाँ) जरिवाना हुने।

इजलास अधिकृत: नारदप्रसाद भट्टराई, शा.अ. सरिता रिजाल

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल फागुन ८ गते रोज ४ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-WO-०५०२, उत्प्रेषण / परमादेश, यशबर्धन मोर वि. अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत**

भन्सार महसुल निर्धारण गर्दा कुन मालवस्तु कुन शीर्षक वा उपशीर्षकअन्तर्गत पर्ने हो भन्ने द्विविधा परेमा सो मालवस्तुको नमूनासमेत जाँची त्यस्तो वस्तुको शीर्षक वा उपशीर्षक वर्गीकरण गर्नुपर्ने बाध्यात्मक व्यवस्था गरेको देखिन्छ। प्रस्तुत विवादमा निवेदकले आयात गरेको वस्तुको शीर्षक वा उपशीर्षक निर्धारण गरिपाउँ भनी पटकपटक सम्बन्धित कार्यालयमा निवेदन दिनुको साथै सम्बन्धित कार्यालयले सो विषयमा कुनै जानकारी नगराएपछि भन्सार विभागमा समेत निवेदन दिएको देखिन्छ। सो निवेदनउपर विभागले कुनै निर्णय गरेको पाइँदैन। आयात गरिएको वस्तुको वैज्ञानिक परीक्षण पछिमात्र कुनै शीर्षक वा उपशीर्षकमा उक्त आयात गरिएको वस्तु पर्छ भनी यकिन गरी निर्णय गर्नुपर्ने दायित्व विभागको रहेको देखिन्छ। आफूले निर्वाह गर्नुपर्ने कानूनी दायित्व भएका निकायले दायित्व पूरा नगरी मिति २०६५।१।१९

को निर्णयअनुसार भन्सार उपशीर्षक ७२१०.९०.०० बाट वर्गीकरण भइसकेको भनी निवेदकलाई जानकारी गराएको देखिएको छ । निवेदकले आयात गरेको उक्त सामान उत्पादन गर्ने देश चीनबाट जारी भएको बिजकमा उल्लेख गरिएको वस्तुको नामसँग भन्सार विभागबाट घोषित गरेको नाम मेल खाएको नदेखिने । यसरी निवेदकले आयात गरेको मालवस्तु भन्सार प्रयोजनको लागि कुन शीर्षक वा उपशीर्षकअन्तर्गत पर्ने हो भन्ने द्विविधा उत्पन्न भई निवेदकबाट भन्सार महसुल धरौटी लिएपछि भन्सार ऐन, २०६४ को उल्लिखित दफा ८९ मा व्यवस्था भएको प्रक्रिया अपनाई कुन शीर्षक वा उपशीर्षकअन्तर्गत पर्ने हो निर्णय गर्नुपर्नेमा विपक्षीहरूबाट २०७२ सालमा आयात भएको सामानको शीर्षक द्विविधा भएको भनी धरौटी लिई माल छोड्ने काम भएकोमा सो द्विविधाको कानूनी प्रक्रियाबाट सम्बोधन नगरी मिति २०६५।१।१९ मा नै निर्णय भएको भन्ने उल्लेख गरी ३० प्रतिशत भन्सार महसुल लाग्ने (भन्सार उपशीर्षक ७२१०.९०.०० को) भनी निवेदकलाई जानकारी गराएको पत्र कानूनबमोजिमको देखिन आएन । यस अवस्थामा अर्को संकेत नम्बरअन्तर्गतको मालवस्तु भनी स्पष्ट आधार नदेखाई थप भन्सार महसुल असुल गर्न पाउने अख्तियार भन्सार ऐनले दिएको मान्न नमिल्ने ।

तसर्थ, कानूनले निर्दिष्ट गरेको प्रक्रिया अवलम्बन नगरी मिति २०६५।१।१९ को निर्णयको आधारमा निवेदकले आयात गरेको वस्तुको भन्सार उपशीर्षक ७२१०.९०.०० कायम हुने भनी भन्सार विभाग महसुल तथा वर्गीकरण शाखाको च.नं. ९०७ मिति २०७२।८।२९ को पत्र उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिदिएको छ । निवेदकले आयात गरेको मालवस्तुको के-कुन भन्सार दरबन्दीमा पर्ने हो यकिन गरी भन्सार महसुल असुल गर्नु भनी विपक्षी भन्सार विभाग तथा सुख्खा बन्दरगाह भन्सार कार्यालय, सिर्सिया,

वीरगन्जको नाममा परमादेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: जगतबहादुर पौडेल

इति संवत् २०७६ साल वैशाख १७ गते रोज ३ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०७२-WO-०५०३, उत्प्रेषण / परमादेश, यशबर्धन मोर वि. अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

५

मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही, ०६५-CR-०६४९, झुट्टा विवरण दिई नागरिकता लिएको, नेपाल सरकार वि. चन्द्रबहादुर कुँवरसमेत

प्रत्यर्थी प्रतिवादीमध्येका पशुपतिनाथ शर्माको मिति २०६५।१।१९ मा मृत्यु भइसकेको भन्ने देखिन आएकोले निजको हकमा मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १३३ बमोजिम प्रस्तुत मुद्दा कायम रहन सक्ने नदेखिँदा केही बोलिरहन नपर्ने ।

प्रतिवादीमध्येका डिम्पल गुलाटीलाई नागरिकता ऐन, २०२० को दफा १५ बमोजिम जनही २ वर्ष कैद, कित्ते कागजको महलको ९ नं. बमोजिम जनही रु.२०,०००।- को सयकडा २५% जरिवाना तथा ऐ. १२ नं. बमोजिम थप १ वर्ष कैद सजाय हुने ठहर गरेको सुरु कास्की जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहर्नाई पुनरावेदन अदालत पोखराबाट फैसला भई निजको हकमा मुद्दा अन्तिम भई बसेको अवस्था हुँदा सो सम्बन्धमा समेत केही बोलिरहनु नपर्ने ।

प्रतिवादी ध्रुव पराजुली र चन्द्रबहादुर कुँवरले आरोपित कसुर गरेको कुरा सहप्रतिवादी डिम्पल गुलाटीको बयानबाहेक अन्य कुनै स्वतन्त्र प्रमाणबाट देखिन आउँदैन । डिम्पल गुलाटीले नागरिकता लिँदाको अवस्थामा यी प्रतिवादीहरू ध्रुव पराजुली र चन्द्रबहादुर कुँवरले के कस्तो कार्य गरी नागरिकता दिलाउनमा

भूमिका निर्वाह गरे वा सहयोग गरे सो तथ्य कहिकैबाट पुष्टि हुन आएको अवस्था मिसिलबाट देखिँदैन। प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादी पक्षमा निहित रहेको हुन्छ। वादी नेपाल सरकारले सो कुरा शङ्कारहित तवरबाट पुष्टि गर्न कुनै विश्वसनीय प्रमाण पेस गर्न सकेको देखिँदैन। प्रतिवादीहरू अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष र अदालतसमेतमा कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको र निजहरूको इन्कारी साक्षीहरूको बकपत्रबाट समर्थन भएको देखिन्छ। नागरिकता लिने सन्दर्भमा मुख्य रूपमा फाइदा पुग्ने व्यक्ति डिम्पल गुलाटी रहेको र सो नागरिकताका सम्बन्धमा झुट्टा विवरण वा झुट्टो नागरिकता दिई गैरनेपालीलाई वंशजको आधारमा नागरिकता दिने दिलाउने कार्यमा संलग्न व्यक्ति राजेश बराल रहेकोमा निजको हकमा वतन स्पष्ट नखुलेका कारण तामेली रहेको देखिन आएकोबाट यी प्रतिवादीहरूउपरको कसुर प्रमाण कागजातहरूको आधारमा स्थापित हुन आएको मान्न सकिने। प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी ध्रुव पराजुली र चन्द्रबहादुर कुँवरले अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको भन्ने निर्विवाद रूपबाट पुष्टि हुने कुनै तथ्ययुक्त र विश्वसनीय प्रमाणसमेत वादी नेपाल सरकारबाट पेस हुन आएको अवस्था मिसिलबाट नदेखिँदा निजहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको फैसला बदर हुनुपर्ने भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर तथा विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस बुँदासँग सहमत हुन नसकिने।

अन्य प्रतिवादीहरू थमन सिंह थापा र डिल्लीराम शर्मा पौडेलका हकमा हेर्दा यीमध्ये थमन सिंह थापा सिफारिस गर्दाको समयमा क्षेत्रीय योजना कार्यालय, पोखरामा र डिल्लीराम शर्मा पौडेल जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कास्कीमा कार्यरत रहेको भन्ने देखिएको र सोही अवस्थामा यी प्रतिवादी शा.अ.थमन

सिंह थापाले मिति २०६०।३।१२ मा "यसमा लेखिएका श्री भोजराज बरालको छोरा वर्ष ३४ को राजेश बराललाई राम्ररी चिन्दछु, उपयुक्त लेखिएबमोजिम निजको बेहोरा जाने बुझेसम्म साँचो हो झुट्टा ठहरेमा कानूनबमोजिम सहुँला बुझाउँला" भन्ने बेहोरा उल्लेख गरी आफ्नो दस्तखत गरी कार्यरत कार्यालयको छाप लगाई सिफारिससमेत गरी दिएको भन्ने देखिन आएको अवस्था छ। तर यस विवाद सम्बन्धमा पछि छानबिन हुँदा मिति २०६१।११।२३ मा जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कास्कीमा रहेको सिफारिस गरिएको कागजको फोटोकपीको पिठमा सिफारिस गरिएको ठाउँमा भएको दस्तखत मेरो हो, फोटोमा भएको दस्तखत मेरो हो होइन फोटोकपी कागज हुँदा स्पष्ट भन्न सकिदैन। सक्कल अनुसूची हेरेपछि यकिन गर्न सक्छु भनी लेखाई दिएको देखिन्छ। निजले कास्की जिल्ला अदालतमा गरेको बयानमा मैले डिम्पल गुलाटी भन्ने व्यक्तिलाई चिन्दैन केवल झुट्टो नागरिकतामा भएको नाम राजेश बराल र अनुसूची फाराममा भरिएको व्यक्तिको नाम राजेश बराल भएको कारणले झुट्टो नागरिकताको सट्टामा प्रतिलिपिसम्म लिनका लागि सपोर्टिङ डकुमेन्टसमेतमा कागजको विश्वासमा परी सिफारिस गरेको हुँ, जानीजानी गरेको होइन भनी बयान गरेको देखिन्छ। २०४३ सालमा लिएको नागरिकताको फोटो र २०६० सालमा नागरिकता पाउँ भनी अनुसूचीमा टाँसिएको फोटो भिडाउन कठिन पर्न जाने पनि हुन्छ। त्यस अवस्थामा थमन सिंह थापाले गरेको बयान अन्यथा देखिँदैन। अर्का प्रतिवादी डिल्लीराम पौडेल जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कास्कीका कार्यरत कर्मचारी रहेका र नागरिकताको लागि पेस भएका आवेदन एवम् सिफारिससमेतको आधारमा सिफारिस गरेको भन्ने निजको बयान रहेकोले निजले जानीजानी झुट्टा बेहोराको नागरिकता दिन सिफारिस गरेको भनी ठहर गर्न न्यायोचित नदेखिने।

विवादित नागरिकता एवम् राहदानी मुद्दा

दायर हुनुपूर्व नै बदर भइसकेको भन्ने देखिएको छ । राजपत्राङ्कित कर्मचारीको सिफारिसमा नागरिकता दिने भनी नेपाल सरकार गृह मन्त्रालयबाट मिति २०४७।१।१४ मा परिपत्र भएको देखिएको र जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कास्कीमा आगलागी भई पुरानो अभिलेख नष्ट भएको भन्नेसमेत देखिन आएको अवस्थामा यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूले गरेको कार्य अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर हो भन्ने तथ्य शङ्कारहित तवरबाट पुष्टि हुन नआएकोले पुनरावेदन अदालत पोखराको फैसला बदर हुनुपर्ने भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, विवेचित आधार र कारणबाट सुरु कास्की जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादीमध्येका डिम्पल गुलाटीलाई सजाय ठहर गरेको र प्रतिवादीमध्येका डिल्लीराम पौडेल, थमन सिंह थापालाई सफाइ दिनेगरी भएको फैसला सदर हुने र प्रतिवादी चन्द्रबहादुर कुँवर र ध्रुव पराजुलीको हकमा सुरु जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी भई निज प्रतिवादीहरूले सफाइ पाउने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत पोखराबाट मिति २०६५।७।२७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: कुमार मास्के

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७६ साल जेठ २० गते रोज २ शुभम् ।

६

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही, ०७५-WO-०६२६, उत्प्रेषण / परमादेश, कमलप्रसाद ज्वाली वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत**

निवेदक कमलप्रसाद ज्वाली प्रतिवादीका नाममा वडा नं. १३ मा म्याद जारी भएकोमा सो वतनमा यी निवेदकको घरद्वार रहे नरहेको भन्ने सम्बन्धमा हेर्दा यी निवेदकउपर उच्च अदालत पाटनमा दायर

भएको २०७०-FJ-००१६ को बैकिङ कसुर मुद्दामा यी निवेदकका श्रीमती गौरी खनाल ज्वालीसमेत प्रतिवादी देखिएको र निज गौरी खनाल ज्वाली मिति २०७०।२।२२ मा नै पक्राउ परी सो मुद्दाको कारबाही चलेको र सो मुद्दामा निजलाई कैद र जरिवानासमेत हुने ठहर भएको उच्च अदालत पाटनको मिति ०७३।६।४ को फैसलाउपर निवेदककी श्रीमती निज गौरी खनाल ज्वालीले यस अदालतमा मिति २०७४।९।६ मा दायर गरेको ०७४-RB-०१५७ को पुनरावेदन पत्रमा निजले आफ्नो वतन ल.पु.जि.ल.पु.म.न.पा.वडा नं.१३ उल्लेख गरेको देखिएको छ । यसरी निवेदक कमलप्रसाद ज्वालीले ललितपुर उप.म.न.पा.वडा नं. १३ मा बसोबास नै नभएको भनी उल्लेख गरेको निवेदनको बेहोरा झुट्टा देखिन आएको छ । निवेदकको श्रीमतीले उल्लेख गरेको वतनमा मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको ११२ नं.को रीत पुर्‍याई तामेल भएको म्याद बेरीतसँग तामेल भएको भन्ने देखिन नआउने ।

मुद्दाको तपसिल खण्डमा निवेदक कमलप्रसाद ज्वालीलाई मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको २०८ नं. बमोजिम पुनरावेदनको म्याद दिइरहन परेन भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । उक्त अ.बं.२०८ नं.मा जारी भएको समाह्वान इतलायनामाको म्याद तारेखमा प्रतिवादी नदिई म्याद गुजारी बसेका झगडियाको ऐनबमोजिम एकतर्फी प्रमाण बुझी भएका फैसलाउपर पुनरावेदन लाग्न सक्दैन । समाह्वान इतलायनामा तामेल गर्दा यसै महलको ११० नम्बरबमोजिम रीत नपुर्‍याई तामेल गरेकोले थाहा पाउन नसकी प्रतिवादी दिन नपाई म्याद गुज्रेको भन्ने उजुरीसाथ फैसला भएको छ महिनाभित्रमा थाहा पाएको पैंतिस दिनभित्र झगडियाले प्रतिवादी लेखिदिन ल्यायो भने पहिले मिसिल सामेल रहेको तामेली समाह्वान हेरी रीतपूर्वक तामेल भएको देखिन आएन भने सोही बेहोराको पर्चा लेखी प्रतिवादी दर्ता गरी ऐनबमोजिम बुझ्नु पर्ने प्रमाण बुझी मुद्दा फैसला गर्नुपर्छ । रीत पुगी तामेल भएको

देखिएमा सोही बेहोरा खोली उजुर लाग्न सक्ने भनी दरपिठ गरी फिर्ता दिनुपर्छ भन्ने कानूनी व्यवस्थासमेत भएको देखिन्छ। बेरितसँग म्याद तामेल भएकोले थाहा पाउन नसकी प्रतिवाद गर्न नपाएको भन्ने कुरामा फैसला भएको ६ महिनाभित्रमा थाहा पाएको पैंतिस दिनभित्र उजुर गर्नसक्ने उल्लिखित कानूनी उपचारको मार्ग निवेदकले अवलम्बन गरेको नदेखिने।

निवेदकले ललितपुर उपम.न.पा. वडा नं. १३ मा भएको आफ्नु वतन नै आफ्नु वतन नभएको भन्ने झुट्टा बेहोरा उल्लेख गरेको, आफूउपर बैंकिङ कसुरको अभियोग लाग्नुपूर्व नै एकाघरकी श्रीमती बैंकिङ कसुरमा पक्राउ परी अनुसन्धान भएको तथ्यलाई लुकाई आफूउपर भएको बैंकिङ कसुरको अनुसन्धान र मुद्दाको कारबाही छली कानूनबमोजिम तामेल भएको म्यादभित्र प्रतिवाद नगरी लामो समयसम्म फरार रही आफूउपर चलेको मुद्दाबाट ठहर भएको सजाय असुलउपरका क्रममा पक्राउ परेपछि मात्र प्रस्तुत रिट निवेदन दायर गरेको देखिने।

प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तअन्तर्गत सामान्यतः कसैलाई पनि सफाइको मौका नदिई सजाय नगरिने, पक्राउ भएको कारणसहितको सूचना नदिई थुनामा नराखिने, पक्राउ भएको व्यक्तिले कानून व्यवसायीसँग सल्लाह लिन पाउने, मुद्दा हेर्ने अधिकारीसमक्ष उपस्थित हुन पाउने र निजको आदेशबेगर थुनामा राख्न नपाइने, एउटै कसुरमा एकपटक भन्दा बढी सजाय नगरिने, आफू विरुद्धको कारबाहीको जानकारी पाउने, स्वतन्त्र, निष्पक्ष र सक्षम न्यायिक निकायबाट स्वच्छ सुनुवाइ पाउने हक जस्ता व्यक्तिका नैसर्गिक अधिकारहरू अन्तरनिहित रहने र यी मान्यतालाई नेपालको संविधानसमेतले आत्मसात गरेको छ। मानव अधिकार र प्राकृतिक न्यायको सर्वमान्य सिद्धान्तअनुसार कुनै पनि व्यक्तिले आफूलाई लागेको आरोपको खण्डन वा सफाइ दिन नपाउने भन्न मिल्दैन। प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तले

अङ्गीकार गरेका विषयहरूलाई नेपालको संविधानले मौलिक हककै रूपमा स्वीकार गरेको देखिने।

सुनुवाइको अवसर प्रदान गर्ने उद्देश्यले पुनरावेदन अदालत नियमावली, २०४८ को नियम १०१ (ग) को खण्ड (ख) र बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा २३ को व्यवस्थाअन्तर्गत पुनरावेदन अदालत पाटनका रजिस्ट्रारबाट मिति २०७०।११।१४ मा आदेश भई यी निवेदकका नाउँमा ३० दिने म्याद सूचना जारी भई मिति २०७०।११।१५ र २०७०।११।१६ मा राष्ट्रिय दैनिक गोरखापत्रमा सार्वजनिकरूपमा सूचनासमेत प्रकाशित भएको देखिन आयो। यी निवेदक नाम चलेको किष्ट बैंकको सञ्चालक तथा प्रमुख कार्यकारी अधिकृतको हैसियतका व्यक्ति रहेकोले राष्ट्रिय स्तरको गोरखापत्र दैनिकमा प्रकाशित उल्लिखित म्याद / सूचनाबाट अनभिज्ञ रही थाहा नपाएको भन्ने अनुमान गर्न मिल्ने अवस्था छैन। यसबाट यी निवेदकलाई मुद्दामा हाजिर भई प्रतिवाद गर्न पटकपटक मौका दिएको देखिएकोले सुनुवाइको मौका नपाएको / नदिएको भन्ने निजको भनाइ विश्वसनीय मान्न सकिएन। निवेदकउपर दायर भएको मुद्दामा निवेदकलाई कानूनले तोकेको प्रक्रियाअन्तर्गत म्याद / सूचना जारी भएकोमा म्यादभित्र प्रतिवाद नगरी दाबी स्वीकार गरी बसेको र फैसलाबाट लागेको सजाय असुलउपर गर्ने क्रममा पक्राउ परेपश्चात् बाबुको नाउँ लेखाईमा परेको अति सामान्य फरकलाई (चुरामणि हुनुपर्ने चुडामणि भएको) समेत आधार बनाई बेहोरा ढाँटी दायर भएको प्रस्तुत रिट निवेदनबाट निवेदकले प्रतिवाद गर्ने अवसर नपाएको, निवेदकउपर भएको कारबाहीबाट निवेदकको संवैधानिक एवम् मौलिक हकमा आघात परेको र प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तविपरीत रहेको भन्ने निवेदन जिकिर मनासिब देखिन नआउने।

तसर्थ, विवेचित आधार र कारणबाट यी निवेदकले सुनुवाइको मौका नपाएको भन्ने नदेखिएकोले



निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिन आएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : कुमार मास्के

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७५ साल चैत १० गते रोज १ शुभम् ।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७५-WO-०६२९, उत्प्रेषण / परमादेश, कमलप्रसाद झवाली वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत
- ०७५-WO-०६२८, उत्प्रेषण / परमादेश, कमलप्रसाद झवाली वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत
- ०७५-WO-०६२७, उत्प्रेषण / परमादेश, कमलप्रसाद झवाली वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत
- ०७५-WO-००८९, उत्प्रेषण / परमादेश, कमलप्रसाद झवाली वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत

७

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७२-CR-०४७८, डाँका चोरी ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. रघुनाथ लोनियासमेत**

मौकामा दिएको जाहेरीमा प्रतिवादीहरूको हुलिया खुलाएको देखिएको अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई पक्राउ गरेपछि गराएको सनाखतलाई विश्वसनीय भन्न मिल्ने देखिँदैन । जाहेरी र तत्पश्चात् गराइएको साबितीकै आधारमा यी प्रतिवादीहरूले नै जाहेरवालाहरूको घरमा डाँका चोरीको वारदात गरेको भन्न सकिने अवस्था देखिएन । प्रतिवादीहरूउपर चोरीको ६ नं. को र प्रतिवादी रघुनाथ लोनियाउपर थप ज्यानसम्बन्धीको १५ नं. को कसुरमा सजायको

दाबी लिएको देखिन्छ । चोरीको महलको ६ नं. मा चारजनाभन्दा बढ्ताको जमात भई जबरजस्ती चोरी वा रहजनीमा लेखिएका रीतसँग वा हातहतियार लिई उठाई छाडी वा हुल हुज्जत गरी चोरी गरेको डाँका गरेको ठहर्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ । प्रस्तुत वारदातमा चोरीको ६ नं. ले परिभाषित गरेअनुसार डाँका वारदात भएको भनी सोच विचार (After thought) गरी यी प्रतिवादीहरूको नाम उल्लेख गरी जाहेरी दरखास्त दिए पनि प्रतिवादीहरूबाट डाँका भएको धनमाल बरामद भएको देखिँदैन । सुरुमा डाँका गर्ने व्यक्तिहरूको नाम उल्लेख गर्न नसकी पछि दिएको शङ्कास्पद जाहेरी दरखास्तका आधारमा प्रतिवादीहरूबाट अनुसन्धानको क्रममा गराइएको साबिती अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट पुष्टि भएको देखिन आएन । प्रतिवादीहरू जाहेरी दरखास्तमा उल्लेख भएको डाँका वारदातमा संलग्न रहेको देखिने वस्तुगत प्रमाणको अभावमा निजहरूलाई कसुरदार ठहर गर्न न्यायसङ्गत देखिन नआउने ।

प्रस्तुत वारदातमा जाहेरवाला लोहारी थारूको छोरा विजय कुमारलाई डाँकाले फलामको रड र चक्कुसमेतले प्रहार गरी ज्यान मार्ने उद्योग गरेको र सो कसुर गर्ने प्रतिवादी रघुनाथ लोनिया हुन भन्ने अभियोग दाबी लिएको देखिन्छ । प्रतिवादी रघुनाथ लोनिया प्रस्तुत वारदातमा संलग्न नरहेकोले निजउपर समेत लिएको डाँका चोरीतर्फको अभियोग नठहर्ने ठहर्‍याएको सुरुको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला सदर भएकोले एउटै वारदातमा ज्यान मार्ने उद्योगमा निजउपर लिएको दाबीसमेत पुग्ने नदेखिने ।

तसर्थ वादी पक्षले स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट अभियोग दाबीको कसुर प्रमाणित गर्न सकेको नदेखिँदा प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने ठहर्‍याएको बाँके जिल्ला अदालतको फैसला सदर

गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जको मिति २०७०।८।२३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।  
इजलास अधिकृत: महेन्द्रराज काफ्ले  
कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा  
इति संवत् २०७६ साल असार १५ गते रोज १ शुभम् ।

८

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या. श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७५-WH-०२१८, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, अर्जुन खड्का वि. गृह मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत**

निवेदकको निवेदन जिकिर तथा विपक्षीहरूको लिखित जवाफबाट खिमबहादुर खड्कालाई कुनै राजनीतिक दल विशेषमा आबद्ध भएको कारण विपक्षीहरूद्वारा बदनियत र प्रवृत्त धारणा राखी कहिले अभद्र व्यवहारमा र कहिले नैतिकता विरुद्धको कसुर भन्दै थुनामा राख्ने गरिएको देखिएबाट निवेदकलाई विपक्षीहरूका आदेश र कार्यले राखिएको थुना गैरकानूनी होइन भन्ने अवस्था नदेखिने ।

कुनै पनि व्यक्तिउपर फौजदारी कसुरमा मुद्दा चलाउन वस्तुनिष्ठ आधार हुनुपर्छ, कुनै पार्टी वा समूहको विचारसँग आबद्ध रहेको भन्ने कथित आधारमा निवेदकलाई थुनामा नै राख्ने उद्देश्यबाट अपत्यारिलो अभियोग लगाई थुनामा राख्नु गैरकानूनी हुन जान्छ । बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिटमा थुनाको वैधताको परीक्षण गर्दा थुनामा राख्नुपर्नेसम्मको अवस्था छ, छैन ? कानूनको प्रक्रिया पूरा गरिएको छ, छैन भनी हेरिनु पर्ने हुन्छ । अनुसन्धान गर्ने र मुद्दा हेर्ने अधिकारीले थुनामा नै राख्ने पूर्वाग्रह राखी म्याद थप गरिएको कार्यलाई वैध मान्न सकिँदैन, त्यस्तो कार्यले अधिकारको दुरुपयोग गरी व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रता अपहरण हुने हुँदा निवेदकको संविधानप्रदत्त मौलिक हकको रक्षा गर्नु यस अदालतको कर्तव्यसमेत हुन आउने ।

वस्तुतः निवेदक खिमबहादुर खड्काको हकमा दायर भएको ०७५-WH-०१७३ को रिट

निवेदनमा निवेदकलाई २०७५।१२।१५ देखि लगातार थुनामा राखेको उल्लेख गरी २०७६।२।५ मा यस अदालतबाट निजलाई थुना मुक्त गर्नु भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश भएको देखियो । उल्लिखित बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेशानुसार बन्दी खिमबहादुर खड्कालाई थुनामुक्त नगरेको भनी निजका हकमा पुनः रिट नं.०७५-WH-०१९३ को बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट दायर भई यस अदालतबाट मिति २०७६।२।२९ मा अर्घाखाँची जिल्ला अदालतका स्रेस्तेदारको रोहबरमा निवेदक बन्दीलाई थुनामुक्त गरिदिन बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी भएकोमा निवेदकलाई अर्घाखाँची जिल्ला अदालतमा उपस्थित नै नगराई पुनः प्युठान जिल्ला प्रशासन कार्यालयबाट मुलुकी फौजदारी संहिता, २०७४ को दफा ११८ (१) अन्तर्गत सार्वजनिक हित, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सुविधा र नैतिकता विपरीत कसुर अपराध गरेको भन्ने उल्लेख गरी २०७६।२।३० देखि लागू हुने गरी पटकपटक म्याद थप गरी निवेदकलाई थुनामा नै राखिएको देखिने ।

निवेदकलाई सार्वजनिक हित, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सुविधा र नैतिकताविपरीत कसुर गरेको भनी थुनामा राखेकोमा सोको विरुद्ध परेको उल्लिखित ०७५-WH-०१९३ को रिट निवेदनमा यस्तै प्रकृतिका कुनै पनि मुद्दाहरूमा पुनः गिरफ्तार गर्ने कार्य नगर्नु नगराउनु भनी विपक्षीहरूको नाउँमा निर्देशनात्मक आदेशसमेत जारी भइरहेकोमा यस अदालतबाट जारी भएको उक्त बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश कार्यान्वयन गरेको देखिएन । विपक्षीहरूको लिखित जवाफबाट निवेदकलाई पुनः अर्को जिल्लामा स्थानान्तरण गरी उल्लिखित सार्वजनिक हित, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सुविधा र नैतिकताविपरीत कसुर गरेको भनी सोही कसुरलाई दोहोर्चाई प्रतिवेदन तयार गरी बदनियतसाथ प्रवृत्त भावना राखी निवेदकलाई निरन्तर थुनामा राख्ने कार्य गैरकानूनी देखिने ।

तसर्थ: विवेचित आधार र कारणबाट निवेदकको थुना गैरकानूनी देखिएकोले निजलाई थुनाबाट मुक्त गर्नु भनी विपक्षीहरूका नाउँमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने। माथि उल्लेख भएबमोजिम अदालतको आदेश पालना गरेको नदेखिँदा त्यसतर्फ विपक्षीहरूको गम्भीर ध्यानाकर्षण गराइने।  
इजलास अधिकृत: महेन्द्रराज काफ्ले  
कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा  
इति संवत् २०७६ साल असार १५ गते रोज १ शुभम्।

९

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७२-CR-११३४, कित्ते जालसाजी, कलमवती देवी वि. बेचु मण्डलसमेत**

वादी कलमवती देवीको नाउँमा दर्ता रहेको कि.नं. २३५ को जग्गा साबिक जग्गाधनी महेशबहादुर मल्लबाट र.नं. १०७८८ मिति २०६७।१०।९ मा राजीनामाको लिखत पारित गरी वादी कलमवती देवीले लिएको देखिने। उक्त जग्गा खरिद गर्दा फिल्डबुक र जग्गाधनी प्रमाण पुर्जाको मोही महलमा कसैको नाम नरहेको भनी वादीले दाबी लिएकोमा सो जग्गा सभै नापी भएको बखत घरबाहिर रहेकोले मेरो हजुरबुबाले मोहीको महलमा नाम लेखाउन नसकेको मात्र हो। १ नं. लगत भरी २ नं. अनुसूची प्रकाशित हुँदा मेरो हजुरबुबाको नाम कायम रहेकोले ४ नं. जोताहाको अस्थायी निस्सा प्रदान भइसकेको छ भनी विपक्षी बेचु मण्डलले लिएको जिकिरलाई वादीले अन्यथा हो भनी प्रमाणित गर्न सकेको नदेखिने।

वादी कलमवती देवीले मिति २०६८।६।२५ को सर्जमिन मुचुल्का बदर गर्न W०-३४४ को रिट निवेदन दिएकोमा सो निवेदन खारेज भइसकेपछि मात्र यो कित्ते जालसाज मुद्दा दायर भएको र प्रतिवादीमध्येका बेचु मण्डलले १ नं. लगत, २ नं. अनुसूचीसमेत राखी गा.वि.स.को कार्यालय, सिस्वा

वेल्हीमा दिएको निवेदनको आधारमा उक्त कार्यालयबाट मिति २०६८।६।२५ मा विवादित कि.नं. २३५ को जग्गामा गई मुचुल्का गरेको र सोही मुचुल्काका आधारमा गा.वि.स.ले सिफारिस गरेको देखिएको छ। दाबी प्रमाणित गर्नुपर्ने दायित्व दाबी लिने वादीले पूरा गर्नुपर्ने हुन्छ। प्रतिवादी बेचु मण्डलले दिएको निवेदनका आधारमा स्थलगत सर्जमिन हुँदा सर्जमिन गर्ने व्यक्तिहरूले आफूले देखेजानेको कुरा उल्लेख गरी लेखाएको बेहोरा र सोही बेहोराको आधारमा सिफारिस गरेको देखिन्छ। कित्ते जालसाजीको कसुर कायम हुनको लागि नगरे नभएको झुट्टा कुरा गरे भएको हो भनी कागज बनाए वा बनाउन लगाई त्यस्तो झुट्टा कागजबाट कसैको हक मेट्ने वा नोक्सान हुने अवस्था देखिनु पर्ने हुन्छ। प्रतिवादी बेचु मण्डलको हजुरबुबा मुनि खंगले मोहीमा भरेको १,२ नं. लगत तथा प्राप्त गरेको जोताहा अस्थाई निस्सासमेतको प्रमाणहरूको आधारमा साबिकदेखि बसोबास गरेको जग्गाको मोही हकमा कारबाही चलाउने प्रयोजनको लागि दिएको निवेदनको सन्दर्भमा भएको स्थलगत सर्जमिन एवम् सोको आधारमा भएको सिफारिस प्रक्रियागत विषय भएको र सोही आधारमा मात्र वादीको हक समाप्त हुने अवस्था नहुने हुँदा पुनरावेदन अदालत राजविराजले फिरोद दाबी नपुग्ने ठहर्‍याएको फैसला अन्यथा नदेखिएकोले यी पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, उल्लिखित आधार र कारणबाट समेत पुनरावेदन अदालत राजविराजबाट वादीको फिरोद दाबी नपुग्ने गरी भएको मिति २०७१।१२।२३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : माधव भण्डारी

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७६ साल असार १ गते रोज १ शुभम्।

इजलास नं. ५

१

मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७४-RC-००४७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. मिमकोसा विष्ट

प्रतिवादीको मौकाको बयान तथा अदालतमा भएको बयान, घटना विवरण कागज गर्ने मानिसहरूले अदालतसमक्ष गरिदिएको बकपत्र, मौकाको बरामदी मुचुल्का बेहोरा तथा मृतकको पोष्टमार्टम रिपोर्टमा उल्लेख भएको बेहोरासमेतबाट प्रतिवादी मिमकोसा विष्टले प्रहार गरेको चक्कुको चोटबाट मृतकको मृत्यु भएको तथ्य शङ्कारहित तवरले पुष्टि भएकोले सुरु अदालतबाट निज प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीअनुसार मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. अनुसार कसुर अपराध गरेको ठहर गरी सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्ने गरी भएको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत सुर्खेत जुम्ला इजलासको मिति २०७४।४।२४ को फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

निज प्रतिवादी मिमकोसा विष्टलाई सुरु जिल्ला अदालतबाट सर्वस्वसहित जन्मकैद सजाय हुने ठहर्‍याई मुलुकी ऐन, अ.बं.१८८ नं.अनुसार ५ वर्ष कैद गर्ने गरी राय व्यक्त भएतर्फ विचार गर्दा मृतक पतिले प्रतिवादीबाट पहिलो पटक जन्मिएकी जेठी छोरी अर्काको हो भन्ने आरोप बारम्बार लगाउँदै आएको र वारदातको दिनसमेत प्रतिवादीलाई कुटपिट गर्दै कोठाभित्र लगेपछिको अवस्थामा सोही कोठामा रहे भएको चक्कु उठाई प्रहार गर्दा मृतकको घाँटीमा चोट लाग्न गएको भन्ने मौकाको बयानमा उल्लेख भएको देखिन्छ। अदालतसमक्ष निज प्रतिवादीले बयान गर्दा लोग्नेलाई तर्साउनसम्मका लागि चक्कु समाई घाँटीनजिक पुर्‍याएको अवस्थामा झुक्किएर चोट लाग्न

गएको हो, निजलाई मार्ने मनसाय थिएन, कम सजाय होस् भनी आफ्नो बयानमा लेखाएको र वारदातको समयमा मृतकले गरेको कुटपिटको कारणले उठेको रिस तत्काल थाम्न नसकी सोही ठाउँमा भएको चक्कु उठाई प्रहार गरेको भन्ने देखिन आएको छ। निजले न्यायिक प्रक्रियामा सहयोग गरेकोसमेत देखिन्छ। ज्यान मार्ने मनसाय राखेर पहिलेदेखि योजना, षड्यन्त्र, तयारी आदि कुनै कुरा गरेको भन्ने देखिँदैन। मृतक स्वयम्ले गरेको दुर्व्यवहारको कारणबाट जोखिमी हतियार प्रहार गर्न पुगेको र परिणामतः ज्यान मर्न गएको देखिएको छ। यस अवस्थाको वारदातको कुरामा ऐनबमोजिम ठहर भएको सजाय गर्दा केही चर्को पर्ने देखिन आउने।

तसर्थ विवेचित आधार कारण र प्रमाणबाट प्रतिवादी मिमकोसा विष्टलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. को कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्छ। निज प्रतिवादी मिमकोसा विष्टलाई १२(बाह्र) वर्ष कैद गर्दा न्यायको मकसद पूरा हुने देखिँदा मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम निजलाई १२(बाह्र) वर्ष मात्र कैद हुने।

इजलास अधिकृत: तारादेवी महर्जन

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७४ साल फागुन ३ गते रोज ५ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०६९-CR-०४१५, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, नेपाल सरकार वि. बाबुकृष्ण रिमाल

प्रतिवादी बाबुकृष्ण रिमालको पूर्ण सहयोग समर्थन रहेको र बेच्ने मनसायबाट ललाई फकाई प्रलोभनमा पारी विदेश भारत पठाइएको कुरामा विवाद देखिँदैन। तर प्रतिवादीले भारतमा लगी बेचेको भन्ने देखिँदैन। मानव बेचबिखनको कसुर स्थापित हुनका लागि प्रतिवादीबाट पीडित बेचिएको

कुरा मिसिल कागजातबाट पुष्टि हुनुपर्दछ । तर निजले भारत लगी बेचेको देखिँदैन । पीडितहरूलाई बेची प्राप्त रकम यी प्रतिवादीले पाएको भन्ने पनि मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट समर्थित भएको अवस्था छैन । पीडितहरूको जाहेरी र बयानबाट पनि प्रतिवादीले भारतमा लगेको र बिक्री गरेको भन्ने देखिएको छैन । प्रतिवादीले फाइदा लिन प्रलोभनमा पारेको कारणबाट पीडितहरू भारतमा बेचिन पुगेको तथ्य मिसिलबाट देखिए पनि प्रतिवादीले भारतमा लगी बेचेको नदेखिएको र बेचेको पैसा लिएको भन्ने कुरा पनि मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट विवादास्पद तवरले पुष्टि प्रमाणित हुन सकेको पाइँदैन । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार यिनै प्रतिवादीले बेचेको भन्ने पुष्टि हुन आएको देखिँदैन तर प्रतिवादीले पीडितलाई दूषित मनसाय उद्देश्यबाट अभिप्रेरित भई ललाइफकाई अन्य प्रतिवादीहरूसँग साथ लगाई विदेशतर्फ पठाउने कार्यमा सहयोग गरेको देखिन्छ । निजले पीडितलाई विदेश पठाउने कार्यमा पूर्णरूपले सहयोगीको भूमिका निर्वाह गरेको देखिन्छ तर बेच्ने नै कार्य गरेको प्रमाणित हुन आएको नदेखिँदा अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्दछ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ उल्लिखित आधार कारणहरूबाट निज प्रतिवादी बाबुकृष्ण रिमालले अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको नभई सो बेचबिखनको लागि मौका मिलाई दिएकोसम्म मिसिलबाट देखिएको अवस्थामा निजलाई मतियार मानी मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १५ (ज) को व्यवस्थाअनुसार दफा ३ को कसुरमा दफा १५ (१) (क) बमोजिम बीस वर्ष कैद र दुई लाख जरिवानाको आधा १० वर्ष कैद र १ लाख जरिवाना गर्ने तथा ऐ. को दफा १७ बमोजिम कसुरदारलाई भएको जरिवाना रु.१ लाखको ५० प्रतिशतले हुने रु. ५०,०००।- (पचास हजार) क्षतिपूर्ति पीडितले

प्रतिवादीबाट भराई लिन पाउने गरी भएको सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०६६।६।२१ को फैसला सदर गरी भएको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६८।१२।२० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: जगदीशप्रसाद भट्ट

कम्प्युटर: चन्द्रावती तिमल्सेना

इति संवत् २०७४ साल माघ २२ गते रोज २ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-CR-१९३४, ठगी, नेपाल सरकार वि. अस्मिता खड्कासमेत**

प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीले जाहेरवालीको रु.९०,००,०००।- ठगी गरेको भनी जाहेरी परेको अवस्था छ तापनि जाहेरवालीसँगको रु.९०,००,०००।- को कागज पेस गर्न सकेको अवस्था छैन । त्यस्तै अर्काको हकको चल अचल धनमाल निजलाई झुक्याई धोका दिई गफलतमा पारी लिए दिए ठगी हुने हो । तर जाहेरवालीसँग प्रतिवादीले त्यसरी धनमाल लिए दिएको धोका दिई गफलतमा पारेको भन्ने कुरा पनि कहींकतैबाट देखिँदैन । साथै जाहेरवालालाई झुक्याई प्रतिवादीले फाइदा लिएको हो कि भन्ने कुरा पनि मिसिल प्रमाणबाट देखिएको स्थिति छैन । यसप्रकार ठगीको १ र २ नं. अनुसारको कसुर यी प्रतिवादीहरूले गरेको भन्ने कुरा कतैबाट पुष्टि हुन सकेको अवस्था नदेखिने ।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार अभियोग पुष्टि गर्ने दायित्व वादी पक्षकै हो । तर जाहेरी दरखास्तका साथ जाहेरवाली ठगिएको भन्ने कुनै पनि प्रमाण पेस भएको अवस्था छैन । यसरी कुनै पनि प्रमाण पेस गर्न नसकी जाहेरवाली आफैँले आफू ठगिएको भन्ने भनाइलाई मात्र आधार मानी प्रतिवादीलाई ठगीमा सजाय गर्नु विल्कुलै न्यायसङ्गत हुने नदेखिने ।

प्रतिवादी अस्मिता खड्काले अनुसन्धान

अधिकृतसमक्ष बयान गर्दा आरोपित कसुरमा साबिती भई बयान गरेकी छिन् । तर अदालतमा आई बयान गर्दा मैले जाहेरवालीलाई मिति २०७१।७।२ गते चेक दिएकै छैन । तारा शाक्यसँग मेरो कुनै लेनदेन कारोबार भएको नै छैन । मिति २०७१।७।२ को चेक मैले मेरै नाममा काटेको हो । अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष भएको बयान मलाई पढ्न नदिइकन सही गराएका हुन् । उक्त बयानको बेहोरा सम्पूर्ण झुठ्ठा हो । मैले तारा शाक्यलाई कुनै रूपैयाँ दिनुपर्ने छैन भनी आफूउपरको कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ । मिति २०७१।७।२ को चेक हेर्दा उक्त चेक जाहेरवालीको नामको नभई प्रतिवादीकै नामको देखिन्छ । प्रतिवादीले आफ्नै नाममा काटेको चेक जाहेरवालीलाई दिई ठगी गरेको भन्ने कुरा पत्यारलायक देखिँदैन । यसप्रकार प्रतिवादीको अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष भएको बयान प्रतिवादी नै अदालतसमक्ष भएको बयानबाट खण्डित भएको र उक्त अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष भएको बयान अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा सोही भनाइलाई मात्र आधार मानी प्रतिवादीहरूलाई कसुरदार ठहर गर्न न्यायोचित हुँदैन । यस्तो अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत बाग्लुङको फैसला अन्यथा नदेखिने ।

यसप्रकार जाहेरवालीबाट प्रतिवादी अस्मिताले रु.१०,००,०००।- लिएको भन्ने कुनै प्रमाण जाहेरी दरखास्तका साथ जाहेरवालीले पेस गर्न नसकेको, कुमारी बैंकबाट पैसा नभएको कारण फिर्ता भएको चेक जाहेरवालाको नामको नभई प्रतिवादीको आफ्नै नामको भएको र जाहेरवालीको जाहेरी र निजको अदालतमा भएको बकपत्रमा एकरूपता नभएको अवस्थामा प्रतिवादीलाई ठगीको कसुर कायम गरी सजाय गर्न मिलेन । प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुनुपर्दछ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन

नसकिने ।

तसर्थ, सुरु जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादी अस्मिता खड्का र टीकाबहादुर खड्कालाई कसुरदार कायम गरी ठगी गरेको ठहर्‍याएको सुरु बागलुङ जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत बागलुङको मिति २०७२।१०।२० को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- तारादेवी महर्जन

फैसला तयार गर्ने इजलास अधिकृत: भोजराज रेग्मी  
कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल माघ ३ गते रोज ४ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७१-WO-०५७१, उत्प्रेषण / परमादेश, रामवृक्ष महतोसमेत वि. सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत

निजामती सेवा ऐन, २०४९ को दफा १८ को उपदफा (१) को व्यवस्थातर्फ हेर्नुपर्ने अवस्था देखियो । उक्त दफामा “निजामती कर्मचारीलाई देशको विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रको अनुभवसमेत दिलाउनका लागि उपदफा (३) बमोजिम सरुवा गरिनेछ र त्यस्तो सरुवा गर्ने अधिकार अख्तियारवालालाई हुनेछ” भन्ने व्यवस्था रहेको पाइन्छ । उक्त उपदफा (३) मा “विशेषज्ञताको सेवा लिनुपर्ने पदमा रहेको र स्थानीयस्तरमा अन्यत्र कतै पनि निजको सेवा, समूह वा उपसमूहसम्बन्धी पद तथा कार्यालय, नभएको निजामती कर्मचारी र विशिष्ट श्रेणी तथा राजपत्राङ्कित प्रथम श्रेणीको कर्मचारीबाहेक अन्य निजामती कर्मचारीको सरुवा गर्दा सम्बन्धित अख्तियारवालाले सामान्यतया वर्षमा एकपटक तोकिएबमोजिमको समय तालिकाअनुसार देहायबमोजिम सरुवा पत्रमा अवधि तोकिएको सरुवा गर्नुपर्नेछ:-

(क) “क” वा “ख” वर्गको भौगोलिक क्षेत्रको कार्यालयमा

कम्तीमा डेढ वर्षको अवधि काम गरिसकेको कर्मचारीलाई “घ” वा “ग” वर्गको भौगोलिक क्षेत्रको कार्यालयमा कम्तीमा दुई वर्षको लागि ।

(ख) “ग” वा “घ” वर्गको भौगोलिक क्षेत्रको कार्यालयमा कम्तीमा दुई वर्षको अवधि काम गरिसकेको कर्मचारीलाई “ख” वा “क” वर्गको भौगोलिक क्षेत्रको कार्यालयमा कम्तीमा दुई वर्षको लागि” भन्ने व्यवस्था रहे तापनि ऐ. को उपदफा (४) मा “उपदफा (३) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि देहायको अवस्थामा निजामती कर्मचारीलाई निजको सरुवा पत्रमा तोकिएको अवधि नपुग्दै सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको सहमति लिई सरुवा गर्न सकिनेछ” भनी व्यवस्था गरी विशेष अवस्थामा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको सहमतिमा अवधि नपुग्दै सरुवा गर्न सकिने देखिने ।

निजामती सेवा ऐन तथा नियमावलीमा उल्लिखित प्रावधानका आधारमा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले एउटै मन्त्रालयअन्तर्गत लामो समय कार्यरत कर्मचारीहरूलाई मापदण्ड बनाई मिति २०७१।४।३० को निर्णयानुसार सरुवा गरेको देखिन्छ । सरुवा एउटा प्रशासनिक प्रक्रियासम्म हो । यदि कानून ऐन प्रतिकूल नहुने गरी सरुवा भएको छ भने त्यसलाई अन्यथा भन्न मिल्दैन र सो कार्यबाट निवेदकहरूको हक अधिकारमा आघात पुगेकोसमेत नदेखिँदा निवेदकहरूको मागदाबी मनासिब देखिन आएन । साथै निवेदकहरूबाट निजामती सेवा नियमावली, २०५० को नियम ३६(१४क) मा भएको व्यवस्थाबमोजिम सरुवाको निर्णय भएको मितिले पन्ध्र दिनभित्र सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले गरेको सरुवा विरुद्ध प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयमा उजुरी दिन सकिनेमा सो उजुरी दिएकोसमेत नदेखिँदा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको मिति २०७१।४।३० को निर्णय कानूनसम्मत नै भई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

अतः विवेचित आधार र कारणबाट पदस्थापन र सरुवा भए गरिएको मितिबाट दुई वर्ष (एक अवधि) पूरा नहुँदै अन्यत्र मन्त्रालय नै परिवर्तन हुने गरी सरुवा गर्न नमिल्नेमा निजामति सेवा नियमावली, २०५० बमोजिम सरुवा गर्ने कार्यविधिसमेत नअपनाई गरिएको सरुवा कानूनी त्रुटिपूर्ण हुँदा उक्त निर्णय, पत्र र अन्य पत्राचारहरूसमेत उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिपाउँ भन्ने रिट निवेदकहरूको निवेदन जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन । प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः तारादेवी महर्जन

कम्प्युटरः चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७४ साल पुस ४ गते रोज ३ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७१-८१-०७०४, उत्प्रेषण / परमादेश, मधुसुदन दिक्षित वि. थान्सिङ्ग गाउँ विकास समितिको कार्यालय, थान्सिङ्ग नुवाकोटसमेत

निवेदकले प्रस्तुत मुद्दामा उठाएको सम्बन्ध विच्छेदसम्बन्धीकै विवाद रहेको मुद्दा गा.वि.स.मा प्रक्रियारत रहेको र जिल्ला अदालतमा सिफारिससाथ पठाउने समय नै बाँकी रहेको अवस्थामा गाउँ विकास समितिले जो जससँग सम्बन्ध राख्दछ भनी विपक्षी कार्यालयले गरिदिएको सिफारिसपत्रले मात्र यी पुनरावेदकको के कस्तो हक अधिकारमा आघात पुगेको हो भन्ने कुरा निवेदनमा प्रस्ट रूपमा खुलाउन नसकेको अवस्थामा निवेदक मागबमोजिमको आदेश जारी हुन नसक्ने भनी रिट निवेदन खारेज हुने गरी भएको पुनरावेदन अदालत पाटनको आदेश अन्यथा नदेखिने ।

लोग्ने स्वास्नीको महलको १क नं. ले तोकेको अवधि १ वर्ष व्यतित हुन समय बाँकी नै रहेको अवस्थामा गा.वि.स.को आफ्नो रायसहितको प्रतिवेदन जिल्ला अदालतमा पठाउन बाँकी नै रहेको, वडा कार्यालयको मुचुल्काको बेहोरा खुलाई जो जससँग

सम्बन्ध राख्दछ भनी जारी गरेको पत्रबाट निवेदकको कुन कानूनप्रदत्त हक हनन् हुन गएको भन्ने नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिमको उत्प्रेषण परमादेशको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने ।

अतः उल्लिखित आधार कारणसमेतबाट रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७१।०३।०४ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: जगदिशप्रसाद भट्ट

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर २९ गते रोज ६ शुभम् ।

इजलास नं. ६

१

मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७१-CR-०४०१, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. विष्णुबहादुर ठडराई

प्रतिवादीले अदालतमा उपस्थित भई बयान गर्दा आफूले पीडितलाई करणी गरेको होइन, रिसइवीको कारण मलाई पोल गरेका हुन् भनी कसुरमा पूर्णरूपले इन्कार रही बयान गरेको, जाहेरवाला र पीडितसमेतले अदालतमा उपस्थित भई प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १८ बमोजिम मौकामा आफूले व्यक्त गरेको कुरालाई समर्थन हुने गरी अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गर्न सकेको नदेखिएको, जाहेरवाला र पीडितले अदालतमा उपस्थित भई यी प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको होइन, रिसइवीको कारण पोल गरेको हो भनी आफ्नो मौकाको भनाइलाई खण्डन हुने गरी र प्रतिवादीको अदालतको इन्कारी बयानलाई समर्थन हुने गरी बकपत्र गरेको, बेगबहादुर थापा, किमी ठाडा र कुलबहादुर ठडराईसमेतका प्रहरीमा मौकामा कागज गर्ने व्यक्तिहरूमध्ये एक जना व्यक्ति पनि अदालतमा उपस्थित भई यी प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती

करणी गरेकै हुन् भनी बकपत्र गर्न सकेको नदेखिएको, स्वास्थ्य परीक्षण गर्ने डाक्टर संज्ञा पौडेलले अदालतमा उपस्थित भई पीडितको शरीरमा जबरजस्ती करणीको संकेतहरू नदेखिएको र करणीको कारण पीडितको कन्याजाली च्यातिएको हो वा अन्य कारणले च्यातिएको हो भन्न नसक्ने भनी बकपत्र गरेको र प्रतिवादीका साक्षी कुलबहादुर ठडराईले यी प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको होइन, जाहेरवालाहरूसँग प्रतिवादीको झै-झगडा भएको कारण झुठ्ठा उजुरी दिएको हो भनी प्रतिवादीले अदालतमा गरेको इन्कारी बयानलाई समर्थन हुने गरी अदालतमा उपस्थित भई बकपत्रसमेत गरेको देखिँदा मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट यी प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने अभियोगदाबी पुष्टि भएको नदेखिने ।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ ले फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादी पक्षको हुने व्यवस्था गरेको देखिन्छ भने फौजदारी मुद्दामा शङ्काको सुविधासमेत अभियुक्तले नै पाउँछ । कुनै पनि व्यक्तिलाई कसुरदार ठहर गर्न निजले गरेको कसुर शङ्कारहित तवरले पुष्टि भएकै हुनुपर्छ । कसैलाई पनि निजको कसुर शङ्कारहित तवरबाट पुष्टि नभएसम्म कसुरदार ठहर गर्न मिल्दैन । प्रस्तुत मुद्दामा वादी नेपाल सरकारको तर्फबाट प्रतिवादी दीपक भन्ने विष्णुबहादुर ठडराईले पीडित अ कुमारीलाई जबरजस्ती करणी गरेका हुन् भन्ने वादी दाबी तथ्ययुक्त प्रमाण पेस गरी पुष्टि गर्न सकेको नदेखिँदा यी प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः माथि विवेचित आधार कारणहरूबाट प्रतिवादी दीपक भन्ने विष्णुबहादुर ठडराईले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७०।१०।११ मा भएको फैसला



मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : अरुणकुमार कोइराला

कम्प्युटर: हर्कमाया राई

इति संवत् २०७५ साल असार ६ गते रोज ४ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७१-CR-०८१०, गौवध, नेपाल सरकार वि. छेदर भोटेसमेत**

प्रतिवादीहरूले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा बयान गर्दासमेत हामीहरूले जिउँदो गोरुलाई काटेर मारेको होइन । मरेको गोरुलाई काटेर टुक्रा टुक्रा बनाएको हो भनी कसुरमा पूर्णरूपले इन्कार रही बयान गरेको देखिने । प्रतिवादीहरूले गोरुलाई काटेर मारी आरोपित कसुर गरेका हुन् भन्ने अभियोग दाबी भए तापनि वादी नेपाल सरकारतर्फबाट सोलाई पुष्टि गर्ने प्रत्यक्षदर्शी कोही पेस गर्न सकेको देखिँदैन । वादी नेपाल सरकारतर्फका जाहेरवाला कृष्णहरी थापा, मौकाको कागजमा सही गर्ने शेरखर के.सी., सुरेन्द्र थापा, सुरज खड्का र दीपक के.सी.समेतले मौकामा कागज गर्दा तथा अदालतमा बकपत्र गर्दासमेत यी प्रतिवादीहरूले जिउँदो गोरु काटेको हामीहरूले देखेको हो भनी भन्न सकेको देखिँदैन भने प्रतिवादीका साक्षी फुर्पु छिरिङ ल्होमीले उक्त दिन प्रतिवादी छेदर भोटेलाई भेट्न निजका तरकारी बारीमा जाँदा एक जना मान्छे आएर सिनो मरेको छ भनेर भनेका थिए त्यसपछि उक्त घटना भएको थाहा पाएको हुँदा प्रतिवादीले गोरु मारेको होइन निजले आरोपित कसुर नगरेकोले निजलाई सजाय हुनुपर्ने होइन भनी प्रतिवादीहरूको इन्कारी बयानलाई समर्थन हुने गरी बकपत्र गरेको देखिने ।

मिसिल संलग्न शव परीक्षण प्रतिवेदन हेर्दा गोरुको मृत्युको कारण slaughter of Ox भनी उल्लेख भएको देखिए तापनि शव परीक्षण गर्ने डा.मोगलप्रसाद साहले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गर्दा गोरुको नसामा रगत नभएको आधारमा उक्त गोरुको बध

भएको हुनुपर्छ भनी बकपत्र गरेबाट उक्त गोरुको बध भएको हो कि मरेपछि काटेको हो भन्ने सम्बन्धमा अन्य वैज्ञानिक परीक्षण भएको देखिँदैन भने गोरु मर्ने बित्तिकै काटेको अवस्थामा समेत नसामा रगत भेटिँदैन भनी आफ्नै परीक्षण प्रतिवेदनलाई शङ्काको घेरामा राखी बकपत्र गरेबाट समेत उक्त शव परीक्षण प्रतिवेदनको आधारमा मात्र उक्त गोरुको बध भएकै हो भनी भन्न सक्ने अवस्था विद्यमान नदेखिने ।

अतः विवेचित आधार र कारणहरूबाट प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरमा पूर्ण रूपले इन्कार रही अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा समेत बयान गरेका, वादी नेपाल सरकारतर्फबाट यी प्रतिवादीहरूले गोरु काटेर मार्ने कार्य गरेको प्रत्यक्ष देख्ने प्रत्यक्षदर्शी साक्षी कोही पेस गर्न नसकेको, प्रतिवादीका साक्षीले प्रतिवादीहरूले गरेको इन्कारी बयानलाई समर्थन हुने गरी अदालतमा बकपत्र गरेको, शव परीक्षण प्रतिवेदन र शव परीक्षण गर्ने चिकित्सकको बकपत्र तथा घटनास्थलमा गोरुको रगतको टाटा मात्र देखिएको भन्ने घटनास्थल मुचुल्कासमेतबाट यी प्रतिवादीहरूले गोरु काटेर मारी आरोपित कसुर गरेकै हुन् भनी भन्न सक्ने अवस्था विद्यमान नदेखिँदै वादी नेपाल सरकारतर्फबाट यी प्रतिवादीले आरोपित कसुर गरेकै हुन् भनी तथ्ययुक्त प्रमाण पेस गरी पुष्टि गर्न सकेकोसमेत नदेखिँदा प्रतिवादीहरू छेत्र भोटे भन्ने छेदर भोटे र लालबहादुर तामाङले अभियोग मागदाबीबाट सफाई पाउने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत पाटनले गरेको मिति २०७१।०३।३१ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : अरुणकुमार कोइराला

कम्प्युटर : हर्कमाया राई

इति संवत् २०७५ साल आषाढ ६ गते रोज ४ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७१-CR-१५९६, लागु औषध, नेपाल**

सरकार वि. गणेश श्रेष्ठसमेत

प्रतिवादी कृष्ण सुब्बाको घरको कोठामा रहेको काठको दराजबाट लागु औषध कोरेक्स १०० एम.एल.को ९० बोतल, नाइट्रोजन ट्याब्लेट ११५ गोली र स्पास्मोप्रोक्सीभन १५२ क्याप्सुल बरामद भई प्रतिवादीहरू कृष्ण सुब्बा, गणेश श्रेष्ठ र जीवन मगरसमेतलाई सोही कोठाबाट पक्राउ गरेको बरामदी मुचुल्का तथा प्र.ना.नि. डिकराज प्रसाईको प्रतिवेदनबाट देखिए तापनि निजले उक्त बरामद लागु औषध यी प्रतिवादीहरू गणेश श्रेष्ठ तथा जीवन मगरको हो वा उक्त लागु औषध यी प्रतिवादीहरू गणेश श्रेष्ठ र जीवन मगरसमेतले खरिद बिक्री गरी त्यहाँ राखेको हो वा यी प्रतिवादीहरूले उक्त लागु औषध खरिद गर्न त्यहाँ गएका हुन् भनी निजले मौकामा पेश गरेको प्रतिवेदनमा खुलाउन सकेको पाइँदैन भने निजले अदालतमा बकपत्र गर्दा, पछि बुझेअनुसार उक्त लागु औषध आफैँलाई सेवन गर्न ल्याएको र उपचार केन्द्रमा पनि राखेको हो भनी लेखाई दिएको देखिने ।

उक्त बरामद भएको लागु औषध यी प्रतिवादीहरू गणेश श्रेष्ठ तथा जीवन मगरको साँगाथबाट वा निजहरूको घरबाट बरामद भएको नभई अर्का प्रतिवादी कृष्ण सुब्बाको घरको कोठाको दराजबाट बरामद भएको बरामदी मुचुल्काबाट देखिन्छ । यी प्रतिवादीहरूले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष आफूहरू लागु औषध खरिद गर्न अर्का प्रतिवादी कृष्ण सुब्बाको घर गएको हो भनी आरोपित कसुरमा साबित भई बयान गरे तापनि निजहरूले अदालतमा बयान गर्दा आरोपित कसुरमा इन्कार रही प्रतिवादी गणेश श्रेष्ठले आफूले लागु औषध कोरेक्स सेवनसम्म गर्ने गरेको भनी स्वीकार गरी बयान गरेको पाइने । प्रतिवादी कृष्ण सुब्बाले अदालतमा प्रतिवादी गणेश श्रेष्ठले सेवनसम्म गर्ने गरेको भनी गरेको बयान र प्रतिवादी गणेश श्रेष्ठ स्वयम्ले अदालतमा आफूले त्यस्तो लागु औषध सेवनसम्म गर्ने गरेको

भनी गरेको बयानबिच सामञ्जस्यता भएको देखिन आउँछ । प्रहरी प्रतिवेदक डिकराज प्रसाईसमेतले अदालतमा उपस्थित भई प्रतिवादीहरूले लागु औषध सेवन गर्छन् भनी सुनेको हुँ भनी बकपत्र गरेको तथा उक्त लागु औषध बरामद हुँदा यी प्रतिवादीहरूसमेत उक्त कोठामा नै भए तापनि उक्त लागु औषध यी प्रतिवादीहरूसमेतले खरिद तथा ओसारपसार गरी उक्त ठाउँमा राखेको वा सो ठाउँबाट अन्यत्र लगी बिक्री वितरण गर्दै गरेको वा उक्त लागु औषध खरिद गर्न प्रतिवादीहरू अर्को प्रतिवादी कृष्ण सुब्बाको घर गएका हुन् भन्ने कुरा मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेबाट समेत यी प्रतिवादीहरू गणेश श्रेष्ठ र जीवन मगरसमेतले लागु औषध कारोबार खरिद बिक्री ओसारपसारसमेतका कार्य गरेको नदेखिई लागु औषध सेवन गर्नसम्म यी प्रतिवादीहरू अर्का प्रतिवादी कृष्ण सुब्बाको घरमा गएको पुष्टि भई यी प्रतिवादीहरूले लागु औषध सेवनको कसुरसम्म गरेको देखिने ।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ ले फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादी पक्षको हुने व्यवस्था गरेको देखिन्छ भने फौजदारी मुद्दामा शङ्काको सुविधासमेत अभियुक्तले नै पाउँछ । मनोद्विपक पदार्थजस्ता प्रकृतिका लागु औषधहरू बढी मात्रामा बरामद नभएको र अन्यत्र लार्दै गर्दा वा बिक्री वितरण गर्दै गरेको अवस्थामा बरामद भएको एवम् प्रतिवादी पक्राउ परेको अवस्था नभई प्रतिवादी कृष्ण सुब्बाको कोठाबाट कम परिमाणमा बरामद भएको (लागु औषध) मनोद्विपक पदार्थ प्रकृतिको रहनुको साथै प्रतिवादीहरू पनि सेवनकर्तासमेत रहेको स्थितिमा प्रतिवादीहरूलाई त्यस्तो लागु औषध ओसारपसार एवम् बिक्री वितरण गरेको भन्ने कसुरमा बढी सजाय गर्दा अपराधको मात्राअनुसार सजाय गर्नुपर्छ भन्ने फौजदारी न्यायको सिद्धान्तको मक्सदसँग मेल खान जाँदैन । अतः प्रस्तुत मुद्दामा यी प्रतिवादीहरू गणेश श्रेष्ठ र जीवन मगरले लागु औषध खरिद बिक्री तथा

कारोबारसमेत गरी आरोपित कसुर गरेका हुन् भन्ने अभियोग मागदाबी वादी नेपाल सरकारतर्फबाट तथ्ययुक्त प्रमाण पेस गरी पुष्टि गर्न सकेको नदेखिँदा यी प्रतिवादीहरूसमेतलाई लागु औषध कारोबार तथा खरिद बिक्रीसमेत गरेकोमा अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः विवेचित आधार र कारणहरूबाट प्रतिवादी गणेश श्रेष्ठ र जीवन मगरलाई लागु औषध सेवन गरेकोमा लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(ज) बमोजिम जनही २(दुई) महिना कैद र रु.२,०००।- (दुई हजार) जरिवाना हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरले मिति २०७१।१।०।४ मा गरेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: अरुणकुमार कोइराला  
कम्प्युटर: हर्कमाया राई

इति संवत् २०७५ साल असार ६ गते रोज ४ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७२-CR-०५७३, लागु औषध (खैरो हेरोइन), नेपाल सरकार वि. राजकुमार साहसमेत**

प्रतिवादीहरू लावनहाड राई, राजकुमार साह, कृष्ण भट्ट र हरिश विष्टसमेत होटलको एकै कोठामा रहे, बसेको अवस्थामा उक्त कोठाबाट लागु औषध खैरो हिरोइन १६ ग्रामसमेत बरामद भएको देखिए तापनि उक्त लागु औषध अन्य प्रतिवादीहरूबाट बरामद नभई केवल प्रतिवादी लावनहाड राईको झोलाबाट बरामद भएको अवस्था रहेको छ । प्रतिवादी लावनहाड राईबाहेकका अन्य प्रतिवादीहरूले उक्त बरामद लागु औषधको बारेमा आफूहरूलाई केही जानकारी नभएको र आफूहरूले लागु औषधको कारोबार तथा सेवनसमेत नगरेको भनी कसुरमा इन्कार रही मौकामा अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष र साथै अदालतसमेतमा बयान गरेका छन् । उक्त बयानलाई

कसुर ठहर भएका प्रतिवादी लावनहाड राईसमेतले उक्त बरामद भएको लागु औषध आफूलाई सेवन गर्न सुमन गुरुडले किनेर ल्याई दिई निज र आफू भई उक्त लागु औषध सेवनसमेत गरेको तर उक्त लागु औषधका सम्बन्धमा यी तीन जना प्रतिवादीहरूलाई केही थाहा, जानकारीसम्म नभई निजहरूले लागु औषध कारोबार तथा सेवनसमेत नगरेको भनी प्रतिवादीहरूले गरेको इन्कारी बयानलाई समर्थन हुने गरी अदालतसमेतमा बयान गरेको र तीनजना प्रतिवादीहरूले गरेको इन्कारी बयानलाई समर्थन हुने गरी प्रतिवादीहरूका साक्षीहरू राकेश गुप्ता, दीपक कुँवर र केशवराज विष्टसमेतले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरेकोसमेतबाट प्रतिवादी लावनहाड राईबाहेकका अन्य प्रतिवादी राजु भन्ने राजकुमार साह, किसन भन्ने कृष्ण भट्ट र हरिश विष्टको उक्त बरामद भएको लागु औषध कारोबार तथा सेवनसमेतमा संलग्नता मिसिल संलग्न कागजातबाट पुष्टि हुन सकेको नदेखिने । साथै उक्त बरामद भएको लागु औषधको कारोबार तथा सेवनमा मुख्य प्रतिवादी लावनहाड राईबाहेकका प्रतिवादीहरूसमेत संलग्न रहेको र साथै आरोपित कसुरसमेत गरेका हुन् भन्ने अभियोग दाबी वादी नेपाल सरकारतर्फबाट बरामदी जस्ता तथ्ययुक्त प्रमाण पेस गरी पुष्टि गर्न सकेको नदेखिँदा प्रतिवादीहरू राजु भन्ने राजकुमार साह, किसन भन्ने कृष्ण भट्ट र हरिश विष्टलाई समेत अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादी लावनहाडले आफूले लागु औषध कारोबार नगरी सेवनसम्म गर्ने गरेको भनी अदालतमा बयान गरेको भए तापनि निज बसेको होटलको कोठामा रहेको निजको झोलाबाट १६ ग्राम लागु औषध खैरो हिरोइनसमेत बरामद भएको अवस्था रहेको छ । बरामदी मुचुल्काका हेमराज फुयालले अदालतमा आई बकपत्र गरी उक्त तथ्यसमेतलाई पुष्टि गरिदिएका

छन् । निज प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा बयान गर्दासमेत निजको झोलाबाट १६ ग्राम लागु औषध खैरो हिरोइनसमेत बरामद भएको तथ्यलाई स्वीकार गरी कसुरप्रति साबिती रहेका छन् । आफू र सुमन गुरूङ भई उक्त बरामद भएको लागु औषध खरिद गरी ल्याएको स्वीकार गरी निजले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको बयानलाई बरामदी मुचुल्का र सोको रोहबरमा रहेका व्यक्ति हेमराज फुयालले अदालतमा उपस्थित भई गरिदिएको बकपत्रसमेतले सपुष्टि गरेको देखिने । अतः बरामद भएको लागु औषधको परिमाण १६ ग्राम रहेकोले उक्त लागु औषधको प्रकृति एवम् परिमाणसमेतलाई विचार गर्दा र साथै मिसिल संलग्न अन्य कागज प्रमाणहरूलाई केलाएर हेर्दा, प्रतिवादी लावनहाङ राईबाट बरामद भएको उक्त लागु औषध खैरो हिरोइन निजले सेवन गर्ने उद्देश्यले मात्र नल्याई सोको कारोबार एवम् खरिद बिक्री गर्नकै लागि ओसारपसारसमेत गरेको देखिई त्यसबाट निजले आरोपित कसुर गरेकोसमेत पुष्टि हुन आउँदा निजलाई आरोपित कसुरमा सजायसमेत गर्ने ठहर गरेको सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत दिपायलको फैसलासमेत मिलेकै देखिने ।

अतः सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादीहरू राजु भन्ने राजकुमार शाह, किसन भन्ने कृष्ण भट्ट र हरिश विष्टले अभियोग मागदाबीबाट सफाई पाउने र प्रतिवादी लावनहाङ राईको हकमा लागु औषध नियन्त्रण ऐन, २०३३ को दफा ४(घ)(ड)(च) को कसुरमा ऐ. को दफा १४(१)(छ) बमोजिम ५ (पाँच) वर्ष कैद र रु.१०,०००।- (दश हजार) जरिवाना हुने ठहर गरेको सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको मिति २०७१।६।२८।३ को फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत दिपायलको मिति २०७२।१।३०।४ को

फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: अरुणकुमार कोइराला

कम्प्युटर: हर्कमाया राई

इति संवत् २०७५ साल असार ६ गते रोज ४ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.,** ०७२-CR-१९९२ र ०७४-RC-०१०४, कर्तव्य ज्यान, देवीराम पाण्डे वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. मानबहादुर शाहीसमेत

प्रतिवादी देवीचन्द्र भन्ने देवीराम पाण्डेले आफूले मृतक ग्याल्जेन थापालाई कुटपिट गरी मारेको नहुँदा अभियोग मागदाबीबाट सफाई पाउँ भनी पुनरावेदन जिकिर लिएको देखिए तापनि निजले अदालतमा बयान गर्दासमेत आफूसमेतको संलग्नतामा मृतकलाई कर्तव्य गरी मारेको हो भनी आरोपित कसुरमा साबित रही बयान गरेको, अर्का प्रतिवादी परिमल शाहीले आरोपित कसुरमा साबित रही प्रतिवादीसमेतले मृतकलाई कुटपिट गरी मारेको हो भनी पोल गरी अदालतसमेतमा बयान गरेको, जाहेरवाला ईन्द्रा थापासमेतका मौकामा अनुसन्धानको क्रममा कागज गर्ने व्यक्तिहरूले अदालतमा उपस्थित भई प्रतिवादीसमेतले मृतकलाई कुटपिट गरी मारेको हो भनी लेखाइ दिएको र घटनास्थल लास जाँच प्रकृति मुचुल्का तथा शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट मृतकको मृत्यु कर्तव्यबाट भएको देखिई मिसिल संलग्न प्रमाण कागजहरूबाट यी प्रतिवादीसमेतले मृतकलाई मारी शव परीक्षण नहुँदै लासलाई दबाउने उद्देश्यले गाडी आरोपित कसुर गरेको पुष्टि भइरहेको देखिँदा प्रतिवादी देवीचन्द्र भन्ने देवीराम पाण्डेलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैद र ४ नं. बमोजिम थप ६ महिना कैद हुने ठहर्‍याई सुरु कालिकोट जिल्ला अदालतले गरेको फैसला सदर हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत जुम्लाको फैसला

मिलेकै देखिँदा अभियोग मागदाबीबाट सफाइ दिलाई पाउँ भन्ने यी प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादी परिमल शाहीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दासमेत मिति २०६१।९।८ गते बेलुका ग्याल्जेन थापा, लोकराज शाही र मसमेतले होटलमा मादकपदार्थ सेवन गरी सँगै घरतर्फ जाँदा जनजीवन नि.मा.वि.मा बसेका देवीराम, मानबहादुर र लंकबहादुरसँग भेट भएपछि ग्याल्जेन थापाले खसी बोका बिक्री गरेबापतको बाँकी रकम मागेपछि ग्याल्जेन र मानबहादुरबिच झगडा भयो । त्यतिकैमा ग्याल्जेन थापालाई पूर्वयोजनाबमोजिम बसेका देवीराम पाण्डे, मानबहादुर शाही, लंकबहादुर शाही र लोकराजले कुटपिट गरेका हुन् । ग्याल्जेनलाई मार्न षड्यन्त्र गर्ने मुख्य लोकराज शाही हुन् । ग्याल्जेनको मृत्यु भइसकेपछि मसमेतका ५ जनाले पालैपालो गरी बोकी लासलाई खडिखोला भन्ने स्थानमा लगी खाडल खनी गाडी सबैजना भागी सुर्खेततर्फ गएको हो । खाडल खन्दा प्रयोग भएको कोदालो मानबहादुर शाहीले घरबाट लगेको हो भनी खुलाई अदालतमा बयान गर्दा सोही बयानलाई समर्थन हुने गरी आफूसमेतले मृतकलाई कुटपिट गरी मारेकोमा साबित भई प्रतिवादीहरूलाई समेत पोल गरी बयान गरेको देखिन्छ । त्यस्तै अर्का प्रतिवादी देवीराम पाण्डेसमेतले अदालतमा बयान गर्दा आरोपित कसुरमा साबित भई यी प्रतिवादीहरूसमेतलाई पोल गरी बयान गरेको देखिने ।

प्रतिवादी परिमल शाहीलाई यसै घटनाको विषयमा अभियोग मागदाबीबमोजिम ज्यानसम्बन्धी महलको १, ४ र १३(३) नं. को कसुरमा ऐ.को १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदसमेत हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत जुम्लाको फैसलाउपर साधकको रोहमा यस अदालतको संयुक्त इजलासबाट सुनुवाई हुँदा पुनरावेदन अदालत जुम्लाको फैसला सदर हुने ठहर गरी मिति २०७१।६।२६।१ मा फैसला भएको

मिसिल संलग्न उक्त फैसलाको प्रतिलिपिबाट देखिएको र समान हैसियत भएका यी प्रतिवादीहरूसमेत मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट जाहेरवालाको पति मृतक ग्याल्जेन थापालाई कुटपिट गरी मार्ने कार्यमा संलग्न रही यी प्रतिवादीहरूसमेतले आरोपित कसुर गरेको पुष्टि भएको देखिँदा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम कर्तव्य ज्यानतर्फ जन्मकैदसमेतको सजाय गर्ने ठहर गरेको कालिकोट जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत जुम्लाको फैसलासमेत मिलेकै देखिने ।

अतः विवेचित आधार र कारणहरूबाट पुनरावेदक प्रतिवादी देवीचन्द्र भन्ने देवीराम पाण्डे र प्रतिवादीहरू मानबहादुर शाही, लंकबहादुर शाही र लोकराज शाहीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १, ४ र १३(३) नं. को कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैद र सोही महलको ४ नं. बमोजिम ६(छ) महिना थप कैद हुने ठहर गरेको सुरु कालिकोट जिल्ला अदालतको मिति २०६९।१०।२८।१ को फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत जुम्लाको मिति २०७१।१२।२३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: अरुणकुमार कोइराला

कम्प्युटर: हर्कमाया राई

इति संवत् २०७५ साल असार ३ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. ७

१

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७३-CR-०४२७, जबरजस्ती करणी उद्योग, नेपाल सरकार वि. मानबहादुर पुलामीमगर

वारदात समय, स्थान र घटनाका प्रत्यक्षदर्शी भनिएका रेसीका मगर, मनिषा पुलामी मगरसमेतको कागज र पीडित धनकुटा S को कागज हेर्दा प्रतिवादीले

पीडितसमेतलाई बोलाई घटना स्थलमा लगी लुकामारी खेलन लगाई सबैलाई सुत्न लगाएका र पीडित धनकुटा S माथि थिच्न पुगेको भन्ने मात्र देखिन्छ । प्रतिवादी मानबहादुरले पीडित धनकुटा S लाई करणी गर्ने उद्देश्य नियत राखेको भए निजले लगाएको बस्त्र (लुगाहरू) खोली जबरजस्ती गर्ने प्रयास गरेको तर असफल भएको भन्ने देखिनु पथर्यो, तर त्यस्तो देखिँदैन । बालबालिकासमेत भई बेलुकी ४ बजेको समयमा ५/६ जना केटाकेटी भेला भई लुकामारी खेल्ने सिलसिलामा भुइँमा सबैलाई सुताई यी प्रतिवादी मानबहादुर पुलामी मगर पीडित भनिएकी धनकुटा S लाई थिच्न पुगेकोसम्म देखिन्छ । सो लुकामारी खेल्ने साँगाथमा रहेका मनिषा पुलामी मगर, रेसिका मगरले अदालत एवम् प्रहरीमा समेत कागज गर्दा प्रतिवादीले त्यस्तो छाडा नराम्रो कार्य गरेको होइनन् भनी लेखाइदिएको देखियो । पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण हुँदा कुनै चोट पटक वा संघर्षका चिह्नहरू यौनाङ्ग वा शरीरको बाहिरी भागमा परेको पनि देखिँदैन । पीडित र जाहेरवालाको कथनमा एकरूपता नहुनुका साथै पीडितको अनुसन्धान र अदालतमा गरेको विरोधाभाषपूर्ण कथनको आधारबाट मात्र अन्य स्वतन्त्र प्रमाणको अभावमा जबरजस्ती करणी गर्ने उद्योगको कसुर गरेको रहेछ भनी मान्न नमिल्ने ।

प्रतिवादीले जबरजस्ती करणीको उद्योग ठहर गर्ने गरेको सुरु धनकुटा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।०७।१८ मा भएको फैसला उल्टी हुने ठहरी प्रतिवादीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने साथै प्रस्तुत घटना वारदात आशय करणीको महलअन्तर्गतको देखिँदा जाहेरवालाले चाहे आशय करणीको महलअन्तर्गत कारबाही गर्न पाउने गरी प्रस्तुत वारदातलाई सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम आशय करणीको वारदाततर्फ परिणत गरिदिने ठहर्नाई पुनरावेदन अदालत धनकुटाबाट मिति २०७३।०२।०६ मा भएको फैसला

मनासिब नै देखिने ।

अतः विवेचित आधार, कारण र प्रमाणहरूसमेतबाट प्रतिवादीले केटाकेटीहरूसँग बालक्रिडा (बालखेल) खेल्ने क्रममा बढी थिचिन पुगेको स्थितिमा जबरजस्ती करणीको उद्योग भयो भनी मान्न सकिने अन्य स्वतन्त्र प्रमाणहरूको अभावमा जबरजस्ती करणीको महलको ५ नं. बमोजिमको कसुरमा ऐ.ऐ.को ५ नं. बमोजिम जबरजस्ती करणी उद्योगतर्फ ४(चार) वर्ष कैद हुने ठहर गरी सुरु धनकुटा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।०७।१८ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई प्रतिवादी मानबहादुर पुलामी मगरले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने साथै वारदातको प्रकृति र घटना मुलुकी ऐन, आशय करणीको महलअन्तर्गतको देखिँदा जाहेरवालाले चाहे आशय करणीको महलअन्तर्गत कारबाही गर्न पाउने गरी प्रस्तुत वारदातलाई सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम आशय करणीको वारदाततर्फ परिणत गरिदिनेसमेत ठहर्नाई पुनरावेदन अदालत धनकुटाबाट मिति २०७३।०२।०६ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल पुस २३ गते रोज १ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा**, ०७३-CR-०७४३, लागु औषध ब्राउन सुगर भनी अन्य पदार्थको कारोबार, नेपाल सरकार वि. सालु सल्मानीसमेत

प्रतिवादीहरू अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष कसुरमा साबित भई बयान गरे तापनि अदालतसमक्ष बयान गर्दा हामीहरूबाट कुनै चिज बरामद भएको होइन सबै बेहोरा झुठ्ठा हो भनी बयान गरेको पाइन्छ । बरामद भएको वस्तु ब्राउन सुगर होइन भन्ने केन्द्रीय प्रहरी विधि विज्ञान प्रयोगशालाको प्रतिवेदनबाट देखिन्छ ।

प्रतिवादीहरू भक्तबहादुर जि.सी. र स्माइल सलमानीले लगाएको पाइन्टको खल्लीबाट १५ ग्राम ब्राउन सुगर बरामद भएको भनी बरामदी मुचुल्कामा उल्लेख भए पनि उक्त बरामद भएको पदार्थ लागु पदार्थ नभएको भन्ने परीक्षण प्रतिवेदनबाट निर्विवाद रूपमा स्थापित भएको पाइने।

लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १७क हेर्दा “लागु औषधको विश्वासमा पारी अन्य पदार्थको कारोबार गर्नेलाई सजाय:- लागु औषधबाहेकको अन्य कुनै पदार्थलाई लागु औषध भन्ने विश्वासमा पारी त्यस्तो कारोबार, बेचबिखन, निकासी पैठारी, सञ्चय, उत्पादनसमेतको कार्य गर्ने व्यक्ति वा गिरोहलाई सो अपराध गरेबापत हुने सजायको आधा सजाय हुनेछ” भनी लेखिएको देखिँदा यस ऐनको यो दफा कुनै व्यक्ति वा समूह वा कसैले कसैलाई कुनै पनि रीत तरिका वा प्रकारबाट झुक्यानमा पारी लागु पदार्थबाहेकको वस्तुलाई लागु पदार्थ हो भनी बेचबिखन, बिक्री वितरणलगायतका कारोबार गर्नेलाई सम्म समाहित गरेको देखिन्छ। यस दफाअनुसार कुनै पदार्थ जुन लागु पदार्थ होइन। त्यसलाई लागु पदार्थ हो भनी विश्वासमा पारी बेचबिखन कारोबार गर्ने उद्देश्यले उत्पादन, सञ्चय, ओसारपसार, निकासी पैठारी जस्ता कुनै पनि कार्य गरेको अवस्थामा सम्म यो दफाको कानूनी व्यवस्था क्रियाशील हुने देखिन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा प्रहरी प्रतिवेदकहरूले सुरु अदालतमा उपस्थित भई प्रतिवादीहरूले लागु पदार्थ बेचबिखन, कारोबार गर्न लागेको अवस्थामा पक्राउ गरेको होइन भनी बकपत्र गरी लेखाइदिएको देखिँदा लागु पदार्थ हो भनी विश्वासमा पारी कारोबार गरेको तथ्य स्थापित हुन नसकेबाट यस अदालतबाट मिति २०७३।०८।३० मा भएको मुद्दा दोहोर्न्याई हेर्ने अनुमतिको आदेशसँग यो इजलास सहमत हुन नसकेको हुँदा प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने तथा बरामद मोटरसाइकल जफत नहुने ठहरी सुरु बाँके जिल्ला

अदालतबाट मिति २०७१।१२।०५ मा भएको फैसला सदर हुने ठहरी पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जबाट मिति २०७३।०२।२५ मा भएको फैसला मनासिब नै देखिने।

अतः विवेचित आधार, कारणहरूसमेतबाट प्रतिवादीहरू सालु सलमानी, स्माइल सलमानी, देउकली थापामगर, खगीसरा खड्का र भक्तबहादुर जि.सी.ले लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १७क बमोजिम लागु पदार्थ हो भन्ने विश्वासमा पारी बेचबिखन कारोबार गर्ने उद्देश्यले उत्पादन सञ्चय ओसारपसार निकासी पैठारी जस्ता कुनै कार्य गरेको तथ्य पुष्टि हुन नसकेबाट प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने तथा बरामद भएको मोटरसाइकल जफत नहुने ठहरी सुरु बाँके जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।१२।०५ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्न्याई पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जबाट मिति २०७३।०२।२५ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल पुस २३ गते रोज १ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल**, ०७२-CR-०७९९, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, पदम वि.क. वि. नेपाल सरकार

प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा हेर्दा विगत १ वर्षदेखि भाउजू नाताकी व्यक्ति जाहेरवालीलाई करणी गर्दै आएको, व्यक्तिगत स्वतन्त्रताबाट वञ्चित गराई पूर्णरूपले प्रभाव र दबाबमा राखी इच्छाविपरीत काम गर्न बाध्य पारिएको अवस्थामा समेतका मिसिल संलग्न परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूको र घटनाक्रमहरूको सिलसिलेवार कडी हेर्दा प्रतिवादीले जाहेरवालाको सामाजिक र पारिवारिक वस्तुस्थितिको विश्लेषण गरी ललाई फकाई, विवाह गर्ने प्रलोभनमा पारी पीडितको

नाजुक परिस्थितिको फाइदा लिई डर, त्रास, धाक, धम्की दिई निज बसिरहेको माइती घरबाट भारत बम्बई दाइ भएको ठाउँमा लैजान्छु भनी आफ्नो नियन्त्रणमा लिई नेपालबाट भारततर्फ लैजाने कार्य गरेको अवस्थामा देखिँदा निज प्रतिवादीले जाहेरवालालाई शोषण गर्ने उद्देश्यले ओसारपसार गरी उल्लिखित कार्य गरेको देखिने ।

उल्लिखित स्थापित वारदात, कानूनी व्यवस्था, पीडितले अदालतको बकपत्र बेहोरामा प्रतिवादीले बेचबिखन गरेको होइनन्, निजले इज्जत लुटेकाले रिसले मात्र भनेकी हुँ भनी उल्लेख गरिदिएको र निज प्रतिवादीले भारततर्फ लगी जाहेरवालालाई परिवारबाट सम्पर्कविहीन बनाई नियन्त्रणमा लिई शोषण गर्ने उद्देश्यले ओसारपसार गरेको देखिएको सन्दर्भमा प्रतिवादीलाई सुरु अदालतले मानव बेचबिखन गरेको भनी मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १५ को उपदफा (१) को खण्ड (क) बमोजिम बीस वर्ष कैद र रु. २,००,०००।- (दुई लाख रुपैयाँ) जरिवानाको सजाय र सोही ऐनको दफा १५(४) बमोजिम थप दश प्रतिशत सजायसमेत र ऐ. ऐनको दफा १७ बमोजिम रु.१,००,०००।- (एक लाख) निज प्रतिवादीबाट पीडितलाई क्षतिपूर्तिसमेत भराइदिने भनी भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा फैसला केही उल्टी भई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४ को उपदफा (२) बमोजिम शोषण गर्ने उद्देश्यले मानव ओसारपसार गरेको कसुरमा सोही ऐनको दफा १५(१) (च) बमोजिम निज प्रतिवादी पदम वि.क.लाई पाँच वर्ष कैद हुने ठहर्छ । सोही ऐनको दफा १५(४) मा रहेको कानूनी व्यवस्था हेर्दा “कसैले दफा ३ बमोजिमको कसुर आफ्नो संरक्षणमा वा अभिभावकत्वमा रहेको वा मुलुकी ऐनको हाडनाता करणीको महलबमोजिम सजाय हुने व्यक्तिका सम्बन्धमा गरेको रहेछ भने निजलाई यस ऐनमा लेखिएको सजायको अतिरिक्त सो

सजायको दश प्रतिशत थप सजाय हुनेछ” भन्ने कानूनी व्यवस्था र सोही ऐनको दफा ३ मा मानव बेचबिखन र ओसारपसार गर्न नहुने भन्ने उल्लेख भएबाट निज प्रतिवादीले आफ्नो हाडनाताकी भाउजूउपर ओसारपसारको कसुर गरेको हुँदा प्रतिवादीलाई सोही ऐनको १५(१)(च) बमोजिम भएको सजाय ५(पाँच) वर्षको १०(दश) प्रतिशत हुन आउने ६(छ) महिना सजाय थप गरी जम्मा ५(पाँच) वर्ष ६(छ) महिना सजाय हुने ।

पीडित जाहेरवालाको हकमा विचार गर्दा देशको फौजदारी कानूनले प्रतिवादीलाई जतिसुकै जेल सजाय वा दण्ड दिए पनि पीडित महिलाको जीवन सामाजिक सोच र व्यवहारले गर्दा सदा पीडामा नै रहन जाने र पीडितले न्याय पाएको अनुभूत गर्न नसक्ने स्थिति सिर्जना हुन जाने हुँदा यस्ता अति संवेदनशील पीडितको जीवनसँग सम्बन्धित मुद्दाहरूका सन्दर्भमा अभियोजन एवम् अनुसन्धान पक्ष सधैं सजग, सचेत र समझरूपले पीडित राहतमुखी बन्नु उपयुक्त हुन जान्छ । पीडितले समाजमा आफूलाई सम्मानपूर्वक बाँच्ने स्थिति हुनका लागि राज्यका हरेक अङ्गहरू, कानून निर्माता, कानूनका व्याख्याता, कानूनका कार्यान्वयनकर्ता, न्यायका उपभोक्ताहरू तथा समाजसमेत सचेत, सक्षम पीडितमुखी हुन जरूरी देखिने ।

प्रतिवादीबाट पीडितलाई मनासिब माफिकको क्षतिपूर्ति भराइदिनु पर्ने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था भए पनि प्रतिवादीलाई जरिवाना नभएको हुँदा पीडितको मानवीय संवेदनशीलता र निजलाई पर्न गएको क्षतिको उपचार पीडितले नपाउने भनी अर्थ गर्न मिल्दैन । पीडितका प्रति हुन गएको अनेकन क्षतिलाई अदालत, मुद्दा चलाउने पक्ष र अरू संलग्न निकायले संवेदनशीलरूपमा हेर्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा पनि पीडितलाई उचित क्षतिपूर्तिबिना न्यायको महसुस पीडितले पाउन सक्दैन भन्ने निष्कर्षमा इजलास पुगेको



छ। व्यक्तिको पवित्रता तथा पीडित राहत शास्त्रको सार नै judge made law भएको पाइएकाले पीडित राहत शास्त्रको भावनालाई समेट्दै मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १७(१) मा अदालतले कसुरदारलाई भएको जरिवानाको पचास प्रतिशत बराबरको रकममा नघट्ने गरी निजबाट पीडितलाई मनासिब माफिकको क्षतिपूर्ति भराइदिनु पर्नेछ र दफा १७(१क) मा उपदफा (१) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि कसुरदारको न्यून आर्थिक हैसियत भएको वा अन्य कुनै कारणले कसुरदारबाट पीडितले क्षतिपूर्ति पाउन नसक्ने अवस्था देखिएमा अदालतले ऐ.ऐनको दफा १४ बमोजिम पुनर्स्थापना कोषबाट पीडितलाई मनासिब क्षतिपूर्ति भराइदिने आदेश गर्न सक्नेछ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको हुँदा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाकै आधारमा पीडित जाहेरवाली परिवर्तित नाम कैलाली ७१(ख) खिमालाई पुनर्स्थापना कोषबाट रु.१,००,०००।- (एक लाख) क्षतिपूर्ति भराइदिन मनासिब देखिने।

तसर्थ, विवेचित आधार, कारणबाट पुनरावेदक प्रतिवादीको हकमा सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत दिपालयबाट मिति २०७२।२।५ मा भएको फैसला केही उल्टी भई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४ को उपदफा (२) बमोजिमको कसुरमा सोही ऐनको दफा १५(१) (च) बमोजिम निज प्रतिवादी पदम वि.क.लाई ५(पाँच) वर्ष कैद हुने ठहर्छ, सोही ऐनको १५(४) बमोजिम दफा १५(१)(च) बमोजिम भएको सजाय ५(पाँच) वर्षको १०(दश) प्रतिशत हुन आउने ६(छ) महिना थप गरी जम्मा ५(पाँच) वर्ष ६(छ) महिना सजाय हुने ठहर्छ। साथै राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय कानून तथा नेपाल पक्ष रहेका सन्धि सम्झौता, सम्मिलनले पीडितलाई उचित क्षतिपूर्ति भराउन बाधा पर्ने नदेखिएकाले मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन,

२०६४ को दफामा १७ को उपदफा (१क) बमोजिम पीडित जाहेरवाली परिवर्तित नाम कैलाली ७१ (ख) खिमालाई पुनर्स्थापना कोष (नेपाल सरकार) बाट रु.१,००,०००।- (एक लाख) क्षतिपूर्ति भराइदिने।

इजलास अधिकृत: प्रकाशदत्त भट्ट

कम्प्युटर: विपिनकुमार महासेठ

इति संवत् २०७५ साल पुस ३० गते रोज २ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल**, ०७३-CI-०३०४, अंशबन्डा, लिलादेवी अधिकारी वि. पूर्णकुमारी महतो अधिकारी

प्रतिवादी जीवनाथ अधिकारीको कान्छी श्रीमती पूर्णकुमारी महतो अधिकारीको विवाह कहिले भएको हो भन्ने सम्बन्धमा हेर्दा, प्रत्यर्थी वादी पूर्णकुमारी महतो अधिकारीले आफ्नो विवाह मिति ०६१।११।१९ मा भएको भनी उल्लेख गरी मिति ०६८।२।२४ को विवाह दर्ताको प्रमाणपत्र पेस गरेको देखिन्छ। वादी पूर्णकुमारी महतो अधिकारीले आफ्नो पति जीवनाथ, जेठी श्रीमती लिलादेवी र माहिली श्रीमती तिलकुमारीबिचमा आफूलाई अंशियार नै नदेखाई मिति ०६५।३।१५ मा नगद अंशबन्डाको लिखत पारित गरेको भनी लगाउको नगद अंशबन्डा लिखत बदर मुद्दामा जिकिर लिएको देखिन्छ। तर प्रस्तुत मुद्दाको फिराद पत्रको १ नं. प्रकरणमा हेर्दा “माइलीतर्फका सन्तान र माइली श्रीमतीले म विवाह गरी आउनुभन्दा अघि नै अंश लिई बस्नु भएको रहेछ” भनी उल्लेख भएको देखिन्छ। माइली श्रीमतीले यो मितिमा अंश लिएको भनी मिति ०६५।३।१५ को मितिभन्दा अन्य कुनै मिति उल्लेख गर्न सकेकोसमेत देखिँदैन। मिसिल सामेल रहेको नगद अंशबन्डाको लिखतको प्रतिलिपि हेर्दासमेत जीवनाथ अधिकारीले रु.६७,०००।-, लिलादेवी अधिकारीले रु.६६,०००।- र तिलकुमारी अधिकारीले रु.६७,०००।- नगद अंश बुझेको भनी उल्लेख भएको देखिने। निज पूर्णकुमारीले आफूले दाबी

गरेको फिराद प्रतिकूल हुने गरी मिति २०६८।२।२४ मा दर्ता गराएको विवाह दर्ताको प्रमाण पत्रलाई ठोस र निश्चयात्मक प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्न सकिने देखिएन । तसर्थ निज पूर्णकुमारीको विवाह मिति ०६५।३।१५ भन्दा पछि मात्र भएको भन्ने देखिन आउने ।

पति जीवनाथ, जेठी श्रीमती लिलादेवी र माहिली श्रीमती तिलकुमारीबिचमा आफूलाई अंशियार नै नदेखाई मिति ०६५।३।१५ मा नगद अंशबन्डाको लिखत पारित गरेको भनी लगाउको नगद अंशबन्डा लिखत बदर मुद्दामा जिकिर लिने पूर्णकुमारीले सुरु अदालतमा फिराद दिँदा ३ नै जनालाई प्रतिवादी बनाई फिराद दिनुपर्नेमा जेठी श्रीमती लिलादेवी र पति जीवनाथलाई मात्र प्रतिवादी बनाई माहिली श्रीमती तिलकुमारी आफ्नो विवाह हुनु पहिले नै छुट्टी भिन्न भएको भन्ने उल्लेख गरेबाट निजको फिराद जिकिर नै शङ्कास्पद देखिन आउने । अंश लिई भिन्न भएपछि विवाह भएकोलाई भिन्न भएका अंशियारबाट अंश लाग्ने व्यवस्था नदेखिएबाट मिति ०६५।३।१५ मा नगद अंश लिई भिन्न भएकी यी प्रतिवादीबाट प्रत्यर्थीले अंश पाउने अवस्था देखिएन । प्रत्यर्थी वादी पूर्णकुमारीको विवाह मिति ०६९।११।१९ मा भएको भनी पुष्टि नभई मिति ०६५।३।१५ पछि मात्रै भएको भन्ने देखिएरहेको अवस्थामा मिति ०६५।३।१५ मा भएको नगद अंशबन्डाको लिखत बदर गरी तायदाती माग गरी ३ भागको १ भाग अंश पाउँ भन्ने वादी पूर्णकुमारीको फिराद जिकिर प्रतितलायक देखिन आएन । यस्तो अवस्थामा पूर्णकुमारीले तिलकुमारी अधिकारी र प्रतिवादी लिलादेवी अधिकारीको नाउँको सम्पत्तिबाट अंश पाउने नदेखिई प्रतिवादी जीवनाथ अधिकारीको अंश भागबाट मात्र अंश पाउने देखिन आउने ।

वादी पूर्णकुमारीले पति जीवनाथको अंश भागबाट मात्र अंश पाउने देखिएको अवस्थामा पुनरावेदक प्रतिवादी लिलादेवी अधिकारीले आफूले

अंश लिई अलग भइसकेपछि मिति २०६७।७।१५ मा खरिद गरेको जिल्ला चितवन गा.वि.स. सिस्वारा वडा नं. ८(ग) को कि.नं. ८३४ को जग्गामा र मिति २०६२।१।२ मा लिलादेवी अधिकारीले छोरी मन्जु अधिकारीलाई हालैको बकसपत्रको लिखतबाट दिएको जग्गामा समेत अंश लाग्ने अवस्था देखिन आएन । यस्तो अवस्थामा सुरु चितवन जिल्ला अदालत तथा पुनरावेदन अदालत हेटौँडाबाट मिति ०६५।३।१५ मा भएको नगद अंशबन्डाको लिखतलाई बदर गरी तायदाती फाँटवारीमा उल्लिखित सम्पत्तिलाई ४ अंश भाग लगाई सोबाट १ अंश भाग प्रत्यर्थी वादी पूर्णकुमारी महतो अधिकारीले अंश पाउने ठहरी भएको फैसला मिलेको देखिन नआउने ।

तसर्थ, उपर्युक्तबमोजिमको तथ्य प्रमाणको आधारमा सुरु चितवन जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने ठहरी पुनरावेदन अदालत हेटौँडाबाट मिति २०७०।१।८ मा भएको फैसला नमिलेको हुँदा केही उल्टी भई प्रत्यर्थी वादी पूर्णकुमारी महतो अधिकारीले पति जीवनाथ अधिकारीको अंशभागबाट मात्र अंश पाउने तथा प्रतिवादी लिलादेवी अधिकारी र तिलकुमारी अधिकारीको नाउँको सम्पत्तिबाट अंश नपाउने ठहर्ने ।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद आचार्य  
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७५ असार १० गते रोज १ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०७३-CI-०३०५, नगद अंशबन्डा लिखत बदर, लिलादेवी अधिकारी वि. पूर्णकुमारी महतो अधिकारीसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

५

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७३-CR-१३८३, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. चमेली थामीमगरसमेत

प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरू दुवैजनाले

अनुसन्धानका क्रममा बयान गर्दा आफूहरू मृतक तथा प्रतिवादी चमेली थामी मगरको कोठामा खाना खाई सुतेकोमा वारदात भएपछि प्रतिवादी चमेली थामीमगरले आफूहरूलाई ब्युँझाएकोमा उठी लास फाल्नलाई सहयोगसम्म गरेको भन्ने लेखाइदिएको पाइन्छ। निजहरूको अनुसन्धानको उक्त बयान प्रत्यर्थी / प्रतिवादी चमेली थामी मगरको अनुसन्धानको बयान बेहोराबाट समेत समर्थित हुन आउँदछ। यसबाट यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूको घटनामा कुनै प्रकारको संलग्नता वा निजहरू वारदातको मतलबी रहे भएको देखिन नआउने।

मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. अनुसारको कसुर हुनलाई ज्यान मार्ने कुरामा ऐ. १७(१) र (२) मा उल्लेख भएबाहेकको अरु किसिमले मतसल्लाहमा पसेकोमा मार्ने ठाउँमा गई अरु कुरा केही नगरी हेरिरहेको र लेखिएदेखि बाहेक अरु किसिमको मतलबी रहेभएको देखिनु पर्ने हुन्छ। यस्ता मतलबीलाई ६ महिनादेखि तीन वर्षसम्म कैद गर्नुपर्ने कानूनी व्यवस्था उक्त नं. मा रहेको छ। यस कानूनी व्यवस्थाअनुसार यी प्रतिवादीहरू दुईजना कुनै प्रकारले मार्ने मतसल्लाहमा पसेको भन्ने देखिँदैन। नाता पर्ने प्रतिवादीमध्येकी चमेली थामी मगरको कोठामा रात परी पाहुनाको रूपमा बस्न पुगेका यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरू र निज चमेली थामीका बिचमा मृतकलाई मार्नेसम्बन्धी कुनै सरसल्लाह तथा कुराकानी भएको भन्ने कतैबाट खुल्न आएको छैन। यस्तै मार्ने कुरामा कुनै तरिकाले यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूले सहयोग गरेको र झगडा हुँदा नछुट्याई हेरिरहेको तथा मार्नलाई प्रहार गरेकोमा नरोकेको, प्रहार गरिसकेपछि पनि बचाउने कुनै प्रयास नगरेको भन्ने देखिन नआउने।

प्रतिवादीहरू प्रतिवादीमध्येकी चमेली थामी मगरको कोठामा सुतिसकेको अवस्थामा वारदात भएको देखिन्छ। वारदात हुँदा पनि ठूलो होहल्ला तथा झगडा भई यी प्रतिवादीहरूको निद्रा खुल्नु पर्ने

अवस्थासमेत रहेभएको देखिन आउँदैन। आएर धकेल्दा प्रतिवादी चमेली थामीलाई रिस उठी ढुङ्गाले प्रहार गर्दा ढुङ्गा टाउकोमा लागि तत्काल नै मृत्यु हुन पुगेको देखिन आउँछ। थकाई र नसाको सुरमा मस्त निद्रामा सुतेका यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूलाई त्यसरी भएको वारदातको बारेमा कुनै थाहा जानकारी हुन नसक्नुलाई अस्वाभाविक भन्नसमेत सकिँदैन। आफूहरूलाई वारदातको बारेमा कुनै जानकारी नभएको अवस्थामा निजहरूले वारदात रोक्न वा वारदातको अधिपछि कुनै काम गर्न नसक्ने नै हुन आउँछ। साथै वारदातको कुनै सुइँकोसमेत निजहरूले पाएको पुष्टि नभएको अवस्थामा निजहरू पनि कुनै तरिकाले मार्ने मतलबमा पसेको भन्न सकिने देखिँदैन। मृतकको मृत्युपश्चात् मात्र प्रत्यर्थी / प्रतिवादी चमेली थामीले ब्युँझाए पछि मात्र निजहरूले वारदातको बारेमा थाहा जानकारी पाएको देखिन आउँछ र निज चमेली थामीमगरले लासलाई खोलामा फाल्न सहयोग मागेकोले निजहरूले सो वारदातबारेमा कसैलाई थाहा जानकारी नगराई लासलाई फाल्ने कार्यसम्ममा सहयोग गरेको देखिन आउने।

कानूनले गर्नु भनेको काम नगरेको अर्थात् कानूनी कर्तव्यको पालना नगरेको (Omission of Act) लाई पनि अपराध मानी सजायको व्यवस्था गरिएको देखिन्छ। प्रस्तुत वारदातको सम्बन्धमा यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरू पाल्दैन लामा र कल्पना लामाले पनि उपर्युक्त कानूनी व्यवस्था रहेभएको सन्दर्भमा समेत ज्यान मारेको कुरा थाहा जानकारी पाएपछि सम्बन्धित निकाय तथा सोमा सम्भव नभए अरूलाई वारदातको बारेमा जाहेरी वा थाहा जानकारी दिनुपर्ने निजहरूको कानूनी कर्तव्य भएकोमा निजहरूले सो पूरा नगरी कसुरदारलाई सजायबाट बचाउन सकिन्छ कि भनी लास दबाउन खोलामा फाल्ने काम गरेकोलाई उल्लिखित नं.ले तोकेको कानूनी कर्तव्य पालना नगरेको देखिन आयो। यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरू

सो नं.ले बढी सजाय तोकेको व्यक्तिको वर्गभित्र पर्न जाने नदेखिई सोबाहेकका अरु सर्वसाधारणभित्र पर्ने भएकोले निजहरूलाई बीस रूपैयाँ जरिवाना हुने देखिन्छ । त्यसैले निजहरूलाई ज्यानसम्बन्धीको महलको २५ नं. अनुसार बीस रूपैयाँ सजाय गरी भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिलेन । निजहरू ज्यान मार्ने काममा कुनै प्रकारले मतसल्लाहमा पसेको, कुनै सहयोग गरेको जस्ता कार्य गरेको देखिन नआएकोले निजहरूलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. अनुसार सजाय गरिपाउँ भनी वादी नेपाल सरकार पक्षले लिएको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

अतः माथि विवेचित आधार प्रमाणहरूबाट प्रत्यर्थी / प्रतिवादी चमेली थामी मगरलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. अनुसार १०(दश) वर्ष कैद सजाय हुने र प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरू पाल्देन लामा र कल्पना लामालाई ऐ. महलको २५ नं. बमोजिम जनही रु.२०।- (बीस रूपैयाँ) जरिवाना हुने ठहर्‍याई सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।१।११ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७२।०७।१५ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: यदुराज शर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेम्मी

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १४ गते रोज ५ शुभम् ।

६

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान**, ०७४-WH-००९५, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, *LILY TIAN* को हकमा सविना तुलाधर वि. त्रिभुवन विमानस्थल भन्सार कार्यालय, काठमाडौंसमेत

नेपालको संविधानको धारा १३३(२) मा भएको संवैधानिक व्यवस्थाअनुसार साधारण अधिकारक्षेत्रको व्यवस्था नभएको वा अर्को उपचारको व्यवस्था नभएको वा सो व्यवस्था भए पनि सो उपचार अपर्याप्त भएको अवस्थामा मात्र

रिट क्षेत्राधिकार आकर्षित हुने हो । असाधारण क्षेत्राधिकार कानूनप्रतिकूलको क्षेत्राधिकार नभई कानूनकै परिपूरकको क्षेत्राधिकार हो । यसको प्रयोग सामान्य अवस्थामा हुने होइन । असाधारण अधिकार क्षेत्रबाट क्षेत्राधिकारको अभाव, क्षेत्राधिकारको इन्कारी, कानूनको त्रुटि, दूषित निर्णय आदि भएमा आदेश जारी गर्ने हो । साधारण क्षेत्राधिकार हुँदाहुँदै त्यसको अवलम्बन नै नगरी असाधारण अधिकारक्षेत्र अवलम्बन गर्ने हो भने यसले साधारण क्षेत्राधिकारलाई औचित्यहीन तुल्याउनुका साथै न्यायिक अराजकताको स्थितिसमेत सिर्जना हुन पुग्ने ।

कार्यविधि कानून र सारवान् कानून दुवैको प्रयोगमा पक्षले आफ्नो सहभागिताबाट चुक्नु हुँदैन । सारवान् र कार्यविधि कानूनमध्ये एकको अभावमा अर्काको अस्तित्व नरहने हुँदा अदालतले कार्यविधि कानूनलाई कम मूल्याङ्कन गरी साधारण क्षेत्राधिकारलाई अनदेखा गरी रिट क्षेत्रबाट हस्तक्षेप गर्न नमिल्ने ।

भन्सार अधिकृतले गरेको अन्तरकालीन आदेशउपर चित्त नबुझेको खण्डमा निवेदक भन्सार ऐन, २०६४ को दफा ६२ को उपदफा (१) तथा न्याय प्रशासन ऐन, २०७३ को दफा १५ को उपदफा (१) बमोजिम राजस्व न्यायाधिकरण, काठमाडौंमा निवेदन दिन सक्ने कानूनी व्यवस्था रहेकोमा निवेदक सो साधारण कानूनी उपचारको बाटो अवलम्बन नगरी यस अदालतको असाधारण अधिकार क्षेत्रबाट उपचारका लागि आएको देखिने ।

अतः कानूनी व्यवस्था तथा प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतका आधारमा निवेदक कानूनको क्षेत्राधिकारभित्र रही कानूनले तोकेको कार्यविधि अवलम्बन गरी थुनामा राखिएको आदेशउपर चित्त नबुझे कानूनबमोजिम साधारण उपचारको माध्यमबाट उपचार खोज्नुपर्नेमा असाधारण क्षेत्राधिकारबाट आएको निवेदन मागबमोजिम आदेश जारी हुनुपर्ने

देखिएन । रिट निवेदन खारेज हुने ।  
उपरजिस्ट्रार: शिवलाल पाण्डेय  
कम्प्युटर: सिजन रेग्मी  
इति संवत् २०७५ साल जेठ २३ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. ८

१

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७२-CR-०८८२, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. ढाकबहादुर तामाङ

प्रस्तुत मुद्दामा रातको समयमा वारदात भएको भन्ने देखिएको छ । पीडितले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा प्रतिवादीले शरीरमा हात लगाएको, छाडा कुरा गरेको भनी बकपत्र गरेको अवस्था छ । प्रतिवादी कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखिएको छ । साथै निज ७९ वर्षको वृद्ध भन्ने देखिएको छ । जबरजस्ती करणीजस्तो कसुरमा पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन कसुर निर्धारण लागि महत्त्वपूर्ण तत्त्व मानिन्छ । पीडित तथा पीडकको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट जबरजस्ती करणीको लक्षणहरू देखिन आएको अवस्था छैन भनी प्रस्ट उल्लेख भएको छ । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुरूप अभियोग दाबी पुष्टि गर्ने दायित्व वादी पक्षमा नै रहन्छ । वादी पक्षले जाहेरवालीलाई अदालतसमक्ष उपस्थित गराई जाहेरी पुष्टि गर्न सकेको पनि देखिँदैन । उपर्युक्त तथ्य रहेको प्रस्तुत मुद्दामा ठोस वस्तुनिष्ठ सबुद प्रमाणको अभावमा प्रतिवादीलाई जबरजस्ती करणीजस्तो गम्भीर अपराधमा कसुरदार ठहर गर्न फौजदारी न्यायको सिद्धान्तले मिल्ने देखिन आएन । प्रस्तुत वारदातको अवस्था प्रकृति तथा मिसिल संलग्न स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनसमेतका प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम जबरजस्ती

करणीको दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेकै देखिँदा अन्यथा हुन सक्ने नदेखिने ।

अतः प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीको कसुरमा सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिर नपुग्ने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट मिति २०७२।१।६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।  
इजलास अधिकृत: केदारनाथ पौडेल, टेकराज जोशी  
कम्प्युटर: चन्द्रशेर राना  
इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १४ गते रोज ५ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७४-RC-०००१, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. राजेश राना

प्रस्तुत मुद्दामा तत्काल पक्राउमा परी आएका सहप्रतिवादी कमल वि.क., राजु कामी, झवनाथ भण्डारी र किशोरो गाहाले मौकामा यी प्रतिवादी लुरे भन्ने राजेश रानासमेतले छविलाल दुवेलाई कुटपिट गरेको र सोही कुटपिटको चोटले मृत्यु भएको तथ्य स्वीकार गरी बयान गरेको देखियो । अतः वारदातमा संलग्न रहेको अन्य प्रतिवादीसहर यी प्रतिवादी राजेश राना पनि समानरूपमा संलग्न रहेको देखिन्छ । यस अवस्थामा प्रतिवादी राजेश रानाको समेत कुटपिटको कारण मृतक छविलाल दुवेको मृत्यु भएको देखिँदा निज प्रतिवादी लुरे भन्ने राजेश रानालाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. को कसुरमा ऐ. को १३(३) नं. अनुसार जन्मकैदको सजाय गर्ने गरेको सुरु फैसलालाई सदर गरेको उच्च अदालत पोखराको मिति २०७४।१।१५ को साधक जाहेरी फैसला सदर हुने ।

अ.बं. १८८ नं. अनुसार व्यक्त गरिएको राय सम्बन्धमा विचार गर्दा, प्रतिवादी र मृतकबिच पूर्वरिसइवी रहेको भन्ने नदेखिएको, पूर्वयोजना बनाई लुकी छिपी हतियारले मृतकलाई कुटपिट गरेको भन्ने

पनि देखिँदैन । अचानक जम्काभेट हुँदा परस्परमा झगडा परी हात हालाहाल हुँदा मृतक र प्रतिवादीसमेत खोलामा खसेको देखिन्छ । मृतकलाई घाइते अवस्थामा खोलामा पानीमा रहेको अवस्थामा छोडी गएको कारणबाट समेत मृतकको मृत्यु हुन गएको अवस्था देखिन्छ । अन्य प्रतिवादीहरू कमल वि.क. र राजु कामीको हकमा जन्मकैदको सजाय गर्दै जनही ५ वर्ष कैद हुन मनासिब देखी अ.बं. १८८ नं. बमोजिमको राय जाहेर गरेको सुरु अदालतको फैसला यस अदालतबाट मिति २०७०।१।१२१ मा साधक सदर भई अन्तिम भई बसेको अवस्था पनि छ । प्रतिवादीले गरेको अपराध र निजलाई हुने सजायबिच सन्तुलन स्थापित गर्ने गरी सजायमा कमी गर्नु औचित्यपूर्ण र इन्साफको रोहमा न्यायपूर्ण हुने देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा यी प्रतिवादी राजेश रानाले गरेको अपराधको प्रकृति, अपराध हुँदाको निजको अवस्था र पूर्वआपराधिक चरित्रको अभावसमेतलाई दृष्टिगत गर्दा निज प्रतिवादीलाई अ.बं. १८८ नं. बमोजिम ५ वर्ष कैदको सजाय हुने राय व्यक्त गरेको सुरु स्याङ्जा जिल्ला अदालतको राय मनासिब भई सो राय नलाने भनी उच्च अदालत पोखराबाट व्यक्त भएको राय मिलेको नदेखिँदा प्रतिवादी राजेश रानालाई कैद वर्ष ५ हुने ।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल पुस ७ गते रोज ६ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७४-RC-०००४, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. खड्कबहादुर मगर**

जयन्द्र पाइजा पुन तथा खड्कबहादुर मगर जना २ भई मेरो भतिजा भीमबहादुर मगरलाई बाटो छेकी ज्यानै मार्ने उद्देश्यले धारिलो चक्कुले शरीरमा जथाभावी हानी सख्त घाइते बनाई उपचारको क्रममा निज भतिजाको मृत्यु भएकोले कानूनबमोजिम

कारबाही गरिपाउँ भन्ने विच्छेबहादुर मगरको जाहेरी दरखास्त देखियो । प्रत्यक्षदर्शी डिलबहादुर भन्ने अमृत मगरले प्रतिवादीहरू र मृतकबिच सामान्य भनाभन भएको र मृतक र आफू त्यहाँबाट हिँडेकोमा प्रतिवादीहरूले लुकीबसी बाटो छेकी जयन्द्र पाइजाले मृतकलाई समाती खड्कबहादुरले चक्कुले प्रहार गरेका र मैले बचाउन खोज्दा मेरो हातमा समेत चोट लागेको भनी लेखाई दिएकोमा प्रतिवादी खड्कबहादुर मगरले मौकामा र अदालतमा बयान गर्दासमेत सो कुरा पुष्टि हुने गरी आरोपित कसुर स्वीकार गरी बयान गरेको पाइयो । वारदातमा प्रयोग गरिएको चक्कु बरामद हुन नसके तापनि लासजाँच मुचुल्का हेर्दा, मृतक भीमबहादुर मगरको दाहिने आँखाको बाहिरी छेउ र नाकको डाँडीमा सानो ददारेको दाग, बायाँ कोखामा १।१ इन्च लामो दुईवटा गहिरो घाउ, माथिल्लोमा चारवटा र तल्लोमा तीनवटा टाँका लगाएको, पेटको दायाँ बायाँ दुवै छेउमा दुईवटा प्वाल रहेको, उक्त प्वाल उपचारको क्रममा बनाइएको भनिएको, पेटमा ठाडो अपरेसन गरिएको भनिएको ८<sup>१</sup>/<sub>३</sub> इन्च लामो टाँका लगाइएको घाउ रहेको भन्ने बेहोराको लास जाँच मुचुल्का देखियो । मृतकको पोष्टमार्टम रिपोर्टमा पनि मृत्युको कारण Cardio pulmonary Arrest Hypovolemic shock भन्ने उल्लेख भएको पाइने ।

अतः विवेचित आधार, कारणबाट प्रतिवादी खड्कबहादुर मगरलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. को कसुरमा सोही महलको १३(३)नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने गरेको मिति २०७३।२।१७ को सुरु फैसलालाई सदर गरेको उच्च अदालत पोखराको मिति २०७३।१।२।१ को फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल पुस ७ गते रोज ६ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा**, ०७४-RC-०००६, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. जङ्गला सरदारसमेत

अनुसन्धानको क्रममा मौकामा बुझिएका वनेलाल सरदारले प्रतिवादीहरू शम्भु सरदार, केशव सरदारले नै शम्भुलाई मारेको विश्वास लाग्छ भनी मौकामा मिति २०६०।८।६ मा कागज गरी सो मौकाको आफ्नो भनाइलाई पुष्टि हुने गरी अदालतमा बकपत्र गरिदिएको पाइयो । लाखोदेवी सरदार, भोटेलाल सरदार, शिवलाल सरदारसमेतका व्यक्तिले घटना वारदातको राति यी प्रतिवादीहरूको साथमा बसी मृतकले रक्सी खाएका र वारदात स्थलतर्फ गएको भनी लेखाई दिएको पाइन्छ । वस्तुस्थिति मुचुल्कामा कागज गर्ने जंगबहादुर खड्काले अदालतमा उपस्थित भई यी प्रतिवादीहरूको संलग्नतामा वारदात घटना भएको भनी मौकाको भनाइलाई पुष्टि हुने गरी बकपत्र गरिदिएको देखिन्छ । मिश्रीलाल सरदारले समेत अदालतमा उपस्थित भई यिनै प्रतिवादीहरूले कर्तव्य गरी मारेका हुन् भनी प्रस्टसँग लेखाइदिएको छ । यसरी मृतक शम्भु सरदार र प्रतिवादीहरूसँगै बसी नास्ता रक्सी खाएको देखिन्छ । यस स्थितिमा आफू वारदातमा संलग्न भई रक्सी सेवन गरी प्रतिवादीहरूले मृतकसँग रातको समयमा वादविवाद झगडा गरिरहेको देख्ने प्रत्यक्षदर्शीको बकपत्रबाट देखियो । सोही रात मृतकको कर्तव्य गरी हत्या हुन गएको देखिन्छ । प्रस्तुत वारदातपश्चात् प्रतिवादीहरू फरार रही अदालतबाट जारी भएको म्यादमा समेत उपस्थित हुन आएको देखिँदैन । मृतकसँग झगडा गरेको भोलिपल्ट मृतकको कर्तव्य भई हत्या भएको परिस्थितिजन्य प्रमाणबाट प्रतिवादीहरूकै कर्तव्यबाट मृतकको मृत्यु भएको पुष्टि हुने ।

अतः विवेचित आधार प्रमाणबाट प्रतिवादीहरू चिचुवा भन्ने जङ्गला सरदार र

बखारूलाल माझीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय गर्ने गरी मोरङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।१०।९ मा भएको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको मिति २०७३।३।१२ को फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल पुस ७ गते रोज ६ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा**, ०७४-RC-००१४, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. कुलबहादुर बुढा

प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष कसुरमा पूर्णरूपमा साबित रहँदै बयान गरेको देखिन्छ । निजको साबिती बयानलाई घटनास्थल तथा लासजाँच मुचुल्का र शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट समर्थित भइरहेको छ । घटनास्थलमा रहेकी प्रतिवादीको श्रीमती, प्रहरीमा कागज गर्ने दिलसरी बुढाले मृतकलाई मेरो लग्नेले खुकुरीले काटेको भनी बकपत्र गरेको तथा मौकामा कागज गर्ने प्रत्यक्षदर्शी तिलक घर्तीले पनि प्रतिवादीले एक्कासी खुकुरीले मृतकलाई काटेको भनी बकपत्र गरेकोबाट मृतकलाई प्रतिवादीले खुकुरी प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको पुष्टि हुने ।

यस मुद्दामा रहेको तथ्य हेर्दा प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष बयान गर्दा प्रतिवादीले खुकुरी प्रहार गरेको हुँ, धेरै गहिरो घाउ लागेकोले बाँच्ने अवस्था नभएकोले फेरी खुकुरी प्रहार गरेको हुँ भनी बयान गरेको देखिन्छ । यसरी यी प्रतिवादीले मृतकलाई मार्ने नै नियतले घाँटीजस्तो संवेदनशील अङ्गमा २ पटक खुकुरीले प्रहार गरी मृतकलाई मारेको देखिँदा अ.बं. १८८ नं. बमोजिम कम सजाय हुने राय लगाउने अवस्था नदेखिने ।

अतः विवेचित आधार, कारणबाट प्रतिवादी कुलबहादुर बुढालाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद हुने ठहर गरेको उच्च अदालत सुर्खेतको मिति २०७४।२।८ को फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल पुस ७ गते रोज ६ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७२-CI-०१७४,** सार्वजनिक जग्गा खिचोला छोडाई घर नाद भत्काई चलन, भुवन बैठा धोबी वि. जंगी साह कानूसमेत

विवादित कि.नं. १ को न.नं. ७ मा प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूले टायलको घर निर्माण गर्दा छिमेकमै जग्गा रहेका यी पुनरावेदक वादीले मौकामा नै घर निर्माणतर्फ उजुर नालिस गरेको नदेखिएकाले सो न.नं. ७ को हकमा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्नाएको सुरु पर्सा जिल्ला अदालत र पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको फैसलालाई अन्यथा मान्नु पर्ने देखिएन। अब सो कि.नं. १ को बाँकी जग्गाहरूको सम्बन्धमा विचार गर्दा न.नं. ३,४,५,६ को जग्गा सोही कि.नं. १ अन्तर्गतको सार्वजनिक ऐलानी जग्गा भन्ने देखियो। सार्वजनिक ऐलानी जग्गाको स्वामित्व कुनै व्यक्तिको नाउँमा दर्ता कायम हुन सक्ने हुँदैन। सार्वजनिक जग्गाको प्रयोग गाउँलेहरूले सार्वजनिक रूपमा गरेको भन्ने २०२२ सालको नापी हुँदा फिल्डबुकमा उल्लिखित बेहोराबाट देखिन्छ। सार्वजनिक ऐलानी जग्गा प्रतिवादीहरू (१) प्रभु हजारा दुसाद (२) जनक पण्डित कुम्हार (३) रामनिवास पण्डित कुम्हारले भोग गरेको नक्सा मुचुल्काबाट देखिन्छ। सार्वजनिक ऐलानी कि.नं. १ को जग्गामा निज प्रतिवादीहरूले मात्र उपभोग गर्न पाउने हक रहन सक्दैन। सार्वजनिक स्वरूपको जग्गा सदैव सार्वजनिकमा नै रहनुपर्ने हुन्छ। कुनै

पनि व्यक्तिको निजी प्रयोग भोगमा मात्र रहनु मनासिब हुँदैन। सार्वजनिक जग्गामा निज प्रतिवादीहरूले भोग गरी खिचोला गरेको नक्सा मुचुल्काबाट पुष्टि हुन आएको छ। न.नं. ३,४,५,६ को जग्गामा प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूमध्ये प्रभु हजारा दुसाद, जनक पण्डित कुम्हार, राम निवास पण्डित कुम्हारको भोगचलन गरेको भन्ने नाप नक्सा मुचुल्कामा जनिएको देखिएकाले उक्त न.नं.का जग्गामा प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूको कब्जा खिचोला मेटाई सार्वजनिक ऐलानीअन्तर्गत नै रहने गरी फैसला गर्नुपर्नेमा नगरेको सो हदसम्म पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको फैसला मिलेको नदेखिने।

तसर्थ, विवेचित आधार र कारणबाट नापीको फिल्डबुकबाट विवादित जिल्ला पर्सा, अमरपट्टी वडा नं.८ कि.नं. १ को ज.वि. ०-१-१९ को ऐलानी सरकारी सार्वजनिक जग्गा रहेको भन्ने देखिएको, उक्त जग्गाको सुरु पर्सा जिल्ला अदालतबाट भई आएको नाप नक्सा मुचुल्काको न.नं. ३, ४, ५, ६ को जग्गामा प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूमध्ये प्रभु हजारा दुसाद, जनक पण्डित कुम्हार, राम निवास पण्डित कुम्हारको भोगचलन गरी खिचोला गरेको देखियो। सो हदसम्म निज प्रतिवादीहरूले गरेको खिचोला मेटाई सो जग्गा सार्वजनिक ऐलानीअन्तर्गत नै रहने ठहर्छ। सो हदसम्म खिचोला ठहर नगरेको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको फैसला केही उल्टी भई न.नं. ७ को हकमा वादी दाबी नपुग्ने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको मिति २०६९।१०।२२ को फैसला सदर हुने।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

इति संवत् २०७४ साल पुस ४ गते रोज ३ शुभम्।

७

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०६६-CI-१२५०,** हक कायम नामसारी, गजेन्द्रनाथ श्रीवास्तवसमेत वि. निशाकुमारी श्रीवास्तव काशीप्रसादका भतिजा छोरा नाता पर्ने विनोदकुमारले अपुताली हक पाउने तर भतिजी छोरी



निशाकुमारीले नपाउने भनी भन्दा समान व्यवहार हुने स्थिति देखिन आउँदैन । एकपुस्ता तल अपुताली सरी जाने कुरामा स्वयम् प्रतिवादीहरू सहमत भएपछि समान पुस्ताले प्राथमिकता पाउने भन्ने निज पुनरावेदकहरूको भनाइ आफैँमा विवन्धन रहेको हुन्छ । अर्कोतिर वादी निशाकुमारीले आमा उर्मिलादेवीको हकमा जाने सम्पत्तिको मात्र दाबी लिएको अवस्था रहेको छ । आमाको नाउँको अपुतालीको हक छोरीलाई प्राप्त नहुने अवस्था हुँदैन । यसकारण काशीप्रसादको सम्पत्तिमा उर्मिलादेवीको अपुताली हक रहेको अवस्थामा सो आमाको सम्पत्तिको एक मात्र हकदार छोरी निशाकुमारीले दाबी गर्न मिल्ने नै देखिन्छ । नजिकको हकवाला एक मात्र छोरी रहेको अवस्थामा आमाको नाउँको सम्पत्तिमा अपुताली हकको दाबी गर्ने सन्दर्भमा छोरी विवाहिता हो कि अविवाहिता हो ? सो कुराले कुनै अर्थ राख्दैन । अतः नजिकका पुरुष हकदार आफूहरू हुँदाहुँदै दोस्रो पुस्ताकी त्यसमा पनि भिन्न भएको परिवारको विवाहिता छोरीले अपुताली हकको दाबी गर्ने अधिकार नभएको भन्ने पुनरावेदन जिकिर न्याय कानूनको रोहमा मनासिब नदेखिने ।

जहाँसम्म दाबीको जग्गा सम्बन्धमा यसअघि नै वादी निशाकुमारीको हक कायम नहुने ठहर भइसकेको भन्ने पुनरावेदन जिकिर छ, सो सम्बन्धमा पुनरावेदन अदालत बुटवलको २०५८ सालमा भएको फैसला हेर्दा तत्काल काशीको नाउँको जग्गा आमा उर्मिलाको नाउँमा नआएकोले सो मुद्दाबाट निशाकुमारीको हक नपुग्ने भन्नेसम्म आधार लिई फैसला भएको देखियो । माथिका प्रकरणहरूमा विवेचना भएबमोजिम काशीप्रसादको नाउँको सम्पत्तिमा वादी निशाकुमारीकी आमा उर्मिलादेवीसमेतको अपुताली हक रहेको कुरा स्थापित भइसकेको छ । अब निज उर्मिलादेवीकी एक मात्र छोरी यी वादी निशाकुमारीले सो आमाको हकको सम्पत्तिमा दाबी गर्न नसक्ने भन्ने कुरा हुँदैन । उक्त

दाबीको जग्गा सम्बन्धमा वादी निशाकुमारीको आमा उर्मिलादेवीले २०४० सालमा दिएको निवेदनलाई कारबाही चलाई सो जग्गामा हक कायम गराउन सो फैसलाको बोलीले बाधा गरेको अवस्था नदेखिने ।

यसरी २०४० सालमा आमा उर्मिलादेवीले काशीप्रसादको नाउँको सम्पत्तिमा अपुताली हकको दाबी लिई कारबाही चलाएको र निज उर्मिलादेवी सो अपुताली सम्पत्तिको हकदार रहेको भनी स्वयम् प्रतिवादी विनोद कुमारले स्वीकार गरेको अवस्थामा सोही २०४० सालको निवेदनउपरको कारबाहीलाई आमाको मृत्युपछि निजको एक मात्र छोरी वादी निशाकुमारीले निरन्तरता दिई प्रस्तुत फिराद परेको अवस्थामा दाबीका जग्गामा वादीको हक कायम हुने नै देखियो । यस्तो अवस्थामा दाबीका काशीप्रसाद श्रीवास्तव नाउँ दर्ताका जग्गाहरूमा वादी निशाकुमारी श्रीवास्तवको समेत हक कायम हुने ठहर गरेको सुरु तथा पुनरावेदन अदालतको फैसला न्याय कानूनको रोहमा मिलेकै देखिँदा अन्यथा गरिरहनु नपर्ने ।

अतः विवेचित आधार प्रमाणबाट आमा उर्मिलादेवी श्रीवास्तवको समेत अपुताली हक पुग्ने फिराद दाबीका काशीप्रसाद श्रीवास्तवको नाउँका विवादित जग्गाहरूमा वादी निशाकुमारी श्रीवास्तवको हक कायम हुने नै हुँदा उक्त जग्गाहरूमध्ये ३ भागको १ भाग जग्गामा वादी निशाकुमारी श्रीवास्तवको हक कायम भई नामसारीसमेत हुने ठहर गरी भएको सुरु रूपन्देही जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६५।८।२२ को फैसला मिलेकोले सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : कल्याण खड्का

कम्प्युटर : संजय जैसवाल

इति संवत् २०७५ साल साउन ३० गते रोज ४ शुभम् ।

८

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७०-CR-१६५८, ०७०-CR-

१७०६ र ०७१-CR-००१७, कर्तव्य ज्यान, चन्द्रेश्वर राय यादव वि. नेपाल सरकार राजेन्द्र राय यादव वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. चन्द्रेश्वर राय यादव

मूलतः प्रतिवादी राजेन्द्र राय यादवले अदालतमा वारदातको समयमा आफू भारत भएको र फर्किँदा आफ्नो परिवारको संलग्नता रहेको सुनी पुनः भारततर्फ नै भागी गएको भनी आरोपित कसुरमा इन्कार गरी बयान गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीले वारदातको समयमा आफू भारत गएको भनी Alibi को जिकिर लिएको देखिए पनि सो कुरा प्रमाणित हुने कुनै प्रमाण पेश गर्न सकेको पनि पाइँदैन । ने.का.प.२०६२, अङ्क ५, नि.नं.७५४० मा फौजदारी मुद्दामा Alibi सम्बन्धी मान्य सिद्धान्तअनुसार जसले वारदात मितिमा घटनास्थलमा थिइँ, अन्यत्र थिएँ भन्ने जिकिर लिन्छ यस्तो अन्यत्र रहेको भन्ने Alibi को जिकिर लिने प्रतिवादीले नै प्रमाणित गर्नुपर्नेमा दुईमत हुन नसक्ने भनी न्यायिक सिद्धान्त प्रतिपादन भएको देखिन्छ । यस सिद्धान्तबमोजिम प्रतिवादीको Alibi को जिकिर पुष्टि हुन सकेको नदेखिने ।

बरामदी तथा खानतलासी मुचुल्का प्रतिवादी राजेन्द्र राय यादवको घरमा भएको पाइन्छ । सो घरमा खानतलासी लिइएको समयमा प्रतिवादीको परिवार सदस्यमध्ये कोही सम्पर्कमा रहेको देखिँदैन । मृतकको लास फेला परेपछि प्रतिवादीको घरमा नै भोलिपल्टै घटनास्थल बरामदी मुचुल्का भएको छ । सो मुचुल्काबाट रगतजस्तो पदार्थ ठाउँ ठाउँमा देखिएको र आलो माटो तथा खरानी छर्केको भन्ने बेहोरा पनि उल्लेख छ । किटानी जाहेरी परी मौकामा बुझिएको मानिसहरूले वारदातमा प्रतिवादीहरूको सपरिवारको संलग्नता रहेको र निजहरू वारदातपश्चात् तत्काल भागी फरार रहेको भनी कागज गरेको पाइन्छ । आफ्नो परिवारको संलग्नता रहेको सुनी भागेको भनी प्रतिवादीले अदालतमा बयान गरेको पाइन्छ । प्रतिवादीहरूको कसुरमा संलग्नता नभएको

भए यसरी सपरिवार नै भाग्नपर्ने कुनै मनासिब कारण देखिँदैन । सपरिवार नै घर गाउँ छाडी भाग्नको यथोचित कारण प्रतिवादीहरूबाट पुष्टि हुन आएको छैन । तसर्थ, उपर्युक्त परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूबाट मृतक श्रीकान्तकुमार यादवको हत्यामा प्रतिवादीहरूको संलग्नता रहेको देखिने ।

प्रतिवादीहरूको आरोपित कसुरमा संलग्नता रहेको देखिँदा प्रत्येक प्रतिवादीहरूको कसुरमा संलग्नताको मात्रा यकिन गरी सजाय निर्धारण गर्नुपर्ने हुन्छ । अब, प्रतिवादी राजेन्द्र राय यादवको कसुरको मात्रा विचार गर्दा, मृतक श्रीकान्तकुमार यादवको मृत्यु आँखाको तल, माथि र चिउँडोमा चार ठाउँ रोपी हत्या गरेको देखिन आएको छ । निज प्रतिवादी राजेन्द्र राय यादवले नै मृतकलाई सुइरो तथा झिरले रोपी कर्तव्य गरी हत्या गरेको भनी अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको कागज, लास जाँच मुचुल्का, पोष्टमार्टम रिपोर्टमा उल्लिखित घाउ चोटसमेतको विवरणबाट समर्थित भएको छ । निज प्रतिवादीको घरमा विभिन्न स्थानमा रगतजस्तो पदार्थ लागेको र आलो माटो तथा खरानी छिटिएको भन्ने जस्ता घटनास्थल मुचुल्का र टोकरीमा राखी मृतकलाई फालेको भनी मौकामा बयान गरेकोमा टोकरीमा रगत जस्तो टाटो रहेको भनी घटनास्थलबाट टोकरीसमेत बरामद भएकोसमेतका उल्लिखित बेहोराले पनि वारदातस्थल निज प्रतिवादीले मौकामा बयान गरे मुताबिक निजको घरमा भएको भन्ने पुष्टि हुन्छ । निज प्रतिवादीको यस किसिमको कार्यको सम्बन्धमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. मा धार भएको वा नभएको जोखमी हतियार गैहले हानी, रोपी, घोची ज्यान मारेमा जतिजना भई हतियार छाडेको छ उति जना ज्यानमारा ठहर्छन् । सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्नुपर्छ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । अतः प्रतिवादी राजेन्द्र राय यादवको कसुर ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिमको देखिन आएकोले निजको हकमा पुनरावेदन अदालतबाट सोही

१३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने गरी गरेको फैसला अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

प्रतिवादी चन्द्रेश्वर राय यादवको हकमा विचार गर्दा, वारदातपश्चात् सपरिवार नै घर छाडी भागी फरार भएको पाइन्छ । फरार रहेका यी प्रतिवादी मिति २०६९।०५।१४ मा पक्राउ परेको देखिन्छ । निज प्रतिवादीसमेतले Alibi को जिकिर लिए पनि सोको पुष्टि गर्ने प्रमाणको भार निजैमा रहेकोमा पुष्टि गर्न, गराउन सकेको पाइँदैन । आफूउपरको आरोपित कसुरको खण्डन प्रतिवादीबाट यथोचित समयमा अदालतमा उपस्थित भई गर्नुको अलावा प्रतिवादी फरार रहेको पाइन्छ । प्रतिवादीसमेत वारदातमा रहेको तथा आफ्नो परिवारबाट भएको कसुरलाई निजले सहयोग गरेको एवम् वारदातस्थलमा उपस्थित रहेको र अरु किसिमको मतलबी मतियार रहेको देखिन्छ । निज प्रतिवादीको यस्तो कार्यको सम्बन्धमा ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. मा अरु किसिमसँग मतसल्लाहमा पसेकोमा मार्ने ठाउँमा गई अरु कुरा केही नगरी हेरी रहनेलाई र लेखिएदेखि बाहेक अरु किसिमका मतलबीलाई छ महिनादेखि तीन वर्षसम्म कैद गर्नुपर्छ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । प्रतिवादी चन्द्रेश्वर राय यादवको कसुर ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिमको रहेको देखिँदा निजलाई सोही १७(३) नं. बमोजिम ९ महिना कैद सजाय हुने गरी पुनरावेदन अदालत हेटौँडाबाट भएको फैसला अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

अतः प्रतिवादी राजेन्द्र राय यादवलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने र प्रतिवादी चन्द्रेश्वर राय यादवलाई सोही महलको १७(३) नं. बमोजिम ९ महिना कैद हुने गरी सुरु बारा जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत हेटौँडाबाट मिति २०७०।१०।२८ मा भएको फैसला

मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः कालिबहादुर साम्यू लिम्बू  
इति संवत् २०७५ साल चैत्र ११ गते रोज २ शुभम् ।

९

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी**, ०७३-CI-१०९३ र ०७३-CI-११५१, लिखत बदर, बालकृष्ण शाक्य वि. कपना श्रेष्ठ र प्रदीप श्रेष्ठ वि. कपना श्रेष्ठ

वादी कपना श्रेष्ठ र प्रतिवादी प्रदीप श्रेष्ठ लोम्ने स्वास्नी नाताको भई अंश मुद्दा परेकोमा पतिले मिलापत्र गर्दा गलत किता नम्बर लेखाएको कारणबाट वादी कपना श्रेष्ठको अंशहक लोप हुने अवस्था हुँदैन । वास्तविक किता नम्बर २८४ नै प्रदीप श्रेष्ठको नाउँमा दर्ता रहेको छ र कि.नं. १८४ प्रदीप श्रेष्ठको नाउँमा दर्ता नै रहेको देखिँदैन । मिलापत्रमा कि.नं. २८४ लेखिनु पर्नेमा कि.नं. १८४ लेखिन गएकोसम्म देखियो । सो जग्गाको क्षेत्रफल, अवस्थितिलगायतका अरु विवरणहरू मिलेकै देखिन्छ । अतः कि.नं. १८४ भनी मिलापत्रमा लेखिएको जग्गा वास्तवमा कि.नं. २८४ नै रहेको पुष्टि हुन आएको छ । तसर्थ उल्लिखित कि.नं. २८४ र कि.नं. १८४ दुवै किताका जग्गाहरूको जग्गा धनीको नाम, जग्गा रहेको स्थान एउटै भई क्षेत्रफलसमेत बराबर रहेको देखिएको र प्रतिवादी प्रदीप श्रेष्ठका नाममा दर्ता नै नभएको कि.नं १८४ बाट वादीले अंश पाउने गरी मिलापत्र भएको थियो भनी मान्न न्याय र तर्कसङ्गतसमेत नहुने भएकाले प्रतिवादी प्रदीप श्रेष्ठको नाउँमा दर्ता रहेको उक्त कि.नं. ३१६ का साथै कि.नं. २८४ को जग्गामा समेत मिलापत्रबमोजिम वादीको अंशहक रहेकै देखिने ।

मिलापत्रबमोजिम वादीको समेत हक हुने जग्गा पुनरावेदक प्रतिवादी प्रदीप श्रेष्ठले बालकृष्ण शाक्यलाई हक हस्तान्तरण गर्ने कार्य गरेको देखियो । सो मिलापत्र कायमै रहेको अवस्थामा सो मिलापत्रबाट वादीको हक

हुने कित्ता नम्बरको उल्लेखसम्ममा सामान्य फरक पर्न गएको अवस्था रहेको पाइयो। वादीले मिलापत्रबमोजिम अंशबापत पाउने जग्गा दा.खा. दर्ता नगर्दैंका अवस्थामा प्रतिवादीहरूले वादीको अंशहकसमेत लाग्ने जग्गा निज वादीको मन्जुरी नलिई हक हस्तान्तरण गरी दिए लिएको कार्य गैरकानूनी देखियो। तसर्थ वादीको मन्जुरी नलिई वादी दाबीबमोजिमको जग्गा प्रतिवादी प्रदीप श्रेष्ठले प्रतिवादी बालकृष्ण शाक्यलाई मिति २०७०।६।११ मा राजीनामा पारित गरी हक हस्तान्तरण गरेको कार्य मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको १० नं. तथा अंशबन्डाको १९ नं. समेतको कानूनी व्यवस्थाविपरीत भएकोले सो लिखतबाट वादीको अंशहक लाग्नेजति २ भागको १ भाग लिखत बदर हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेकै देखिने।

अतः विवेचित आधार कारणबाट वादी दाबी नपुग्ने ठहर्‍याएको सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७२।१।७ को फैसला उल्टी हुने ठहर गरी वादी दाबीबमोजिमको लिखतको २(दुई) भागको १(एक) भाग लिखत दर्तासमेत बदर भई वादीका नाममा दर्ता कायम हुनेसमेत ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७३।१।२९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत:- दिपेन्द्र थापा मगर

कम्प्युटर: संजय जैसवाल

इति संवत् २०७६ साल जेष्ठ १५ गते रोज ४ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७३-CR-०९७१, जालसाजी, बालकृष्ण शाक्य वि. कपना श्रेष्ठसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

१०

मा.न्या.श्री विश्वभरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७३-CI-१२११, अंश चलन, खेरू गन्गाई वि. हेवला गन्गाईसमेत

प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीले विवादित जग्गाहरू

र.नं. ३३४९ को बकसपत्रबाट प्राप्त गरेको सम्पत्तिबाट बढेबढाएको हो भनी जिकिर लिए पनि उक्त बकसपत्रद्वारा प्राप्त सम्पत्तिबाट के कसरी र कुन माध्यमले आर्थिक लाभ भई ती विवादित जग्गाहरू आर्जन गरेको हो भन्ने स्पष्ट खुलाउन सकेको देखिँदैन। त्यसैगरी निजले भारतमा सुरक्षा गार्डमा काम गरेर कमाएको रूपैयाँबाट सो सम्पत्ति खरिद गरेको भन्नेसमेत पुनरावेदन जिकिर लिए पनि निजले के कति कमाई गरेर ल्याएको थियो र सो रकमबाट विवादित जग्गाहरू खरिद गरेको हो भन्ने स्पष्ट खुल्ने प्रमाण प्रतिवादीले पेस गर्न सकेकोसमेत पाइँदैन। कुनै प्रमाणबाट प्रतिवादीको निजी आर्जनको सम्पत्ति हो भन्ने देखिन खुल्न नआएको अवस्थामा प्रतिवादीले लिएको जिकिरकै आधारमा मात्र उक्त विवादित सम्पत्तिलाई निज प्रतिवादीको निजी आर्जनको सम्पत्ति मान्न न्यायोचित हुँदैन। तसर्थ, विवादित जग्गाहरू प्रतिवादीको निजी आर्जनको सम्पत्ति हो भन्ने पुष्टि हुन सकेको नदेखिने।

प्रतिवादी अर्थात् जेठा दाजु खेरू गन्गाई र निजकी श्रीमती लखियादेवी गन्गाईका नाउँमा सगोलको सम्पत्ति रहेको देखिन्छ र सो सम्पत्ति बन्डा लाग्ने ठहर गरेउपर यी प्रतिवादीले अन्यथा भनी पुनरावेदन जिकिर लिन सकेको पाइँदैन। निज खेरू गन्गाईको नाउँमा सगोलमै रहँदा विभिन्न व्यक्तिहरूबाट राजीनामा गरी लिएका उल्लिखित विवादित जग्गाहरू पनि निज प्रतिवादीको निजी आर्जनको हो भन्ने तथ्य स्थापित हुन आएको अवस्था नहुँदा उक्त सम्पत्ति सगोलकै मानिने भई वादीहरूसमेतलाई बन्डा लाग्ने नै देखिन्छ। उक्त विवादित जग्गाहरूमा सगोलमै रहेका अन्य अंशियारहरूको अंशहक नलाग्ने भनी अनुमान गर्न कानूनतः मिल्ने देखिँदैन। सो सम्पत्ति सगोलमै रहेको अनुमान खण्डन हुने गरी प्रतिवादीबाट प्रमाण पेस हुन सकेकोसमेत छैन। प्रतिवादी खेरू गन्गाईको नाउँमा राजीनामाबाट प्राप्त भएको उक्त विवादित जग्गाहरू अंशबन्डाको १८ नं. बमोजिम निजको निजी

आर्जनको सम्पत्ति हो भन्ने पुष्टि हुन नआएकोले निजी आर्जनको सम्पत्ति भएको हुँदा बन्डा गर्नुपर्ने होइन भन्ने निजको पुनरावेदन जिकिर कानूनसम्मत देखिन आएन। तसर्थ प्रतिवादीले र.नं. ३३४९ को बकसपत्रबाट प्राप्त गरेबाहेकका अन्य जग्गाहरूमा वादीहरूको समेत अंश हक लाग्ने नै हुँदा सो जग्गासमेतबाट ३ भागको २ भाग अंश पाउने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत इलामबाट भएको फैसला मनासिब नै देखिने।

अतः विवेचित आधार, कारण तथा न्यायिक सिद्धान्तसमेतबाट प्रतिवादीले र.नं. ३३४९ को बकसपत्रबाट प्राप्त गरेको तथा र.नं. ३४७०, ८४६४ र ५८२६ का राजीनामा लिखतबाट खरिद गरी प्राप्त गरेको सम्पत्तिबाहेक तायदाती फाँटवारीमा उल्लिखित सम्पत्तिलाई ३ भाग लगाई सोको २ भाग वादीहरूले अंश पाउने ठहर्‍याएको सुरु झापा जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादीले र.नं. ३३४९ को बकसपत्रबाट पाएबाहेकका अन्य र.नं. ३४७०, ८४६४ र ५८२६ बाट प्राप्त गरेका सम्पत्तिहरूसमेतबाट वादीहरूले ३ भागको २ भाग अंश पाउने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत इलामबाट मिति २०७३।५।१२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दिपेन्द्र थापा मगर

इति संवत् २०७६ साल जेठ १५ गते रोज ४ शुभम्।

११

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०६९-MS-००१०, अदालतको अवहेलना, फणिन्द्रकुमार यादव वि. नरेन्द्र शर्मा

यस अदालतको मिति २०६३।४।३० को परमादेशको आदेश कार्यान्वयनको सम्बन्धमा विपक्षी जिल्ला प्रशासन कार्यालयले आफ्नो कार्य पूरा गरी अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगमा प्रतिवेदनसमेत दिइसकेको देखिँदा आदेश प्राप्त हुनुभन्दा अघि नै आफ्नो कानूनी कार्य पूरा गरिसकेको देखियो। जहाँसम्म जेथा फुकुवासमेतको प्रश्न निवेदकले

उठाएको छ। सोतर्फ हेर्दा निज व्यवस्थापक तेजनारायण यादवबाट संस्थाको रकम हिनामिना गरेको सम्बन्धमा निजले धरौट राखेको सम्पत्तिबाट असुलउपर गर्न सकिने भन्ने अख्तियारबाट मिति ०६६।३।४ मा निर्णय भएको र सो निर्णय कार्यान्वयनको क्रममा रहेको भन्ने विपक्षीको लिखित जवाफबाट पाइयो। अख्तियारबाट मिति ०६६।३।४ मा भएको निर्णय र सो कार्यान्वयनको क्रममा रहेको कारण निजको जेथा फुकुवा हुन नसकेको सम्बन्धमा निज निवेदकको मृत्यु भइसकेकोले निजको हक खाने पत्नी रामवती देवी यादवले सो निर्णयलाई चुनौती दिँदै यस अदालतमा मिति ०७४।१।१२ मा (०७४-WO-०६२८) रिट निवेदन परी कारबाहीयुक्त अवस्थामा रहेको भन्ने देखिन आएकोले सो सम्बन्धमा सोही निवेदनबाट विचार भई निर्णय हुने नै देखिने।

अतः उल्लिखित विवेचित आधार कारणबाट विपक्षी प्रमुख जिल्ला अधिकारीले अदालतको अपहेलना गरेको देखिन आएन। अपहेलना गरेकोमा सजाय गरिपाउँ भन्ने निवेदकको दाबी पुग्न नसक्ने।  
इजलास अधिकृत: टेकराज जोशी  
कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा  
इति संवत् २०७६ साल असार ६ गते रोज ६ शुभम्।

इजलास नं. ९

१

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७०-WH-०१२६, उत्प्रेषण / परमादेश, जगदेव चौधरी वि. स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय, रामशाहपथसमेत

नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल विकास समितिको बैठकद्वारा निर्णय गरिएको व्यवस्थालाई नेपाल सरकार (मन्त्रीस्तर) को मिति २०७२।३।१७ को निर्णयानुसार स्वीकृति प्रदान भई नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल विकास समिति कर्मचारी प्रशासन

नियमावली, २०६३ मा पहिलो संशोधन भएको देखिन्छ। सोहीअनुसार नेपाल सरकार (मन्त्रीस्तर) को मिति २०७२।५।१४ को निर्णयानुसार स्वीकृति प्रदान भई सो नियमावलीमा दोस्रो संशोधनसमेत भएको पाइन्छ।

नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल कर्मचारी प्रशासन नियमावली, २०६३ नियमावलीको संशोधित प्रावधानअनुसारको पदपूर्तिसम्बन्धी सूचना मिति २०७२।५।३० मा प्रकाशित भएको पाइन्छ। सो प्रकाशित सूचनाअनुसार नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल, वीरगन्जमा कार्यरत अस्थायी र करार सेवाका कर्मचारीहरूले फाराम भरी परीक्षामा सहभागी उम्मेदवारहरूको सफल भएको नतिजा प्रकाशन गरी सफल भएका उम्मेदवारहरूले पदपूर्ति समितिको निर्णयबमोजिम अख्तियारवाला व्यक्तिबाट स्थायी नियुक्तिसमेत मिति २०७२।६।१० मा प्राप्त गरी नियुक्तिसम्बन्धी सम्पूर्ण प्रक्रिया सम्पन्न भइसकेको देखिन्छ। नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०४९ को दफा १० अनुसार नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल विकास समितिले आफ्नो कार्य सञ्चालनका लागि नेपाल सरकारको स्वीकृति लिई नियमहरू बनाउन सक्ने नै देखियो। उल्लिखित दफा १० को प्रावधानलाई हेर्दा नियमहरू बनाउँदा नेपाल सरकारको स्वीकृति लिनु पर्ने देखिन्छ। नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल विकास समितिले नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल कर्मचारी प्रशासन नियमावली, २०६३ मा पहिलो र दोस्रो संशोधन गर्दा नेपाल सरकार (मन्त्रीस्तर) को निर्णयानुसार स्वीकृति प्राप्त गरी संशोधन गरेको मिसिल संलग्न स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय, ऐन, नियम परामर्श शाखाको पत्रबाट देखिन आयो। यसरी नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल कर्मचारी प्रशासन नियमावली, २०६३ को पहिलो र दोस्रो संशोधन नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल विकास समिति

(गठन) आदेश, २०४९ को दफा १० अनुसारको अख्तियारी प्रयोग गरी नेपाल सरकार (मन्त्रीस्तर) को निर्णयानुसार स्वीकृति प्राप्त गरी भएको देखिँदा सोअनुसार पदपूर्तिको सूचना प्रकाशित गरी परीक्षामा सफल उम्मेदवारहरूलाई नियुक्तिपत्रसमेत प्रदान गरेको विपक्षी नारायणी उपक्षेत्रीय अस्पताल विकास समितिको कार्य कानूनअनुकूलकै रहे भएको देखिने।

रिट निवेदक अस्पतालबाट माग गरिएको कुनै पनि पदको प्रतियोगी वा प्रतिस्पर्धी रहेको भन्ने देखिँदैन। अस्पतालको काम कारबाही वा संशोधित नियमबाट यी रिट निवेदकको हकमा कुनै प्रतिकूल प्रभाव परेको पनि देखिएन। अस्पतालका त्यस्ता काम कारबाहीमा यी रिट निवेदकको सार्थक सम्बन्ध रहेको भन्नेसमेत देखिन नआउने। निवेदक सरोकारवाला व्यक्ति नदेखिएको, कानूनबमोजिमको अख्तियारी प्रयोग गरी नियमावली बनेको, विपक्षीहरूको काम कारबाहीबाट निवेदकको कुनै किसिमको हकमा असर परेको नदेखिएको र यस अदालतबाट मिति २०७०।४।१७ मा आदेश भएको उल्लिखित प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतका आधारमा निवेदन जिकिर मनासिब नदेखिने।

अतः विवेचित आधार र कारणबाट विपक्षीहरूको काम कारबाही संविधान एवम् कानूनअनुकूलको भई सो काम कारबाहीबाट निवेदकको कुनै किसिमको हक अधिकारमा असर परेको नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिम रिट जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: विकास श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल माघ १५ गते रोज २ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७२-WH-०२२९, उत्प्रेषण / परमादेश, जय मंगलप्रसाद वि. स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय, रामशाहपथसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७३-CI-१७०९, मानव छोडपत्रको लिखत बदर, ब्रजेश भारतीसमेत वि. विशाल भारती

वादीहरूका पति पिता तथा प्रस्तुत मुद्दाका प्रतिवादीमध्येका विशाल भारतीले अर्का प्रतिवादी मुकुन्दप्रसाद भारतीलाई आफ्नो अंश भागमा परेका जग्गाहरूमध्ये भक्तपुर जिल्लाका विभिन्न कित्ता जग्गाहरू छोडपत्र गरी मिति २०६५।१२।१० मा मालपोत कार्यालय, भक्तपुरमा उपस्थित भई निवेदन दिई सनाखतसमेत गरेको कुरामा विवाद देखिँदैन। सो कुरालाई प्रतिवादी विशाल भारतीले आफ्नो प्रतिउत्तर पत्रमा स्वीकार गरेको पाइन्छ। सरकारी अड्डामा गरेको र प्रमाणित रहेको कागजमा लेखिएको बेहोरा झुक्यानमा पारी बेहोरा फरक पारी सही गराएको हो, सो छोडपत्रबापत रकम बुझेको छैन भनी जिकिर लिए पनि सो भनाइको प्रमाणिक महत्त्व रहेको नदेखिने।

विवादित जग्गाका सम्बन्धमा २०६५।१२।१० मा छोडपत्र भएकोमा २०६६।६।१८ मा विकासकुमार भारतीको श्रीमती प्रमिला थापाले प्रस्तुत मुद्दाका प्रतिवादी विशाल भारतीसमेतलाई प्रतिवादी बनाई दायर गरेको अंश मुद्दामा भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।२।१६ मा फैसला भएको देखिन्छ। सो फैसलामा छोडपत्रका आधारमा हक कायम भएका कित्ता जग्गासमेत बन्डा लाग्ने ठहर भएको भनी प्रस्तुत मुद्दाका प्रतिवादी मुकुन्दप्रसाद भारतीले दायर गरेको ०६८-CP-०१०४ को फैसला बदर मुद्दा भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।२।१३ मा फैसला हुँदा मिति २०६५।१२।१० मा छोडपत्रबाट प्राप्त भएका भक्तपुर जिल्लाअन्तर्गतका विभिन्न २७ कित्ता जग्गामा रहेको विकासकुमार भारतीको हक हिस्सासमेत मुकुन्दप्रसाद भारतीका नाउँमा दा.खा. दर्ता भएको आधारमा विकासकुमार भारतीको पत्नी

प्रमिला थापा भारतीले मिति २०६८।२।१६ को फैसलाले अंश पाउने ठहरेका उल्लिखित कित्ताबाट समेत बन्डा पाउने ठहरेको हदसम्मको सो फैसला बदर भई उक्त फैसला अन्तिम भई बसेको पाइन्छ। अधिल्लो पुस्ताका अंशियारबिच काठमाडौं जिल्ला अदालतमा चलेको अंश मुद्दामा मिति २०३३।२।१७ मा फैसला भई सो मुद्दामा यी प्रतिवादी विशाल भारतीसमेतले अंश पाउने ठहरी बाग्मती अञ्चल अदालतबाट मिति २०४३।१२।३० मा सोही फैसला सदर भई अन्तिम भई बसेको र आफूले अंशबापत प्राप्त गरेको सम्पत्ति नै प्रतिवादी विशाल भारतीसमेतले अर्का प्रतिवादी मुकुन्दप्रसाद भारतीलाई छोडपत्रको माध्यमबाट हक छाडेको देखिने।

प्रतिवादी विशाल भारतीको वादीहरूको हक मार्ने नियत रहेको भन्ने कुनै आधार देखिँदैन। प्रतिवादी विशाल भारतीले आफ्नो अंश भागमा पर्ने हक हिस्सा माथिल्लो पुस्ताका अंशियारलाई नगद लिई व्यवहार मिलाउन छोडपत्र गरिदिएको कुरालाई अन्यथा होला भनी अनुमान गर्न मिल्ने देखिँदैन। मालपोत कार्यालयमा स्वयम् कारणी उपस्थित भई निवेदन दिई सनाखतसमेत गरी सोही आधारमा मालपोत कार्यालयबाट निर्णय भए गरेको कार्यलाई झुक्यानमा पारी बेहोरा फरक पारी सही गराएको भन्ने विशाल भारतीको प्रतिउत्तर जिकिर विश्वास लाग्दो देखिँदैन। वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभावमा प्रतिउत्तरको लेखलाई मात्र ग्रहण गरी आफू स्वयम् सरकारी अड्डामा उपस्थित भई निवेदन दिने र सो बेहोरा सनाखत गरिसकेको अवस्थामा रीतपूर्वक भएको काम कारबाहीलाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

अतः माथि विवेचित आधार कारणबाट छोडपत्र लिखत र त्यसको आधारमा भएको निर्णय बदर गरिपाउँ भन्ने वादी दाबी पुग्न नसक्ने गरी भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।२।१३ मा भएको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको

मिति २०७२।५।२७ को फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत:- ढाकाराम पौडेल

कम्प्युटर:- मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७५ साल फागुन १४ गते रोज ३ शुभम्। यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसै अनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७३-CI-१७०७, लिखत दर्ता बदर दर्ता कायम, ब्रजेश भारतीसमेत वि. विशाल भारती
- ०७३-CI-१७०८, लिखत दर्ता बदर दर्ता, ब्रजेश भारतीसमेत वि. विशाल भारती
- ०७३-CI-१७०६, लिखत दर्ता बदर दर्ता, ब्रजेश भारतीसमेत वि. विशाल भारती
- ०७३-CR-१५७८, लिखत दर्ता बदर दर्ता कायम, ब्रजेश भारतीसमेत वि. विशाल भारती

३

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७५-CR-०६४२, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. धनबहादुर थापासमेत**

जाहेरवालाहरू रामबहादुर राना, मोतीलाल राना र रामचन्द्र कुमालले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष गरेको बकपत्र हेर्दा प्रतिवादी छत्रबहादुर विश्वकर्मालाई चिन्दैनौं। प्रतिवादी धनबहादुर थापाले सेक्युरिटी गार्डमा राम्रो जागिर मिलाई दिन्छु भनी आश्वासन दिएकोले विश्वासमा परी जाहेरवाला मोतीलाल रानाले IME बाट रु. तीन लाख र हातैमा एक लाख, जाहेरवाला रामबहादुर रानाले IME बाट रु. तीन लाख र हातैमा एक लाख साठी हजार र जाहेरवाला रामचन्द्र कुमालले हातैमा पहिला एक लाख र पछि दुई लाख पचास हजार नगद रूपैयाँ वैदेशिक रोजगारको लागि मकाउ जान भनी दिएका हौं भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ। प्रतिवादी धनबहादुर थापालाई IME र बैंकमार्फत रूपैयाँ पठाएको भन्ने जाहेरवालाहरूको जाहेरी तथा बकपत्रको भनाइलाई

प्रतिवादी धनबहादुर थापाले स्वीकार गरेको देखिन्छ। प्रतिवादी धनबहादुर थापाको नाममा जाहेरवाला मोतीलाल रानाको तर्फबाट गंगा रानाले ३० जुलाई, २०१५ मा IME गरी रु.३,००,०००।- पठाएको र जाहेरवाला रामबहादुर रानाले राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक, तनहुँ शाखाबाट नगद रु. ३,००,०००।- पठाएको भन्ने मिसिल संलग्न रहेको भौचरबाट देखिँदा यी प्रतिवादी धनबहादुर थापाले बिनाइजाजत जाहेरवाला मोतीलाल राना र रामबहादुर रानासँगबाट वैदेशिक रोजगारीको लागि मकाउ पठाउँछु भनी रु. तीन / तीन लाखका दरले रकम लिएको देखिने।

जाहेरवालामध्येका रामचन्द्र कुमालले रु.३,५०,०००।-, मोतीलाल रानाले रु.१,००,०००।- र रामबहादुर रानाले रु.१,५०,०००।- प्रतिवादी धनबहादुर थापालाई नगद हातमा दिएको भनी जाहेरी तथा बकपत्र गर्दा उल्लेख गरेको भए तापनि सो रकमको सम्बन्धमा निजहरूले कुनै भरपाई वा प्रमाणसमेत पेस गर्न सकेको देखिएन। मिसिल सामेल रहेको प्रतिवादी धनबहादुर थापाको नाममा जाहेरवालाहरू मोतीलाल राना र रामबहादुर रानाले पठाएको रु. तीन / तीन लाखको IME र बैंक भौचरको प्रति बाहेक जाहेरवालाहरूले प्रतिवादीहरूलाई अन्य नगद रकम बुझाएको कुनै पनि लिखत वा प्रमाण पेस गर्न नसकेको अवस्थामा सो बिगो कायम नगरी प्रतिवादी धनबहादुर थापालाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ अनुसार १ वर्ष छ महिना कैद र रु.१,५०,०००।- जरिवाना गरी बिगोको हकमा जाहेरवालाहरू रामबहादुर राना र मोतीलाल रानाले निज प्रतिवादी धनबहादुर थापाबाट रु. तीन लाख जनही र सोको ५० प्रतिशतले हुने हर्जानासमेत भरी पाउने र बाँकी बिगोको हकमा वादी दाबी पुग्न नसक्ने भनी सुरु वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७४।१०।२३ मा भएको फैसला अन्यथा देखिन आएन। सुरु म्यादै गुजारी बसेका प्रतिवादी छत्रबहादुर विश्वकर्माको हकमा हेर्दा



मैले जाहेरवालाहरूले पठाएको रू. पाँच लाख रूपैयाँ प्रतिवादी छत्रबहादुर विश्वकर्मालाई दिएको, भरपाई केही पनि छैन भनी प्रतिवादी धनबहादुर थापाले बयानमा खुलाएको, निजउपर जाहेरी नपरेको, प्रतिवादी छत्रबहादुर विश्वकर्मालाई हामी चिन्दैनौं सबै कारोबार प्रतिवादी धनबहादुर थापासँग भएको हो भनी तीनैजना जाहेरवालाहरूले बकपत्र गरेको देखिँदा प्रतिवादी छत्रबहादुर विश्वकर्मालाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी सुरु वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट भएको फैसलासमेत मुनासिब नै देखिने ।

अतः प्रतिवादी धनबहादुर थापाउपरको किटानी जाहेरी परेको, जाहेरवालाहरूले वैदेशिक रोजगारको लागि मकाउ पठाइदिन्छु भनी प्रतिवादी धनबहादुर थापाले रकम लिएको भनी बकपत्र गरेको, प्रतिवादी धनबहादुर थापाले अनुसन्धान अधिकारी तथा सुरु वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष जाहेरवालाहरूसँग वैदेशिक रोजगारको लागि रकम लिएको भनी बयान गरेको, प्रतिवादी धनबहादुर थापाको नाममा IME र बैंकमार्फत जाहेरवाला मोतीलाल राना र रामबहादुर रानाले पठाएको पैसाको भौचर प्रति मिसिल सामेल रहेकोसमेतका आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी धनबहादुर थापालाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ अनुसार १ वर्ष छ महिना कैद र रू. १,५०,०००/- जरिवाना हुने ठहरी बिगोको हकमा जाहेरवालाहरू रामबहादुर राना र मोतीलाल रानाले निज प्रतिवादी धनबहादुर थापाबाट रू. तीन लाख जनही र सोको ५० प्रतिशतले हुने हर्जानासमेत भरी पाउने, बाँकी बिगोको हकमा वादी दाबी पुग्न नसक्ने र प्रतिवादी छत्रबहादुर विश्वकर्माको हकमा आरोपित कसुरबाट निजले सफाइ पाउने ठहरी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७४।१०।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः धनबहादुर कार्की  
इति संवत् २०७६ साल असार १५ गते रोज १ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७५-RC-००३८, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. जनकुमारी राई

बुबा चंखे भन्ने रामबहादुर राईले विगत केही वर्ष अगाडिदेखि अत्यधिक मात्रामा मादक पदार्थ सेवन गरेर घरमा आई आमा जनकुमारी राईलाई विभिन्न प्रकारको अश्लील शब्दले गाली गलौज तथा कुटपिट गर्ने गरेकोमा मिति २०७३।०२।०४ गते दिनभरी मकै गोडेर आएकी आमालाई बेलुकी बुबाले मादक पदार्थ सेवन गरेर घरमा आई विभिन्न प्रकारको अश्लील शब्दले गाली गलौज गरी कुटपिट गर्दा आमाले पनि सहन नसकेर रिस थाम्न नसकी त्यही मकै गोडेर ल्याएको कोदालोको धारपट्टिको भागले टाउकोमा प्रहार गर्दा बुबा रामबहादुर राईको घटनास्थलमा नै मृत्यु भएको हुँदा कानूनबमोजिम कारबाही गरिपाउँ भनी मृतक तथा प्रतिवादीका छोरा अमृतबहादुर राईको जाहेरी परी निजले अदालतसमक्ष समेत सोही बेहोरा उल्लेख गरी बकपत्र गरेको पाइन्छ । श्रीमान् रामबहादुर राई दिनहुँ जसो मादक पदार्थ सेवन गरेर घरमा आई मलाई विभिन्न प्रकारको अश्लील शब्दले गाली गलौज गरी कुटपिट गर्ने गरेको भए पनि श्रीमान्को नाताले सम्झाई बुझाई गर्दै आएकीमा मिति २०७३।०२।०४ गते बिहानको खाना खाएर खेतबारीमा गई दिनभरी मकै गोडेर साँझमा घर आई घरको धन्दा गर्दै खाना पकाउन लागेका बेला पनि श्रीमान् रामबहादुर राईले के कहाँबाट मादक पदार्थ सेवन गरी मातेर आई मसँग निहुँ खोजी विभिन्न प्रकारको अश्लील शब्दले गाली गलौज गरेर कुटपिट गर्न थालेकाले मलाई एक्कासी रिस उठेर रिस थाम्न नसकी त्यही मकै गोडेर ल्याई घरको बरन्डामा राखेको कोदालो टिपेर फलामको धार भएको भागले टाउकोमा प्रहार गर्दा निजको घटनास्थलमा नै मृत्यु हो । श्रीमान्लाई कोदालोले काटेर मार्छु भन्ने मनसाय थिएन भनी प्रतिवादी जनकुमारी राईले अधिकारप्राप्त

अधिकारी र अदालतसमक्ष समेत कसुर स्वीकार गरी बयान गरेको देखिने ।

मामा रामबहादुर राईले अत्यधिक मात्रामा मादक पदार्थ सेवन गरेर माइजू तथा भाइ बहिनीलाई समेत गाली गलौज गरेर कुटपिट गर्ने, घरमा बस्न नदिने गरेकाले माइजूले अर्काको बनिबुतो गरी हलो जोत्ने, घर छाउनेसम्मको काम गरी जीवन गुजारा गर्दै आउनु भएकोमा मिति २०७३।०२।०४ गते बेलुकी मामा रामबहादुर राईको मृत्यु भएको खबर पाई घटनास्थलमा पुग्दा टाउकोमा चोट लागी रगताम्मे भएको मामाको लास घरको दलानमा र आँगन तथा करेसाबारीमा समेत रगत लागेको देखी के कसरी मृत्यु भएको भनी माइजूलाई सोध्दा म दिनभरी मकै गोडेर घरमा आएका बेला मामाले मादक पदार्थ सेवन गरेर मातेर घरमा आई मलाई विभिन्न प्रकारको अश्लील शब्दले गालीगलौज गरी अर्कै मानिससँग सुतेको बात लगाएर कुटपिट गर्न थालेकाले मैले पनि रिस थाम्न नसकेर त्यही मकै गोडेर ल्याएको कोदालोले टाउकोमा हानेर ढालेकीमा केही समयपछि हेर्न जाँदा मृत्यु भएछ भनी माइजूले भन्दा थाहा पाएको हुँ भनी विमल राई तथा निशा राईसमेतले सोही बेहोरा खुलाई कागज गरिदिएको पाइन्छ । मिति २०७३।२।५ मा भएको घटनास्थल लास जाँच मुचुल्का, मिति २०७३।२।२० को वस्तुस्थिति मुचुल्कामा खुलाएको बेहोरा, The cause of death is due to head injury produced by blunt force भन्ने बेहोराको मृतक चंखे भन्ने रामबहादुर राईको पोष्टमार्टम रिपोर्ट, मौकामा बुझिएका विमल राई र माधवप्रसाद राईले अदालतमा आई गरेको बकपत्र समेतबाट प्रतिवादी जनकुमारी राईले हानेको कोदालोको प्रहारबाट मृतक रामबहादुर राईको मृत्यु भएको कुरामा विवाद नदेखिने ।

अतः माथि विवेचित आधार कारणबाट प्रतिवादीउपर आफ्नो छोराको किटानी जाहेरी परेको, प्रतिवादीले मौकामा र अदालतमा समेत बयान गर्दा

कसुरलाई स्वीकार गरी बयान गरेको, जाहेरवाला अमृतबहादुर राई तथा मौकाको कागज गर्ने वादीका गवाह विमल राई र तीलकबहादुर राईले अदालतमा आई बकपत्र गरिदिएकोसमेतका प्रमाणबाट प्रतिवादीले प्रहार गरेको कोदालोको चोटको कारणबाट मृतक रामबहादुर राईको मृत्यु भएको पुष्टि भएकोले प्रतिवादी जनकुमारी राईले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी १३(३) नं. बमोजिम कसुर गरेको देखिँदा कसुर ठहरको सम्बन्धमा सुरुले गरेको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत विराटनगर, अस्थायी इजलास ओखलढुंगाको मिति २०७४।७।२६ को फैसला मनासिब नै देखिँदा सदर हुन्छ । मुलुकी फौजदारी (संहिता) ऐन, २०७४ मा सर्वस्वको सजायसम्बन्धी व्यवस्था नरहेको र सो संहिताको दफा ४० को उपदफा (२) मा “कानूनमा कुनै कसुरबापत सर्वस्वको सजाय हुने रहेछ भने यो ऐन, प्रारम्भ भएपछि त्यस्तो कसुरमा सजाय गर्दा सर्वस्व हुने गरी सजाय गरिने छैन” भन्ने व्यवस्था रहेको र फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा “कुनै कसुरका सम्बन्धमा कसुर गर्दाका बखतभन्दा सजाय निर्धारणका बखत कानूनबमोजिम घटी सजाय हुने रहेछ भने घटी सजाय हुने गरी निर्धारण गर्नुपर्नेछ” भन्ने व्यवस्थाको सन्दर्भमा केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२) बमोजिम अब सर्वस्व गर्न नपर्ने हुँदा प्रतिवादीलाई जन्मकैदसम्म हुने ठहर गरेको फैसला कानूनअनुकूल नै देखिने ।

अब सुरु र पुनरावेदन अदालतबाट यी प्रतिवादी जनकुमारी राईलाई अभियोग दाबीबमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने गरी फैसला भए पनि मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम १०(दश) वर्ष कैद गर्ने गरी व्यक्त भएको रायका सम्बन्धमा विचार गर्दा मृतक र यी प्रतिवादी पति पत्नी भएको तथा मृतक पतिले मादक पदार्थ सेवन गरी वारदातअधिसमेत पटकपटक

अश्लील शब्दले गाली गलौज गर्दै कुटपिट गर्ने गरेको तथा वारदातको दिनसमेत मादक पदार्थ सेवन गरी दिनभरी मकै गोडी थकित भएर आएकी श्रीमतीलाई अश्लील शब्दले गाली गलौज गर्दै कुटपिट गरेको कारण पतिबाट प्रताडित (Battered woman syndrome) हुनु परेको श्रीमतीले आफूलाई उठेको रिस थाम्न नसकेर घटनास्थलमै भएको कोदालोले प्रहार गरेको अवस्थामा मृतकको मृत्यु भएको अवस्था देखिन्छ। निज प्रतिवादी अर्काको बनिबुतो गरी छोराछोरीको पालन पोषण शिक्षादिको गरी जीविकोपार्जन गरी आएकी, पतिको मृत्युको बारेमा अनुसन्धान र अदालती प्रक्रियामा समेत घटना सविस्तार उल्लेख गरी सहयोग पुऱ्याएकोसमेतलाई समष्टिगत रूपमा दृष्टिगत गर्दा श्रीमानलाई मारुपनेसम्मको रिसइवी, पूर्वयोजना, कुनै स्वार्थ र लिन खाने उद्देश्य प्रतिवादीको रहेको देखिँदैन। अपराध गर्नु पर्दाको पृष्ठभूमि, अवस्था र परिस्थितिलाई हेरी विचार गर्दा निज प्रतिवादी जनकुमारी राईलाई ऐनबमोजिम सजाय गर्दा चर्को पर्ने देखी मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तीको १८८ नं बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद सजाय गर्न राय व्यक्त गरेको उच्च अदालत विराटनगर, अस्थायी इजलास ओखलढुंगाको मिति २०७४।७।२६ को फैसला मनासिब नै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: धनबहादुर कार्की

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७५ साल फागुन १ गते रोज ४ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७५-RC-००५१, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. दिलबहादुर सिंह**

प्रतिवादीसरहका सहअभियुक्त प्रतिवादी अम्बरबहादुर सिंहलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. को कसुर अपराधमा ऐ. महलको १३(३) बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने गरी सुदुरपश्चिमाञ्चल

क्षेत्रीय अदालत, दिपायलको मिति २०४८।२।२० को फैसला सदर हुने ठहरी यस अदालतबाट समेत मिति २०५१।२।१८ मा साधक फैसला भएको देखिने।

प्रतिवादी दिलबहादुर सिंहसमेतको योजना मुताबिक मृतक पवित्रादेवीको गरगहना लुट्न निजको घरमा भएको निज दिलबहादुर सिंहले मृतक पवित्रादेवी सिंहलाई खुट्टा समाती उक्तानो पारी अम्बरले छातीमा घुँडा राखी घाँटी थिचिरहेको अवस्थामा म चन्द्रदेव जैशी कोही आउला भनी हेरी बाहिर ढोकाको चुकुल लगाई बसेको, मृतकले चिनेकाले मारेका हौं भनी अम्बरबहादुरले बताएका हुन् भनी सहअभियुक्त धनु भन्ने चन्द्रदेव जैशीले अनुसन्धान अधिकारी तथा अदालतसमक्ष समेत यी प्रतिवादी दिलबहादुर सिंहसमेतको संलग्नतामा पवित्रादेवीको हत्या गरी निजले लगाएको गरगहना लगेको हो भनी बयान गरेको, धनु भन्ने चन्द्रदेव जैशी, अम्बरबहादुर सिंह र दिलबहादुर सिंहसमेत तीनजनाले नै पवित्रादेवी सिंहलाई कर्तव्य गरी मारेकोमा मलाई विश्वास लाग्छ भन्ने रणबहादुर सिंहसमेतका मानिसहरूले मिति २०४२।२।१५ मा लेखाई दिएको सर्जमिन मुचुल्का, जाहेरी दरखास्त, लास जाँच मुचुल्का, प्रहरी प्रतिवेदनसमेतका मिसिल संलग्न प्रमाण कागजहरूबाट प्रतिवादी दिलबहादुर सिंहसमेतको कर्तव्यबाट मृतक पवित्रादेवी सिंहको मृत्यु भएको पुष्टि हुन आउने।

अतः विवेचित आधार कारणबाट प्रतिवादी दिलबहादुर सिंहसमेतको संलग्नतामा पवित्रादेवीको हत्या गरी निजले लगाएको गरगहना लगेको हो भनी प्रतिवादी धनु भन्ने चन्द्रदेव जैशीले यी प्रतिवादीसमेतलाई पोल गरी अनुसन्धान अधिकारी तथा अदालतसमक्ष बयान गरेको, यी प्रतिवादी दिलबहादुर सिंह आरोपित कसुर वारदातमा आफू संलग्न नभएको भए अदालतमा उपस्थित भई आफू उपरको आरोपलाई लगत सिद्ध गर्नुपर्नेमा सो नगरी निज प्रतिवादी हालसम्म पनि फरार रहेको, यिनै प्रतिवादीसरहका सहअभियुक्त

प्रतिवादी अम्बरबहादुर सिंहलाई प्रतिवादी धनु भन्ने चन्द्रदेव जैशीको पोलसमेतका आधारमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. को कसुर अपराधमा ऐ. महलको १३(३) बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने गरी यसै अदालतबाट समेत मिति २०५१।२।१८ मा साधक सदरसमेत भएको देखिएकोसमेतका सङ्कलित सबुद प्रमाणका आधारमा यी प्रतिवादी दिलबहादुर सिंहलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम कसुरदार ठहर्‍याई जन्मकैदको सजाय गर्ने गरी भएको सुरु बझाङ जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत दिपायलबाट मिति २०७४।१२।१८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: धनबहादुर कार्की

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७५ साल फागुन १ गते रोज ४ शुभम्।

### इजलास नं. १०

१

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७४-RC-००८०, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. ताक्सी लामा तामाङ**

प्रतिवादी ताक्सी लामा तामाङ तथा जाहेरवाला एवम् मृतकसमेतका मानिसहरू मिति २०४४।०७।०३ मा गंगाप्रसाद ढकालको घरमा तास खेली बसेको अवस्थामा रुद्रप्रसाद पौडेलले जहरमानसँग रु. ५।- माग्दा रु.१० को नोट दिई सो १० रुपैयाँ साटनका लागि वर्दसेर राईलाई दिँदा निजले च्यातिदिएका कारण विवाद भएको अवस्थामा सो विवाद बढ्न गई त्यसमा संलग्न हुन पुगेका चामहर्क राईलाई यी प्रतिवादी ताक्सी लामा तामाङले कोदालाको पासोले हानेपछि निज चामहर्क राई बेहोस भई लडेकोमा पछि उठी घरतिर गएको र

भोलिपल्ट निजको मृत्यु भएको भन्ने जाहेरी बेहोरा रहेको देखिन्छ। मौकामा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष कागज गर्ने मानिसहरू धनबहादुर राई, जहरमान लामा तामाङसमेतले प्रतिवादी ताक्सी लामा तामाङले कोदालोको पासोले हिर्काएको कारण चामहर्क राईको मृत्यु भएको हो भनी लेखाएको देखिन्छ। मृतकको श्रीमती कृष्णमाया राईले समेत मौकामा कागज गर्दा प्रतिवादीकै चोट प्रहारबाट मृतकको मृत्यु भएको हो भनी लेखाएको देखिन्छ। वादी पक्षका साक्षी घटनाका प्रत्यक्षदर्शी गोकुलबहादुर भुजेलले मृतक चामहर्क राईलाई प्रतिवादी ताक्सी लामा तामाङले कोदालोको पासोले टाउकोमा हानेको म आफैँले देखेको हुँ। सोही कुटाइको कारण मृतकको मृत्यु भएको हो भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ। मृतकको टाउकोमा दाहिनेपट्टि कानको केही माथि सुन्निएको जस्तो देखिएको भन्ने बेहोराको मृतकको लासजाँच प्रकृति मुचुल्का रहेबाट प्रतिवादीउपरको अभियोग दाबी पुष्टि भएको देखिने।

घटना वारदातका प्रत्यक्षदर्शी गोकुलबहादुर भुजेलले अदालतमा गरेको बकपत्र, लास जाँच प्रकृति मुचुल्का, मृतककी श्रीमती कृष्णमाया राई, अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष कागज गर्ने मानिसहरू धनबहादुर राई, यी प्रतिवादीकै दाजु जहरमान तामाङको भनाइ, सहप्रतिवादी सरणबहादुर तामाङसमेतको बयान, लासजाँच प्रकृति मुचुल्कासमेतका प्रमाणबाट यी प्रतिवादी ताक्सी लामा तामाङले नै मृतक चामहर्क राईलाई कोदालाको पासोले हानी सोही चोटका कारण मृतकको मृत्यु भएको देखिँदा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(१) को कसुर स्थापित हुन आएको देखिँदा कसुर कायम गरेको हदसम्म सुरु खोटाङ जिल्ला अदालतको मिति २०७३।८।१९ को फैसला र सो सदर गरेको उच्च अदालत विराटनगर अस्थायी इजलास ओखलढुंगाको मिति २०७४।४।३२ को फैसला मिलेकै देखिने।

प्रतिवादीले मृतकलाई मार्नु पर्नेसम्मको

पूर्वरिसइवी र मनसाय रहे भएको भन्नेसमेत कहींकतैबाट नदेखिएको र वारदातमा जोखिमी हतियारको प्रयोग नभई कोदालाको पासोको प्रयोग भएको, वारदात २०४४।७।३ को भई लामो समय मुललबी रहेको, तत्कालीन अवस्थामा यी प्रतिवादीको विवाह नभएको कलिलो उमेरको व्यक्ति देखिएकोमा लामो समयको अन्तरालमा हाल निजको विवाह भई परिवार, छोरा छोरीसमेत रहेको भन्ने भई यस अवस्थामा ऐनबमोजिम सजाय गर्दा चर्को पर्न जाने देखियो। तसर्थ यस सन्दर्भमा मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम यी प्रतिवादी ताक्सी लामा तामाडलाई ८ वर्ष कैद गर्दा पनि न्यायको मक्सद पूरा हुने देखिँदा निज प्रतिवादी ताक्सी लामा तामाडलाई ८ वर्ष कैद सजाय हुने।

इजलास अधिकृत: ताराकुमारी शर्मा

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७५ साल चैत २८ गते रोज ५ शुभम्।

२

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७५-CI-०६७३, निषेधाज्ञा, कृष्णबहादुर गुरुङ वि. फागुराम आलेमगर**

कि.नं ८८९ र ८९० को सिमानामा विवाद भई यिनै निवेदक र विपक्षी भएको जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइ पाउँ भन्ने तनहुँ जिल्ला अदालतमा मुद्दा परी वादी दाबी नपुग्ने ठहर भई तहतह हुँदै सर्वोच्च अदालतबाट समेत दोहोर्नाई हेर्ने अनुमति प्राप्त नभएकोसमेतबाट खिचोला मुद्दा अन्तिम भएको मिसिल संलग्न कागजातबाट देखियो। अर्कोतर्फ विपक्षी प्रत्यर्थीले आफ्नो कि.नं ८८९ को जग्गामा कम्पाउन्ड लगाइसकेको भन्ने मिसिल संलग्न लिखित जवाफसाथ पेस गरेको फोटोबाट समेत देखिने।

निषेधाज्ञाको आदेश जहिले पनि कसैको कानूनी हक हनन हुनसक्ने आशङ्काको अवस्थामा जारी हुने आदेश हो। विपक्षीले लिखित जवाफसाथ पेस

गरेको फोटोहरूसमेतबाट उक्त विवादित स्थानमा काम सम्पन्न भइसकेको देखियो। यसरी प्रत्यर्थीले आफ्नो जग्गा छुट्टाई आफ्नो जग्गामा पर्खाल लगाइसकेको सम्बन्धमा अदालतमा पेस भएको प्रमाणबाट समेत निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरी रहन परेन, रिट निवेदन खारेज हुन्छ भनी पुनरावेदन अदालत पोखराबाट भएको आदेश मिलेकै देखिने।

अतः उल्लिखित आधार कारणसमेतबाट आफ्नो जग्गा छुट्टाई आफ्नो जग्गामा पर्खाल लगाइसकेको देखिएको र निवेदकले माग दाबी लिएको विषयमा कार्य सम्पन्न भइसकेको भन्ने देखिएको भनी रिट खारेज हुने ठहर्नाएको पुनरावेदन अदालत पोखराबाट मिति २०७५।२।२ मा भएको आदेश मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: शारदादेवी पौडेल

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७६ साल असार १ गते रोज १ शुभम्।

३

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७३-CI-०९४४, अंश चलन, रामझरिया थरुनीसमेत वि. जोधा चौधरीसमेत**  
वादी र प्रतिवादीहरूबिच नातामा विवाद देखिँदैने। यिनीहरूबिच विधिवत् रूपमा अंशबन्डा भएको भन्ने कहींकतैबाट देखिँदैने। यी वादी प्रतिवादीका बाबु सुदन चौधरी र आमा फुल्की चौधरीको प्रतिउत्तर बेहोराबाट पनि यिनीहरूबिच हालसम्म अंशबन्डा नभएको भन्ने नै देखिन्छ। पुनरावेदक प्रतिवादी रामलाल र रामझरियाले समेत आफूहरूबिच अंशबन्डा भएको भनी भन्न सकेको अवस्था छैन। यस अवस्थामा यी वादी प्रतिवादीहरूबिच अंशबन्डा गर्ने गरेको फैसलालाई अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिने।

रामलाल चौधरी र रामझरिया थरुनीको नाउँमा रहेका बकसपत्रबाट प्राप्त कि.नं. ३४८ र ३५०को जग्गा बन्डा गरेको मिलेको छ छैन भनी

सोतर्फ हेर्दा उक्त कि.नं. का जग्गा यी पुनरावेदक प्रतिवादीहरूले मिति २०४३।१।१०४ मा आफ्नो जेठो बाबु / ससुरा नारायण खाँबाट बकसपत्रबाट प्राप्त गरेको देखिन्छ । उक्त मितिमा यी वादी प्रतिवादीका बाबुहरू विधिवत् रूपमा अंशबन्डा भई भिन्न भएको देखिँदैन । मिति २०४६।३।१२ मा मात्र यी वादी प्रतिवादीहरू बाबु सुदन चौधरीले आफ्नो दाजु वादी प्रतिवादीका जेठो बाबु नारायण खाँबाट अंश भरपाई गरी छुट्टी भिन्न भएको देखिन्छ । यसरी वादी प्रतिवादीका बाबु सुदन चौधरीले मिति २०४६।३।१ मा अंश भरपाई गरी दाजु नारायण खाँबाट छुट्टी भिन्न भएबाट सो मिति सम्म वादी प्रतिवादीका बाबुहरू सगोलमै रहेभएको भन्ने देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा सगोलका जोसुकैका नाउँमा रहेको सम्पत्ति सगोलको सम्पत्ति मान्नु पर्ने हुन्छ । यही सगोलमा रहेको अवस्थामा सगोलको सम्पत्ति प्रतिवादी सुदनका दाजु, फुल्कीका जेठाजु, पुनरावेदक प्रतिवादीहरू र प्रत्यर्थी वादीहरूका जेठा बाबु नारायण खाँले आफ्नो नाउँमा रहेका उल्लिखित कि.नं.३४८ र ३५० का जग्गाहरू भाइका जेठा छोरा र बुहारी रामलाल चौधरी र रामझरिया थरुनीलाई बकसपत्र पास गरी दिएबाट बाबु सगोलमा रहँदाकै अवस्थामा प्राप्त भएको देखिन्छ । यसबाट वादी प्रतिवादीका बाबु सुदन चौधरी र आमा फुल्की चौधरीले आफ्नो भागमा पर्ने अंश स्वरूप उक्त जग्गा दाजु नारायण खाँबाट जेठा छोरा बुहारीको नाउँमा लिएको हो भनी प्रतिउत्तरमा लिएको जिकिर पुष्टि हुने देखिने ।

अतः फिराद दाबीबमोजिम प्रतिवादीहरूबाट पेस भएको तायदाती फाँटवारीमा उल्लिखित सम्पूर्ण जग्गाहरूलाई ६ भाग लगाई ६ भागको ३ भाग अंश वादीहरूलाई दिलाई चलनसमेत चलाइ पाउने ठहर गरी सुरु सुनसरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।६।१५ मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको मिति २०७०।१।१६

को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: ताराकुमारी शर्मा

कम्प्युटर: मञ्जु खड्का

इति संवत् २०७५ साल फागुन १२ गते रोज १ शुभम् ।

४

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी**, ०७५-WH-०२१२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण ईश्वर पल्ली मगर वि. धादिङ जिल्ला अदालत, धादिङसमेत

निवेदक ईश्वर पल्ली मगरलाई धादिङ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलाले बिगोबमोजिम रु. ३,२३,०००।- जरिवाना गरी सो जरिवानाबापत कैदमा नै राख्ने भनी स्पष्ट रूपमा बोलिसकेको अवस्थामा साबिक मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको महलको ३८(१) नं. बमोजिम नै कैदी पुर्जी दिनुपर्ने हुन्छ । सो जरिवानाबापत कैद नै हुने भन्ने फैसला भएकोबाट सो जरिवानाबापत के कति कैद हुने भन्ने प्रश्नसम्म रहेकोमा सुरु अदालतको तहसिल शाखाबाट पनि मिति २०७५।९।३० मा यी निवेदकको हकमा साबिक मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको महलको ३८(१) नं. बमोजिम नै कैद वर्ष ४ कायम गरी कैदी पुर्जी दिएकोमा सर्वोच्च अदालतको मिति २०७५।१०।१० को परिपत्रबमोजिम पुनः २०७५।१।३० मा मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १६५(८) बमोजिमको संशोधित कैदी पुर्जी पठाएको देखिँदा सुरु अदालतबाट यी निवेदकको हकमा जारी गरेको कैदी पुर्जी कानूनसम्मत नै रहेको देखिने ।

साबिक मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको महलको ३८(२) नं. को व्यवस्था मूलतः कुनै व्यक्तिलाई कुनै कसुरमा जरिवाना मात्रको सजाय भई जरिवाना नतिरेको अवस्थामा मात्र लागू हुन्छ । तर यी निवेदक ईश्वर पल्ली मगर साबिक मुलुकी ऐन, चोरीको २० नं. बमोजिमको कसुरमा रु. ३,२३,०००।-

जरिवाना भई सो जरिवानाबापत कैदमा नै बस्नु पर्ने भनी स्पष्ट रूपमा फैसलाले नै बोलिसकेको अवस्था छ। फैसलामा व्यक्त बोलीबाट यी निवेदकले आफूलाई लागेको उक्त जरिवानाबापतको रकम मात्र तिरी बुझाई फौजदारी दायित्वबाट उम्कन सक्ने स्थिति यो होइन। त्यसकारण पनि निजको हकमा साबिक मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको महलको ३८(२) नं. को व्यवस्था आकर्षित नभई ऐ. महलको ३८(१) नं. को व्यवस्था नै आकर्षित हुने देखिने।

यसरी चोरीको २० नं. को कसुर कायम भई बिगोबमोजिम जरिवाना भई जरिवानाबापत कैदमा नै बस्नुपर्ने भनी स्पष्ट रूपमा फैसलामा बोलिसकेको स्थितिमा दण्ड सजायको ३८(१) नं. को व्यवस्था नै आकर्षित हुने हुँदा त्यस्ता कसुरमा चोरीको १४(३) नं. तथा दण्ड सजायको ३८(२) नं. को व्यवस्था लागू गरी प्रतिवादीलाई निजको फौजदारी दायित्वबाट मुक्त गर्न मिल्ने नदेखिने।

निवेदक ईश्वर पल्ली मगरले प्रस्तुत बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट निवेदन मिति २०७६।३।१४ मा यस अदालतमा दर्ता गराएको देखिन्छ। मुलुकी फौजदारी संहिता, २०७४ को दफा १६५(८) मा बिगो रकमलाई कैदमा परिणत गर्दा एक दिनको तीन सय रुपैयाँका दरले कायम गरी कैद गर्नुपर्ने भनी व्यवस्था गरेको पाइन्छ। यसै कानूनी व्यवस्थालाई कार्यान्वयन गर्नका लागि सर्वोच्च अदालतबाट च.नं. १८४१ मिति २०७५।१०।१० मा सबै अदालतहरूमा यससम्बन्धी परिपत्रसमेत जारी भएको स्थिति हुँदा यी निवेदक ईश्वर पल्ली मगरलाई सुरु धादिङ जिल्ला अदालतको तहसिल शाखाबाट मिति २०७५।१।३० मा निजको नाउँमा बेरुजु रहेको कैद ३ वर्ष १० महिना २८ दिनको पहिलो कैदी पुर्जा र पुनः मिति २०७५।१।३० मा मुलुकी फौजदारी संहिता, २०७४ को दफा १६५(८) बमोजिम यी निवेदकलाई फैसलाले लागेको जरिवाना रु.३,२३,०००।- बापतमा १ दिनको रु. ३००।-

का दरले हुन आउने कैद २ वर्ष ११ महिना १८ दिन कायम हुने भनी कारागार कार्यालय, धादिङमा पठाएको संशोधित कैदी पुर्जा दिएको देखियो। उक्त कैदी पुर्जा कानूनसम्मतको नै देखिँदा बदर गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने।

अतः उल्लिखित आधार कारणसमेतबाट यी निवेदक ईश्वर पल्ली मगरलाई सुरु धादिङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।१।३० मा दिइएको कैदी पुर्जालाई संशोधन गरी पुनः मिति २०७५।१।३० मा दिइएको संशोधित कैदी पुर्जासमेत कानूनसम्मतको नै देखिँदा निवेदन मागबमोजिमको बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नु परेन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर: मञ्जु खड्का

इति संवत् २०७६ साल साउन ७ गते रोज ३ शुभम्।

५

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा**, ०७२-सी-१५३९, राष्ट्रिय वनको जग्गाको दर्ता बदर, *गोविन्दप्रसाद सापकोटासमेत वि. शंकरनगर सामुदायिक वन उपभोक्ता समिति, रूपन्देही वन सुदृढीकरण उच्चस्तरीय आयोगले मिति २०४६।१०।१७ मा गरेको निर्णयबाट सिर्जना भएको प्रस्तुत विवाद र प्रस्तुत विवादसँग सरोकार राख्ने मुद्दाका पक्षहरू २०५२ सालदेखि नै मुद्दामा संलग्न रहे भएको पाइन्छ। एकातर्फ पुनरावेदकहरू आफूले आयोगबाट पाएको जग्गा भनिरहेका छन् भने विपक्षीहरूको जिकिर हेर्दा साबिक आनन्दवन गा.पं. को हाल शंकरनगर वडा नं. "३अ" भन्ने उल्लेख भई नापी नै भएको छैन, भन्ने छ। मिसिल संलग्न फोटाहरू हेर्दा सो क्षेत्रमा हुर्केका रुखसहितको घना जंगल देखाइएको छ र सो क्षेत्रमा पुनरावेदकहरूले घरबास खेतीपाती आदि केही गरेका छैनन् भन्ने जिकिर लिइएको छ। साथै सामुदायिक वन भनी दुईवटा उपभोक्ता समितिहरू*

कार्यरत रहेको भन्ने पनि कुरा उठाइएको छ । यसरी २०५२ सालदेखि हालसम्म मुद्दाका पक्षहरूले मुद्दा खेपिरहेका र हैरानी बेहोरी रहेको अवस्था देखियो । यस स्थितिमा पनि उच्च अदालत आफैँले हेरी मुद्दाको टुङ्गो लगाउनु पर्ने देखिने ।

जिल्ला वन कार्यालयबाट मिति २०६५।२।२५ मा भएको नाप नक्सा मुचुल्कामा प्रतिवादीहरूलाई संलग्न गरी गराई निजहरूलाई मुचुल्काको रोहबरमा राखी सहिछाप गराएको पनि देखिँदैन । यस अवस्थाले एकतर्फी रूपमा नाप नक्सा भएको भन्ने नै देखिन आयो । प्रमाण संकलनको कार्य गर्दा मुद्दाका पक्षहरूलाई मौकामा नै सो कार्यको जानकारी हुनु पर्ने, पक्षहरूलाई सहज उपस्थितिको कार्य वातावरणमा कार्य सम्पन्न भएमा न्यायिक कार्यले स्वच्छता पाउने र देखिने हुन्छ । कार्यविधि कानून प्रयोग गर्दा स्वच्छतामा आधारित र केन्द्रित हुनु पर्ने हुन्छ । स्वच्छता नै न्यायको आधार हो । साथै पुनरावेदन अदालतबाट मिति २०६०।३।३१ मा र सर्वोच्च अदालतबाट मिति २०६३।१०।२६ मा भएको फैसलाको मूल उद्देश्य पनि मुद्दाका पक्षहरूबिचमा विवादको सुनुवाइ हुँदा स्वच्छ र शीघ्र सुनुवाइ हुनुपर्छ भन्ने नै देखिने ।

अतः उल्लेख भएको कानूनी व्यवस्था एवम् पृष्ठभूमिसमेतलाई विचार गर्दा प्रस्तुत विवादका सम्बन्धमा उच्च अदालतबाट नाप नक्सालगायत आवश्यकताअनुसार जो जो बुझ्नुपर्ने हो बुझी निर्णय गर्दा विवादको विषय छिटोछरितो रूपमा टुङ्गो लाग्न सक्ने हुँदा पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट निर्णयका लागि पुनः जिल्ला वन कार्यालयमा पठाउने भनी भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी गरी दिइएको छ । अब न्याय प्रशासन ऐन, २०७३ को दफा १४ समेतको व्यवस्था र प्रचलित कानूनबमोजिम विवादित जग्गाको नाप नक्सालगायत विवादको विषयमा जो बुझ्नु पर्ने हो बुझी उच्च अदालत दाङ, बुटवल इजलासबाट

पुनः इन्साफ गर्नु भनी मुद्दाका पक्षहरूलाई तारेख तोकी मिसिल उच्च अदालत तुलसीपुर दाङ, बुटवल इजलासमा पठाई दिने ।

इजलास अधिकृत: डोलनाथ न्यौपाने  
कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७६ साल असार २४ गते रोज ३ शुभम् ।

इजलास नं. ११

१

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या. श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७५-WH-०१७७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, राजकुमार खड्गी वि. ललितपुर जिल्ला अदालत, (तहसिल शाखा) समेत

ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मुलतबी जगाई मिति २०७०।१।१२६ मा पहिलो पटक निवेदक राजकुमार खड्गीलाई कैद वर्ष २ (दुई) र जरिवाना रु.१,००,०००।- (एक लाख) हुने ठहरी फैसला भई फरारी भएको कारणले निजको नाममा लगत कसिएको भन्ने र दोस्रो मुद्दामा मिति २०७३।१।१४ को फैसलाले ३ (तीन) वर्ष कैद रु.१,५०,०००।- (एक लाख पचास हजार) जरिवानाको सजाय भएको भन्ने देखिन्छ । यसरी पहिलो मुद्दामा निवेदक फरार रहेको भन्ने बेहोरालाई स्वयम् निवेदकले स्वीकारेको अवस्था एकातर्फ देखिन्छ भने अर्कोतर्फ दोस्रो घटनालाई लिएर त्यसमा भएको फैसलाले अर्को सजाय तोकिएको पाइन्छ । यसरी मिति २०७३।१।१४ मा भएको फैसलाअनुसार लागेको सजायबापत कैदको हकमा कैद बसी भुक्तान गरिसकेकोले पहिला भएको फैसलाअनुसारको कैद त्यसैमा गाभी कैदको हद तोकी कैद असुल गर्नुपर्नेमा छुटै कैद असुल गर्ने काम भयो भनेको सन्दर्भमा मिति २०७०।१।१२६ मा निवेदकउपर चलेको लागु औषध मुद्दामा निवेदक हाजिर भई पैरवीमा नबसी फरार रही फरारीकै



हैसियतमा सो मुद्दा फैसला भएको अवस्थामा दण्ड सजायको ४१ नं. को कानूनी प्रावधानबमोजिम फरारी रहेको कारणबाट कैदको हद तोकी अरु मुद्दामा भएको कैदसमेत गाभिने सुविधा र सहूलियत निवेदकलाई प्राप्त हुने अवस्था देखिँदैन । दण्ड सजायको ४१ नं.को सो व्यवस्थाअनुसार सुविधा प्राप्त गर्नलाई फरारीको अवस्था नभएको हुनैपर्छ । जहाँसम्म मलाई कैदको सजाय तोकी पठाउँदा पहिलेको लगत नहेरी किन ३ (तीन) वर्ष कैद र रु.१,५०,०००।- (एक लाख पचास हजार) जरिवाना मात्र तोकेर पठाइयो भन्ने निवेदकको भनाइ रहेको छ, सो भनाइले लागेको सजाय कैद र जरिवाना असुल गर्ने कुरामा कुनै तात्त्विक फरक पार्नेसमेत देखिँदैन । अदालतले निवेदकलाई लागेको लगतबमोजिमको कैद र जरिवाना असुल गर्ने प्रक्रियाअन्तर्गत निवेदकलाई पक्राउ गरी कैदमा राख्न पठाएको र कैदको हद माग गर्ने निवेदकले पहिले चलेको मुद्दामा रूजु हाजिर थिएँ भनी भन्न नसकी फरार रहेको कुरालाई र आफूले सो अपराध गरेको तथ्य उक्त पहिलो मुद्दामा लागेको जरिवाना दाखिल गरेबाट पनि स्वयम् स्वीकारेको अवस्था हुँदा निवेदकको हकमा दण्ड सजायको ४१ नं. को अन्तिम हरफमा भएको व्यवस्था आकर्षित हुने नदेखिने ।

निवेदक राजकुमार खड्गीको निवेदन बेहोराबाट नै पटकपटक कसुर अपराधको वारदात भई कसुर कायम भएको उल्लेख भएको देखिँदा त्यसतर्फ अरु विवेचनाको आवश्यकता देखिँदैन । मूल कुरा निवेदकउपर अभियोगपत्र दायर भएको अवस्थामा अदालतमा पुर्पक्षको लागि उपस्थित थिए वा फरार थिए भन्नेतर्फ हेर्दा, मिति २०६७।३।११ मा चलेको मुद्दामा मिति २०६८।५।१८ गते फैसला हुँदा यी निवेदकको हकमा मुलतबी रहेको र मिति २०७०।१।२६ मा २(दुई) वर्ष कैद र रु.१,००,०००।- (एक लाख) जरिवाना हुने ठहरी फैसला भएको र जरिवाना तिरिसकेको भनी निवेदक स्वयम्ले निवेदनमा उल्लेख

गरी लेखाएको देखिन्छ । सो मिसिलमा निज पुर्पक्षको लागि उपस्थित रहेको भन्ने नदेखिँदा फरारी रहेको भन्ने देखिँदा फरारी अवस्थामा निवेदकबाट भएको कसुरजन्य अर्को वारदातको सन्दर्भमा निर्णय हुँदा निजलाई तोकिएको सजायमा दण्ड सजायको ४१ नं. को व्यवस्थाले फरारी रहेको मिसिलमा तोकिएको कैद सजाय गाभिन नसक्ने भई थपिने देखिँदा फैसलाले तोकिएको कैदको सबैभन्दा ठूलो हदमा अरु कैदको सजाय नगाभी कैदमा थप गरी गैरकानूनी थुनामा राखिएकोले बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरी गैरकानूनी थुनाबाट मुक्त गरिपाउँ भन्ने निवेदकको मागदाबीमाथि विवेचना भई उल्लेख भएको आधार प्रमाण र कारण तथा कानूनी व्यवस्थासमेतबाट उपयुक्त र मनासिब नदेखिँदा निवेदकको माग दाबीबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहनु नपर्ने ।

अतः फरारीका हकमा फरारीको अवस्थामा अर्को कुनै कसुर कायम भई कैद सजाय तोकिएकोमा अघि फरारी अवस्थामा तोकिएको कैद सजाय पछिल्लो मुद्दामा तोकिएको कैद सजायको हदमा मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको ४१ नं. को कानूनी व्यवस्थाबमोजिम गाभिने नभई थपिने देखिँदा निवेदकको निवेदन मागदाबीबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुनुपर्दछ भन्ने निवेदकतर्फबाट बहसमा उपस्थित विद्वान् अधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन । तसर्थ बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी भई गैरकानूनी थुनाबाट मुक्त हुन पाउँ भन्ने निवेदकको प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: दिपेन्द्रनाथ योगी

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७६ साल जेठ ९ गते रोज ५ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही, ०७५-RC-००२३, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. रामबहादुर थापा मगर

प्रस्तुत मुद्दामा मृतक मेनुका थापा मगरको टाउको तथा कञ्चटसमेतमा धार नभएको हतियारले हानेको चोट छन् । घाँटीमा धारिलो हतियारले काटेको चोट रहेका छन् । मृत्युको कारणमा समेत यिनै घाउ चोट रहेकोमा प्रतिवादी साबित छन् । जाहेरवाला तथा मौकामा कागज गर्ने मदन थापा मगर, मनिका घलेसमेतका व्यक्तिको भनाइले प्रतिवादीको भनाइसँग तादम्यता रही मिसिल प्रमाणबाट निर्विवाद रूपमा घाँटी तथा टाउकोमा प्रतिवादीले छोडेको तथा काटेको गहिरो चोटबाट कर्तव्यमा परी प्रतिवादीकी कान्छी पत्नी मृतक मेनुका थापामगरको मृत्यु भएकोमा घटना भवितव्यबाट भएको हो कि भन्ने आशङ्का गर्नुपर्ने अवस्थासमेत नपाइने ।

घटना प्रकृति मुचुल्का तथा घटनाको अवस्थार्तर्फ विचार गर्दा प्रतिवादीको दुई पत्नी भएकोमा सधैं निजहरूको बिचमा झगडा हुने गरेकोमा सोको प्रमुख कारण मृतक नै भएको ठानी मार्ने योजना बनाई रातको समयमा पत्नी सुती निदाएको मौका पारी पहिले फलामको मार्तोलले टाउको कञ्चटसमेतमा प्रहार गरी घाइते बनाई तत्पश्चात् फलामको धारिलो हतियार खुकुरीले घाँटीमा रेटी जघन्य तरिकाबाट पूर्वयोजनाअनुसार कर्तव्य गरी मारेको प्रस्ट देखिन्छ । प्रतिवादीको क्रियाको परिणाम कसैको मृत्यु हुनुबाहेक अन्यको कल्पनासमेत गर्न सकिने अवस्था छैन । जुन मानवीय संवेदनाभन्दा बाहिरको क्रूर प्रकृतिको क्रिया भएको सामान्य समझ भएको व्यक्तिले समेत इन्कार गर्न सक्ने देखिँदैन । त्यस्तो अवस्थामा कानूनको भावना तथा मर्मविपरीत प्रतिवादी अदालतमा समेत साबित भएको; सोबाहेक प्रतिवादीको अन्य विकल्प नरहेको भन्ने मात्र आधारमा सजाय घटाई पाउँ भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरलाई कानूनसम्मत भन्न मिलेन भनी पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसलामा राय व्यक्त भई यी प्रतिवादीको कर्तव्यबाट मृतक मेनुका थापा मगरको मृत्यु भएको देखिन्छ । विभत्स तरिकाबाट

आफ्नै कान्छी श्रीमतीको योजनाबद्ध तरिकाबाट हत्या गरेको देख्ने प्रत्यक्षदर्शी साक्षीको रूपमा छोरी रहेको अवस्था छ । तत्काल प्राप्त प्रमाणहरू, छोरीको बकपत्र, हतियार आदिको बरामदीको अवस्थामा थप प्रमाणको आवश्यकता नरहेकोमा अदालतमा आई साबिती बयान गर्दैमा पुनरावेदन मागबमोजिम सजायमा छुट दिनु उचित नहुने देखिन्छ । अतः पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७३।१०।१० को फैसला साधकको रोहमा सदर हुने ।

प्रतिवादी राजकुमार थापा मगरलाई उच्च अदालत पाटनले सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुन्छ भनी गरेको फैसला नमिलेको सम्बन्धमा हेर्दा नयाँ कानूनको प्रारम्भ भइसकेको अवस्थामा मुलुकी ऐन, २०२० मा भएको ज्यानसम्बन्धी महलको १३ (१) बमोजिम प्रतिवादी रामकुमार थापा मगरलाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने गरेको फैसला मिलेकै देखिए तापनि मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४० को उपदफा (२), फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ र केही नेपाल कानूनलाई संशोधन एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९ को उपदफा २ को खण्ड (ख) मा रहेको व्यवस्था तथा उक्त ऐनहरू २०७५ भाद्र १ गतेदेखि लागू भइसकेको सन्दर्भमा प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी रामबहादुर थापा मगरलाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय नहुने भई निज प्रतिवादीलाई जन्मकैदको सजाय मात्र हुने ।

इजलास अधिकृत: डिल्लीराम प्रसाई

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७५ साल पुस १७ गते रोज ३ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७०-CR-१६६९, ठगी, नेपाल सरकार वि. कमला खड्का

बैङ्कमा रहेको आफ्नो खातामा काटिएको

चेकबमोजिमको निक्षेप छैन वा निक्षेप भए पनि पर्याप्त छैन भन्ने जानीजानी कुनै व्यक्तिले चेक काटी कसैलाई दिएमा र त्यसरी दिएको चेकको भुक्तानीको लागि सम्बन्धित बैङ्कमा जाँदा पर्याप्त निक्षेप नभएको कारणबाट बैङ्कबाट चेक अनादर भएमा चेक काट्ने व्यक्तिबाट चेकमा उल्लिखित रकम र ब्याजसमेत धारकलाई भराई चेक काट्ने व्यक्तिलाई सजायसमेत गर्न सक्ने व्यवस्था विनिमेय अधिकारपत्र ऐन, २०३४ को दफा १०७(क) मा भएको पाइन्छ । खातामा रकम नभएको जानीजानी चेक काट्ने कार्य बैंकिङ कसुरअन्तर्गत पर्छ कि भन्नलाई पनि बैंकिङ कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा ३(ग) मा मिति ०७३।६।१८ मा भएको पहिलो संशोधनपश्चात् मात्र त्यस्तो अवस्थालाई बैंकिङ कसुर भनिएको र यस मुद्दासँग सम्बन्धित चेक उक्त संशोधित अगावैको हुँदा उक्त संशोधित व्यवस्था प्रस्तुत विवादमा आकर्षित हुने पनि देखिँदैन । अब यी जाहेरवालसँग कुनै कानूनी उपचार छ छैन भन्ने सम्बन्धमा हेर्दा, चेक अनादर मुद्दा सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को अनुसूचीमा समावेश नभई दुनियावादी भई चल्ने प्रकृतिको देखिएकाले सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम जाहेरवालाहरूले प्रस्तुत मुद्दा विनिमेय अधिकार पत्र ऐन, २०३४ को दफा १०७(क) अनुसार कारबाही चलाउन सकार गरेमा निज जाहेरवालाहरूलाई वादी पक्ष कायम गरी प्रस्तुत मुद्दाको मिसिलबाटै चेक अनादरतर्फ कारबाही किनारा गरी दिने ठहर्‍याई भएको काठमाडौं जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई भएको पुनरावेदन अदालत पाटनबाट फैसला भएबाट यी जाहेरवालाहरूले कानूनी उपचार पाउने बाटो खुलेकै देखिने ।

प्रस्तुत मुद्दाको तथ्य तथा मुद्दा दोहोर्‍याउने निस्सामा उल्लिखित मुद्दाको तथ्यमा एकरूपता नभएकोबाट सो निस्सामा खेमराज भट्ट वि. नेपाल सरकार भएको २०६४ सालको फौ.पु.नं. ०५३२,

फैसला मिति ०६७।३।१ (स.अ.बुलेटिन २०६७, वर्ष १९, अङ्क १५ मङ्सिर १, पूर्णाङ्क ४४१३ पृ.२७) उल्लिखित आधारसँग तथा पुनरावेदन जिकिर एवम् नेपाल सरकारको तर्फबाट उपस्थित उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७०।४।३१ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: हिरा डंगोल

कम्प्युटर: अभिषेककुमार राय

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १३ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. १२

१

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७२-CR-११५२, जबरजस्ती र नकबजनी चोरी, नेपाल सरकार वि. छेदा रानासमेत

प्रस्तुत मुद्दामा अभियोगपत्रको प्रमाण खण्डमा उल्लिखित प्रतिवेदक, बरामदी मुचुल्कामा साक्षी बस्ने व्यक्तिहरू, वस्तुस्थिति मुचुल्का र मूल्य मुचुल्कामा साक्षी बस्ने व्यक्तिहरूलाई वादी पक्षले अदालतसमक्ष उपस्थित गराई बकपत्र गराउन सकेको देखिँदैन । त्यसैगरी प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १८ बमोजिम अदालतसमक्ष परीक्षण नभएको साक्षी प्रमाणलाई प्रमाणको रूपमा ग्रहण गरी त्यस्तो प्रमाणलाई आधार बनाई फौजदारी अपराधमा कसुर ठहर्‍याउन मिल्ने हुँदैन । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरूले अदालतमा आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरेका छन् भने यस्तो अवस्थामा अदालतसमक्ष उपस्थित भई परीक्षण नै नभएको साक्षी प्रमाणको अभावमा अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष भएको प्रतिवादीहरूको साबिती बयान र बरामदी मुचुल्काको आधारमा मात्र प्रतिवादीहरूलाई

दोषी मानी आपराधिक दायित्व वहन गराउनु फौजदारी न्यायको सिद्धान्तबमोजिम मिल्ने नदेखिने ।

तसर्थ, माथि विवेचित मुद्दाको तथ्य, आधार, कारण र प्रमाणहरूबाट समेत प्रतिवादीहरू छेदा राना र भतिज भन्ने रामनिवास रानाले अभियोग माग दाबीबमोजिम चोरी गरेको पुष्टि नभएको भनी अभियोग माग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्‍याएको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत दिपायलको मिति २०७२।६।१० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

साथै प्रतिवादी पिन्टु भन्ने श्रवण रानाले पुनरावेदन गरेको नभए तापनि परिवर्तित कानूनी व्यवस्थाको हकमा विचार गर्नु मनासिब नै देखिँदा सुरु कैलाली जिल्ला अदालतले प्रतिवादी पिन्टु भन्ने श्रवण रानालाई साबिक मुलुकी ऐन, चोरीको महलको १२ र १४(१)(२) नं. बमोजिम ४ महिना १५ दिन कैद र रु.३,५९,२५०/- जरिवाना हुने र ऐजको १४(२) नं. बमोजिम जरिवाना बापतसमेत कैद हुने हुँदा जम्मा ४ वर्ष ४ महिना १५ दिन कैद भई सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको तपसिलको देहाय (१) बाट मिति २०७५।९।१५ मा कैद भुक्तानसमेत भइसकेको देखिँदा परिवर्तित कानून मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २४२ र केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२) (ख) बमोजिम घटी सजाय हुनेतर्फ कैद भुक्तान गरी थुनामुक्त भइसकेको देखिँदा त्यसतर्फ विचार गरिरहनु नपर्ने ।

इजलास अधिकृत: मुना अधिकारी (ढकाल)

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७६ साल असार ४ गते रोज ४ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७२-CR-१४५२, बहुविवाह, नेपाल सरकार वि. शोभा श्रेष्ठ गुरुङ

अन्जानमा सौता हुन जाने महिलालाई

उसको हुने पतिको पहिले नै विवाह भई अर्को श्रीमती भएको भन्ने तथ्यको जानकारी उसलाई थियो भन्ने स्पष्ट प्रमाणको अभावमा कसुरदार ठहर गरी सजाय गर्न मिल्दैन । प्रस्तुत मुद्दामा मिसिल संलग्न प्रमाणबाट यी प्रतिवादी शोभा श्रेष्ठले रविन्द्र श्रेष्ठको घरमा जेठी श्रीमती पनि छन् भन्ने कुरा जानी बुझिकन विवाह गरेको हो भन्ने तथ्य निर्विवाद रूपमा पुष्टि हुन सकेको नदेखिने ।

मुलुकी ऐन, विहावरीको महलको १० नं. मा भएकोव्यवस्थानुसार स्वास्नी मानिसले बहुविवाह गरेकोमा जानीजानी गरेको हो वा नजानिकन त्यो महत्वपूर्ण हुन्छ । प्रस्तुत विवादमा प्रतिवादी शोभाको बयानबाट नजानिकन विवाह गरेको देखिँदा निजलाई पुनरावेदन अदालत पोखराले सोही आधार टेकी सफाइ दिने गरी भएको फैसला कानूनसम्मत मिलेकै देखिन्छ । प्रतिवादी शोभाले प्रतिवादी रविन्द्रको जेठी श्रीमती छ भनेर जानीजानी विवाह गरेकोले निजलाई अभियोग दाबीबमोजिम नै सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग मिसिल सम्बद्ध दुवै प्रतिवादीहरूको बयानसमेतको आधार कारणबाट सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, विवेचित मुद्दाको तथ्य, आधार र कारणहरूबाट समेत प्रतिवादी रविन्द्र श्रेष्ठको घरमा जेठी श्रीमती छ भनी जानीजानी विवाह गरेको नभई अन्जानवस विवाह गरेको देखिँदा निज प्रतिवादी शोभा श्रेष्ठलाई बहुविवाहमा सजाय हुने गरी गरेको सुरु तनहुँ जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी गरी सफाइ पाउने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराबाट मिति २०७२।८।३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: गगनदेव महतो

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७६ साल असार ४ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. १४

१

मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७३-CR-०३८१, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. ईन्द्रा कुमाल

मृतक र प्रतिवादी ईन्द्रा कुमालबिच दैनिकजसो मादक पदार्थ सेवन गरी झगडा गर्ने कुटपिट गरिरहने भन्ने देखिनाले मौकामा उठेको कुनै कुरामा रिस थाम्न नसकी र एककासी ढुंगा प्रहार गरेको भन्ने कुरा मिसिल संलग्न प्रमाण कागजातबाट पुष्टि हुन सकेको नपाइने। श्रीमान्लाई मारी दिन्छु भनी ईन्द्रा कुमालले भनेकी र उक्त दिन दुवै श्रीमान् श्रीमतीले रक्सी खाएको अवस्थामा एकान्त ठाउँमा प्रतिवादीले ढुङ्गाले हानी आफ्नो श्रीमान्लाई मारेको भनी घटना विवरणमा चन्द्रकला कुमालले मौकामा कागज गरेको देखिँदा मृतकले ज्यान मार्ने मनसायले पटकपटक ढुंगा प्रहार गरेको देखिँदा तत्काल उठेको रिसका कारण मृतकलाई प्रहार गर्दा मरेको भन्ने देखिन नआउने।

प्रस्तुत वारदातको प्रकृति, तरिका तथा परिस्थिति हेर्दा तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. आकर्षित हुने देखिँदैन। ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. मा उल्लिखित तत्त्वहरू प्रस्तुत मुद्दाको वारदातमा विद्यमान रहेको पाइँदैन। यस दृष्टिकोणमा प्रतिवादी ईन्द्रा कुमाललाई तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १४ नं. को कसुर कायम गरी सजाय गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पोखराको फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी हुने।

तसर्थ विवेचित मुद्दाको तथ्य, कानूनी व्यवस्था र नजिर प्रमाणसमेतका आधारबाट प्रतिवादी ईन्द्रा कुमाललाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७३।२।६ को

फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई प्रतिवादी ईन्द्रा कुमाललाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय ठहर गरेको सुरु लमजुङ जिल्ला अदालतको मिति २०७२।६।१२ को फैसला मिलेको देखिँदा उक्त फैसला सदर हुने।

तर मृतक तथा प्रतिवादी श्रीमान् श्रीमती भएको, निजहरू दुवैजनाले सधैँजसो मादक पदार्थ सेवन गरी झै-झगडा गर्ने गरेको, प्रतिवादीले जोखिमी हतियार प्रयोग नगरी साधारण ढुंगाले प्रहार गरेको, प्रतिवादीलाई मृतकले प्रताडित गरेको कारण एक अर्काप्रति वितृष्णा पैदा भई हत्याको वारदात घटित हुन गएको परिस्थितिलाई विचार गर्दा प्रतिवादी ईन्द्रा कुमाललाई ठहर भएबमोजिमको सजाय गर्दा चर्को पर्ने भएकाले सुरु लमजुङ जिल्ला अदालतले तत्कालीन मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको १८८ नं. बमोजिम प्रतिवादीलाई १२(बाह्र) वर्ष कैद सजाय गर्ने गरी व्यक्त गरेको राय औचित्यपूर्ण र मनासिब देखिँदा सोही राय सदर हुने।

इजलास अधिकृत: भरतकुमार दाहाल

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा

इति संवत् २०७६ साल जेठ २३ गते रोज ५ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७३-CR-०८९४, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. प्रमोद अर्यालसमेत

प्रतिवादी प्रमोद अर्यालले अदालतमा कसुरमा इन्कार रही बयान गरे तापनि अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा प्रदीप सिंह ठकुरीले मृतक सुनिल चौधरीलाई खुकुरीले घाँटीमा प्रहार गरेको, मृतक लडेपछि सुनिल वि.क.ले रडले हानेको र मृतकलाई आफूले खाल्डो खनी मृतकको खुट्टा समाई माटोले पुरेको भनी वारदातमा उपस्थित भई मार्ने कार्यमा संलग्न भएको भनी कसुर स्वीकार गरी बयान गरेको

देखिन्छ । प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीले अदालतमा बयान गर्दा प्रमोद अर्यालले साथमा लिई हिँडेको रडले टाउकोमा हानेको र मृत्यु भएपछि प्रमोद र सुनिल मिली खाडल खनी पुरिदिएको हो भनी प्रतिवादी प्रमोद अर्याललाई पोल गरी बयान गरेको पाइन्छ । लासजाँच मुचुल्कामा मृतकलाई गाडिएको अवस्थामा भेटिएको भन्ने उल्लेख हुँदा प्रतिवादी प्रमोद अर्यालले मौकामा आफूले मृतकलाई हत्या गरेपछि खाडलमा पुरेको भनी गरेको मौकाको बयान समर्थित भएको पाइने ।

मिति २०६८।७।२४ गते राति प्रमोद अर्यालसमेतले सुनिल चौधरीको हत्या गरी लास गाडेका भनी सहप्रतिवादीहरू गंगा सापकोटा, दीपक गिरीले प्रतिवादी प्रमोद अर्याललाई पोल गरी मौकामा बयान गरेको देखिन्छ । मृतक सुनिल चौधरीलाई प्रमोद अर्याल, प्रदीप सिंह ठकुरी, सुनिल वि.क.समेतको मिलेमतोमा खुकुरी प्रहार गरी हत्या गरी खाल्टोमा लास गाडेका हुन् भनी योगराज सुवेदीसमेतले मौकामा कागज गरेको र सो कागजको बेहोरा र सहिछाप आफ्नै हो भनी समर्थन गरी अदालतमा बकपत्रसमेत गरेको देखिँदा प्रतिवादी प्रमोद अर्यालसमेतको प्रत्यक्ष संलग्नता तथा मिलेमतोमा मृतक सुनिल चौधरीको कर्तव्यबाट हत्या गरी लास गाडेको तथ्य स-प्रमाण पुष्टि हुन आयो । सो हुँदा प्रतिवादी प्रमोद अर्याललाई तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १७(३) नं. तथा ऐ. महलको ४ नं. अनुसार कसुर कायम गरी सजाय ठहर गरेको चितवन जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिने ।

प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीको हकमा चितवन जिल्ला अदालतबाट ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय गरी अ.बं.१८८ नं. बमोजिम १२ वर्ष कैदको राय लगाउने गरी भएको फैसलाउपर पुनरावेदन तथा साधक जाहेर हुँदा सुरु फैसला केही उल्टी गरी ज्यानसम्बन्धी महलको

१३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गरी रायसमेत बदर गरी पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट फैसला भई यी प्रतिवादीको हकमा पुनरावेदन नपरी साधकको रोहबाट पेस हुन आएको देखिन्छ । सो सम्बन्धमा प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीको अदालतको बयान हेर्दा मैले दिउँसोदेखि साथमा बोकेको खुकुरीले सुनिल चौधरीलाई घाँटीमा हानेकोमा छटपटाई भुइँमा लडेको हो । मसमेतका सबै प्रतिवादीको मिलेमतोमा सुनिल चौधरीको कर्तव्य गरी मारेको भनी प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरी अदालतसमक्ष कसुरमा साबित भई बयान गरेको देखियो । लासजाँच मुचुल्कामा घाँटीको भागमा काटेकोजस्तो घाउ, निधारदेखि ओठसम्म काटेकोजस्तो घाउ रहेको भन्ने उल्लेख छ भने शव परीक्षण गर्ने विशेषज्ञ डा. श्रीप्रसाद अधिकारी, डा.श्री कालीदास अधिकारी तथा डा.श्री श्यामकुमार श्रेष्ठले मृतक सुनिल चौधरीको टाउकोमा ६×२×३cm को धारिलो हतियारको चोट भएको, घाँटीमा धारिलो हतियारको ९×६×२cm को अगाडिपट्टि चोट भएको भनी अदालतमा बकपत्र गरेको देखिँदा यी प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीले आफूले मृतकलाई घाँटीमा खुकुरीले प्रहार गरेको भन्ने अदालतको साबिती बयान पूर्णरूपमा समर्थित भएको देखियो । प्रतिवादीले कसुरमा साबित भई बयान गरेको देखिँदा यसै सम्बन्धमा "अदालतसमक्ष प्रतिवादीको कसुरमा भएको साबितीलाई अदालतले प्रत्यक्ष प्रमाणको रूपमा लिनुपर्ने" (ने.का.प. २०६५, माघ, नि.नं. ८०२९) भनी यस अदालतबाट न्यायिक सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएको परिप्रेक्ष्यमा प्रतिवादीको उक्त साबिती बयानलाई प्रत्यक्ष प्रमाणको रूपमा लिनु पर्ने ।

तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(१) नं. मा "धार भएको वा नभएको जोखिमी हतियार गैह्रले हानी, रोपी, घोची ज्यान मारेमा जतिजना भई हतियार छाडेको छ उतिजना ज्यानमारा ठहर्छन् । सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय

गर्नुपर्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । सो हुँदा यी प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको फैसला मिलेकै देखिन आयो । प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीलाई सजायको हकमा विचार गर्दा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४० को उपदफा (२) मा “कानूनमा कुनै कसुरबापत सर्वस्वको सजाय हुने रहेछ भने यो ऐन प्रारम्भ भएपछि त्यस्तो कसुरमा सजाय गर्दा सर्वस्व हुने गरी सजाय गरिने छैन” भन्ने कानूनी प्रावधान रहेको सन्दर्भमा यी प्रतिवादीलाई सर्वस्व ठहर गर्नु कानूनसम्मत नहुने हुँदा प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(१) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने ।

प्रतिवादीहरू गंगाधर सापकोटा र दीपक गिरीका हकमा विचार गर्दा प्रमोद अर्याल मेरो पसलमा आई रक्सी खाने क्रममा सुनिल चौधरीलाई मसमेत ३ / ४ जनाले मारी खाडलमा पुरेको हो भनी मलाई भनेको हो । सो बारेमा मैले अन्य कोही कसैलाई भनिन भनी गंगाधर सापकोटाले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गरेको देखिन्छ भने गाउँमा मान्छे मरेछ भनी प्रमोदले भन्दा हल्ला नगर त्यस्तो कुरा गर्ने होइन भनेकोसम्म हो भनी निजले अदालतमा बयान गर्दा बेहोरा लेखाएको पाइने ।

प्रतिवादी दीपक गिरीले मौका तथा अदालतमा बयान गर्दा प्रदीप सिंह ठकुरीलाई गाडीमा लिएर गोरखा जाँदा बसको छतमा बसेको बेला निजले मैले सुनिल चौधरीलाई मारी गाडेको छु भनेकाले थाहा पाएको हो । सो कुरा कसैलाई भनिन भनी बेहोरा लेखाएको देखियो । यी प्रतिवादीहरू घटना वारदातमा उपस्थित भएको भन्ने देखिन आएन । मृतक सुनिल चौधरीलाई कर्तव्य गरी मारेको थाहा पाई सोको सूचना नगरेको कुरामा यी प्रतिवादीहरू साबित नै रहेको देखिन्छ । सो हुँदा प्रतिवादीहरू गंगाधर सापकोटा र दीपक गिरीलाई

ज्यानसम्बन्धी महलको २५ नं. बमोजिम सजाय गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको फैसला अन्यथा देखिन आएन । प्रतिवादीहरू गंगाधर सापकोटा र दीपक गिरीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १७(३) नं. बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ: विवेचित मुद्दाको तथ्य आधार र कानूनी व्यवस्था एवम् नजिरसमेतका आधार कारणबाट प्रतिवादी प्रमोद अर्याललाई तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १७(३) नं. बमोजिम ३(तीन) वर्ष कैद र ऐ. महलको ४ नं. बमोजिम ६(छ) महिना कैद गरी जम्मा ३(तीन) वर्ष ६(छ) महिना कैद गरेको हदसम्मको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको मिति २०७०।९।१६ को फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई प्रतिवादी प्रमोद अर्याललाई तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने र प्रतिवादीहरू गंगाधर सापकोटा र दीपक गिरीका हकमा ऐ. ऐन, महलको २५ नं. बमोजिम जनही रु.२०।- (बीस) जरिवाना गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको मिति २०७०।९।१६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सो हदसम्म सदर हुने ठहर्छ । अर्का प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको मिति २०७२।१२।२३ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । प्रतिवादी प्रदीप सिंह ठकुरीलाई मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४० को उपदफा (२) ले सर्वस्व गर्न नमिल्ने हुँदा जन्मकैदको मात्र सजाय हुने ।

इजलास अधिकृत:- भरतकुमार दाहाल

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा

इति संवत् २०७६ साल जेठ २३ गते रोज ५ शुभम् ।

इजलास नं. १५

१

मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही, ०७२-CA-२०३९, नामसारी दर्तासमेत, प्रकाशमान कंसाकार वि. शरणरत्न स्थापित

रूप कमल कंसाकारको नाममा दर्ता कायम रहेको घरजग्गामा निजको अपुताली को कसमा जाने हो ? भन्ने हक बेहकको प्रश्न उत्पन्न भएकोमा सो निरूपणका निमित्त जिल्ला अदालतबाट अपुताली हक कायम गराई ल्याउनु भनी पक्षहरूलाई सुनाई दिनु पर्नेमा निवेदक प्रकाशमान कंसाकारसमेत नाता प्रमाणपत्रमा उल्लेख भएबमोजिमका हकदारहरूका नाममा नामसारी दा.खा.भई जाने ठहर्‍याई मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजारबाट निर्णय भएको देखियो । यसरी रूप कमल कंसाकारको नाममा दर्ता कायम रहेको घरजग्गामा निजको अपुताली को कसमा जाने हो ? भन्ने हक बेहकको प्रश्न उत्पन्न भएकोमा प्रमाण बुझी हक स्थापित गरी निर्णय दिने अधिकार मालपोत कार्यालयलाई प्रदान गरिएको देखिँदैन । तसर्थ, मालपोत कार्यालयबाट भएको निर्णयलाई बदर गर्ने गरी सम्बन्धित जिल्ला अदालतबाट हक कायम गराई ल्याउनु भनी पक्षहरूलाई सुनाई दिनु भनी पक्षहरूलाई तारेख तोकी प्रस्तुत मुद्दाको मिसिल मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजार, काठमाडौंमा पठाइदिने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालतबाट भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने अवस्था नदेखिने ।

अतः उल्लिखित आधार र कारणहरूबाट मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजार, काठमाडौंबाट मिति २०७२।०४।१० मा भएको निर्णय बदर गर्ने गरी, रूप कमल कंसाकारको अपुताली को कसले प्राप्त गर्ने हो ? भन्ने सम्बन्धमा सम्बन्धित जिल्ला अदालतबाट हक कायम गराई ल्याउनु भनी पक्षहरूलाई सुनाई दिनु

भनी प्रस्तुत मुद्दामा तारेखमा रहेका पक्षलाई मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजार, काठमाडौंमा उपस्थित हुन जानको निमित्त तारेख तोकी प्रस्तुत मुद्दाको मिसिल मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजार, काठमाडौंमा पठाइदिने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७३।०१।२१ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: कृति थापा

कम्प्युटर: चन्द्रशेर राना

इति संवत् २०७५ साल असोज २ गते रोज ३ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७५-RC-००१५, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. केदारप्रसाद दाहाल

बुबा केदारप्रसाद दाहाललाई कारबाही गरिपाउँ भन्ने हरिप्रसाद दाहालको किटानी जाहेरी दिएको र प्रतिवादी केदारप्रसाद दाहालले सुरु अदालतमा कसुरमा स्वीकार गरी बयान गरेको पाइन्छ । मौकामा कागज गर्ने सिता चौलागाई (दाहाल), विन्दा दाहाल, प्रेमकुमारी चौलागाई, हेमन्त चौलागाईसमेतले अदालतमा केदारप्रसाद दाहालले अम्बिका दाहाललाई मार्ने उद्देश्यले खुकुरी प्रहार गरी सख्त घाइते बनाई ज्यान मारेको भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ । त्रि.वि. Kathmandu Autopsy Center को रिपोर्टमा मृतक अम्बिका दाहालको शव परीक्षण प्रतिवेदनमा मृत्युको कारण (Cause of death) मा Sharp force incised wounds to the head भन्नेसमेतको बेहोराको भएको पाइन्छ । यसरी प्रतिवादी केदारप्रसाद दाहालले मिति २०७०।१२।१० गते आफ्नै श्रीमती अम्बिका दाहाललाई ज्यान मार्ने मनसायले टाउकोलगायत शरीरको विभिन्न भागमा खुकुरी प्रहार गरी सख्त घाइते बनाएको र सोही चोटको कारणले उपचारकै क्रममा मिति २०७०।१२।३० गते अम्बिका दाहालको मृत्यु हुन गएको देखिँदा



निज प्रतिवादी केदारप्रसाद दाहाललाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ नं. र १३ नं. को देहाय दफा १ बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई भएको सुरु दोलखा जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनबाट साधक सदर गर्ने गरेको फैसला अन्यथा भन्न नमिल्ने।

तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३ नं. को देहाय (१) मा ज्यानमारालाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने व्यवस्थाको सन्दर्भमा प्रस्तुत मुद्दामा पुनरावेदन अदालत पाटनबाट यी प्रतिवादीलाई ऐ. महलको १३ नं. को देहाय (१) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गरेको मिलेको देखिन आए पनि मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ (हाल मुलुकी अपराध संहिता, २०७४) दफा ४० को उपदफा (२), फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ र केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९ को उपदफा (२) को खण्ड (ख) मा रहेको व्यवस्था तथा उक्त ऐनहरू यही भाद्र १ गतेदेखि लागू भइसकेको सन्दर्भमा प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी केदारप्रसाद दाहाललाई सर्वस्वको सजाय नहुने भई निजलाई जन्मकैद सजाय हुने।

तसर्थ, सुरु दोलखा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।५।३ मा भएको फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७२।६।५ को फैसला मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ (हाल मुलुकी अपराध संहिता, २०७४) दफा ४० को उपदफा (२) मा कानूनमा कुनै कसुरबापतमा सर्वस्वको सजाय हुने रहेछ भने यो ऐन प्रारम्भ भएपछि त्यस्तो कसुरमा सजाय निर्धारण गर्दा सर्वस्व हुने गरी सजाय गरिने छैन भन्ने व्यवस्थाअनुसार सर्वस्व गर्नु परेन। जन्मकैदको सजाय मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: जयराम श्रेष्ठ

इति संवत् २०७६ साल वैशाख २५ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. १६

१

मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७२-CR-०९८३, लागु औषध ब्राउन सुगर, नेपाल सरकार वि. गणेश जि.सी.समेत

प्रतिवादीहरू तिलक खड्का र गणेश जि.सी.ले एकआपसमा सल्लाह गरी भारतबाट लागु औषध खरिद गरी ल्याएको र सेवनसम्मको कुरालाई स्वीकार गरेको, परिमाण र मात्रासमेत अत्यधिक नदेखिएको, प्रतिवादीहरूको अधिकारप्राप्त अधिकारी र सुरु अदालतको बयानसमेतका आधार प्रमाणबाट प्रतिवादीहरूको आपराधिक कार्य सेवनतर्फ मात्र रहेको देखिँदा प्रतिवादीहरूलाई लागु औषध खरिद बिक्री वितरणतर्फ सजाय गरिपाउँ भन्ने नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ विवेचित आधार, कारण र प्रमाणसमेतबाट प्रतिवादी तिलक खड्का र गणेश जि.सी.ले लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(ड) बमोजिमको कसुर ठहर गरी जनही एक वर्ष कैद सजाय गर्नुपर्नेमा प्रतिवादीहरूलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(छ) बमोजिम जनही कैद वर्ष ५ र रु. ५०००।- जरिवाना हुने ठहर्‍याई सुरु रूपन्देही जिल्ला अदालतले मिति २०७१।४।२८ मा गरेको फैसला सो हदसम्म नमिलेको हुँदा केही उल्टी भई प्रतिवादी तिलक खड्का र गणेश जि.सी.लाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(ड) बमोजिम सेवनको कसुरमा सोही दफाबमोजिम जनही एक वर्ष कैद सजाय हुने। प्रतिवादी तिलक खड्कालाई स.फौ.नं. ००१५।४४ को ब्राउन सुगर मुद्दामा सजाय भइसकेको हुँदा निज तिलक खड्कालाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐनको दफा १६ बमोजिम थप ६ महिना कैद र रु. १०,०००।- दश

हजार जरिवाना हुने ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट मिति २०७२।२।३ मा भएको फैसला मनासिबै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद बस्याल

कम्प्युटर: विजय खड्का

इति संवत् २०७५ साल चैत २६ गते रोज ३ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७३-CR-०५०३ र ०७३-CR-०८५६, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. सविन्द्रसेन ठकुरी र टेकबहादुर शाह ठकुरीसमेत वि. नेपाल सरकार**

प्रतिवादीहरू मिली मृतकलाई मार्ने मत सल्लाह गरी प्रतिवादीमध्येका सविन्द्रसेन ठकुरीलाई सुपारी र रु.५,०००।- दिएको र सो रूपैयाँमध्ये आफूलाई रु.२,०००।- दिई मृतकलाई मार्ने योजना वारदात हुनुपूर्व २०६९ साल मङ्सिर महिनादेखि बनाई २०७० वैशाखमा मार्ने सहमति भएअनुसार घटना घटाएका हौं भनी प्रतिवादीमध्येका मनोजसेन ठकुरीले बयान बेहोरा लेखाएको, त्यस्तै मृतकहरू सुती निदाएको अवस्थामा मौका पारी प्रतिवादीमध्येका मृतकका सासू टिकाकुमारी शाह र ससुरा टेकबहादुर शाह ठकुरी घरनजिक बारीमा र मृतककी नन्द मधु शाह ठकुरी मृतक भाउजू सीता शाहको घरनजिक बारीमा मानिस हेर्न बसेका र अन्य सहप्रतिवादीहरू गणेशजंग शाह, पशुपति शाह, मनोजसेन ठकुरी मृतकको घरभित्र प्रवेश गरी वारदात घटाएको भनी निजहरूकै बयानबाट पुष्टि हुन आएकोले प्रस्तुत वारदात रीसको आवेशमान नभई नियोजित रूपमा रहेको भन्ने देखिन आएको छ। समग्र मिसिलको अध्ययनबाट प्रस्तुत वारदात घटाउनमा यी प्रतिवादीहरूको पूर्वयोजना रहेको र योजना मुताबिक घटना घटाएको भन्ने देखिने।

तसर्थ सुरु गोरखा जिल्ला अदालतले प्रतिवादीहरू टेकबहादुर शाह ठकुरी, टिकाकुमारी शाह ठकुरी, मधु शाह ठकुरी, पशुपति शाह ठकुरीलाई

तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद गर्ने गरी र साधकको रोहमा पेस हुन आएका प्रतिवादीहरू गणेशजंग शाह र मनोजसेन ठकुरीलाई समेत तत्कालीन मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद गर्ने ठहर्छाई भएको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको फैसला मिलेकै देखिँदा परिवर्तन गरिरहन नपर्ने।

सर्वश्वको हकमा विचार गर्दा वर्तमान मुलुकी अपराध (संहिता), २०७४ मिति २०७५ साल भाद्र १ गतेदेखि लागू भएको र उक्त ऐनको दफा ४० को उपदफा (२) मा कानूनमा “कुनै कसुरबापतमा सर्वश्वको सजाय हुने रहेछ भने यो ऐन प्रारम्भ भएपछि त्यस्तो कसुरमा सजाय गर्दा सर्वश्व हुने गरी सजाय गरिने छैन” भनी व्यवस्था गरेको देखिन्छ। त्यसैगरी फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा “कुनै कसुरका सम्बन्धमा कसुर गर्दाका बखतभन्दा सजाय निर्धारण गर्दाका बखत कानूनबमोजिम घटी सजाय हुने रहेछ भने घटी सजाय हुने गरी निर्धारण गर्नुपर्दछ” भन्ने व्यवस्थासमेत रहेको हुँदा सर्वश्व गरिरहन नपर्ने।

अतः विवेचित तथ्य आधार र कारणसमेतबाट प्रतिवादीहरू टेकबहादुर शाह ठकुरी, मधु शाह ठकुरी, टिकाकुमारी शाह ठकुरी र पशुपति शाह ठकुरी, गणेशजंग शाह ठकुरी र मनोज सेन ठकुरीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद हुने ठहर गरी सुरु गोरखा जिल्ला अदालतले मिति २०७०।१।१२ मा गरेको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७३।२।३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। त्यसैगरी प्रतिवादीमध्येका सविन्द्रसेन ठकुरीको हकमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिम एक वर्ष कैद हुने ठहर्छाएको पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७३।२।३ को

फैसलासमेत मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।  
इजलास अधिकृत: उषा श्रेष्ठ  
कम्प्युटर: हर्कमाया राई  
इति संवत् २०७६ साल असार ८ गते रोज १ शुभम् ।

### एकल इजलास

मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७५-WO-१२५२,  
परमादेश, सर्वदेवप्रसाद ओझा वि. सम्माननीय अध्यक्ष  
न्याय परिषद् सचिवालय, रामशाहपथसमेत

प्रस्तुत उजुरीको सम्बन्धमा विचार गर्दा निवेदकको जाहेरीले वादी नेपाल सरकार भएको ठगी मुद्दामा न्यायकर्ताबाट न्यायिक विचलन भएको भन्ने आधारमा निवेदकले न्याय परिषद्मा उजुरी गरेको पाइयो । संविधानको धारा १५३ को व्यवस्थालाई हेर्दा न्याय परिषद्मा कुनै न्यायाधीश विरुद्ध उजुरी गर्न सक्ने, न्याय परिषद्ले परेका उजुरीको प्रारम्भिक छानबिन गर्न सक्ने र प्रारम्भिक छानबिन गराउँदा विशेषज्ञबाट गराउन आवश्यकता देखेमा जाँचबुझ समिति गठन गर्न सक्नेछ भन्ने व्यवस्था रहेको पाइन्छ । उजुरीको बेहोरा हेर्दा मुद्दाको तथ्य र अनुसन्धानबाट संकलित वस्तुनिष्ठ ठोस सबुद प्रमाण मूल्याङ्कन नगरिएको, अभियुक्तउपरको दाबी प्रमाणित गर्ने सबुद प्रमाणलाई गैरजिम्मेवारीपूर्ण तरिकाले प्रतिवादीको पक्षमा व्याख्या गरिएको भन्नेसमेतको देखिन्छ । प्रस्तुत आरोपको सत्यताको निरूपण उक्त मुद्दा पुनरावेदकीय क्षेत्राधिकारमा प्रवेश गरेपछि पुनरावेदनको रोहबाट जिल्लाबाट भएको फैसला कानूनपूर्वक र कानूनको आधार हेरी भएको हो वा होइन ? न्याय सम्पादनको सिलसिलामा न्यायाधीशले विवेकसम्मत रूपले न्यायिक मन प्रयोग गरी फैसला गरेको छ वा छैन सम्पूर्ण कुरालाई दृष्टिगत गरी पुनरावेदनको रोहबाट विचार हुने विषय हो, जसमा सुरुबाट फैसला हुँदा Gross injustice भएको छ वा छैन हेरी विचार गरिने विषयमा सबै मुद्दाहरूमा दुवै पक्षले जित्ने अवस्था रहँदैन । एक पक्षले हार्ने अर्को पक्षले

जित्ने हुन्छ । हार्ने पक्षले दिएको उजुरीको आधारमा फैसला गर्ने न्यायाधीशले न्याय सम्पादनको कार्यबाट अलग गर्नु पनि न्यायाधीशमाथि नै अन्याय हुन जाने हुन्छ । परेको उजुरी सम्बन्धमा न्याय परिषद्लाई जानकारी भएको र निजलाई स्थानान्तरण गरिसकेको अवस्थासमेत देखिने । न्याय परिषद्ले परेको उजुरीको औचित्य हेरी सोमा आवश्यकता र कार्यको प्रकृतिअनुसार कारबाहीमा आउने नै हुँदा निवेदकको निवेदन जिकिरकै आधारमा न्याय सम्पादनजस्तो ज्यादै संवेदनशील कार्यमा प्रतिकूल असर पर्ने गरी न्याय सम्पादनको कार्यबाट अलग गर्नुपर्ने भन्ने कुरा नै औचित्यपूर्ण देखिँदैन । कारबाही गर्नेजस्तो संवेदनशील कार्य ज्यादै संयमित भई प्रतिकूल असर नपर्ने गरी आवश्यकताअनुसार साधिकार निकायले गर्ने नै हुँदा निवेदकले बाध्य पार्न सक्ने कुरासमेत औचित्यपूर्ण हुन आउँदैन । जहाँसम्म संवैधानिक दायित्वको असक्षमताका विषयहरू उठाइएका छन् ती विषयहरूको सम्बोधन न्याय परिषद्ले प्रस्तुत विवादित मुद्दालगायत आरोपित व्यक्तिका अन्य काम कारबाहीलाई सूक्ष्म रूपमा अनुगमन गरिरहेकै हुन्छ । केवल एक मुद्दाको काम कारबाहीबाट आरोपित कसुरहरू प्रमाणित गर्न सहज र सम्भव नहुन पनि सक्छ । यसो भन्दैमा कुनै पनि काम कारबाहीमा कानूनको मर्म र भावनाविपरीतको काम कारबाही गर्न न्यायाधीशलाई छुट छ भन्ने पनि होइन । हरेक न्यायाधीशले अपनाउँदै आएको स्वतन्त्रता, सक्रियता, स्वच्छन्दता र आत्मसंयमितताको अवलोकन, निगरानी न्याय परिषद्ले सूक्ष्म रूपमा गरिरहेकै हुन्छ । उजुरी नै न्यायाधीशलाई कारबाही गर्ने एक मात्र आधार हुन सक्दैन । उजुर नपरेको अवस्थामै पनि न्यायिक विचलन र कार्य क्षमताको अभाव हुने न्यायकर्मी कारबाहीको दायराबाट उम्कन सक्दैन । संवैधानिक व्यवस्थालाई हेर्दा उजुरी पर्नासाथ उजुरीको छानबिन गर्नुपर्ने भन्ने बाध्यात्मक व्यवस्था देखिँदैन, तथापि न्यायिक विचलन हुनेका विरुद्ध परेको उजुरीको छानबिन गर्नु न्याय परिषद्को कर्तव्य हुन आउँछ । उजुरीको प्रारम्भिक अनुसन्धान न्याय

परिषद्ले आन्तरिक रूपमा गर्न सक्ने, अनुसन्धानबाट कारबाहीको प्रक्रिया अगाडि बढाउनु उपयुक्त नदेखिए उजुरी कर्तालाई कारबाहीको जानकारी दिनुपर्ने भन्ने कानूनी रहेको पनि पाइएन । यसबाट सबै प्रकृतिका उजुरी अनुसन्धानको जानकारी उजुरीकर्तालाई दिनुपर्छ भन्ने कानूनी बाध्यता छैन र दिनु पनि नहुने ।

अदालतसमक्ष प्रवेश गरेका मुद्दाहरूमा विवादका दुई वा सोभन्दा बढी पक्षहरू रहने, अदालतले सबुद प्रमाणको सही र विश्लेषणयुक्त मूल्याङ्कन गरी न्याय सम्पादन गर्ने क्रममा एक पक्षको हार र अर्को पक्षको जीत हुनु स्वाभाविक हुन्छ । मुद्दामा पराजित हुने सबै पक्षले चित्त बुझाई बस्छन् र बस्नुपर्छ भनी बाध्य गर्न पनि सकिँदैन । निवेदकले सुरु फैसला गर्ने न्यायाधीशका विरुद्ध न्याय परिषद्मा उजुरी दायर गरेकोमा निजलाई न्याय सम्पादनको कार्य गर्नबाट रोकी पाउँ भन्ने दाबीसमेत गरेको पाइयो । न्याय परिषद् ऐनको व्यवस्थालाई हेर्दा कुनै पनि न्यायाधीश विरुद्ध जाँचबुझ गर्न जाँचबुझ समिति गठन भएकोमा त्यस्तो न्यायाधीशले जाँचबुझको टुंगो नलाग्दासम्म आफ्नो पदको कार्य सम्पादन गर्न नपाउने भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखियो । न्याय परिषद्मा परेको सबै उजुरीको छानबिन गर्नुपर्छ भन्ने बाध्यतात्मक व्यवस्था संविधानले गरेको नपाइने । उजुरी कर्ताले कुनै फैसलाको सम्बन्धमा उजुरी गरेको भए त्यस्तो फैसलाको प्रतिलिपि अनिवार्य संलग्न गरी न्याय परिषद्मा उजुरी गर्नुपर्ने कानूनी व्यवस्था देखिन्छ । यसको प्रारम्भिक अध्ययनबाट उजुरीकर्ताले लगाएको आरोपको सत्यताको नजिक पुग्न सहयोग पुग्दछ । प्रारम्भिक अनुसन्धानबाट उजुरीको छानबिन गर्नु नपर्ने निष्कर्षमा पुगेको अवस्थामा आरोपित व्यक्तिलाई आफ्नो काम कर्तव्यबाट अलग गर्न पनि नमिल्ने । किनभने उजुर परेका आधारमा मात्र जिम्मेवारीबाट अलग गर्दै जाने हो भने न्याय सम्पादनको समग्र पक्ष नै प्रभावित हुन जान्छ । उजुरी पर्नासाथ न्यायाधीश र उसको काम कारबाहीलाई शङ्काको घेरामा राखिने हो भने उसलाई जिम्मेवारीबाट पन्छाउने हो

भने न्याय सम्पादन गर्ने जो कोहीलाई जुनसुकैबेला जिम्मेवारीबाट पन्छाउनु पर्ने अवस्था आउँछ, जसबाट समग्र न्यायिक प्रक्रिया नै अवरुद्ध भई न्याय प्रतिको जनविश्वास धरासायी हुन पुग्दछ । उल्लिखित विवेचित आधारमा निवेदकहरूको मागसमेत कानूनसम्मत तथा व्यावहारिक एवम् कुनै हिसाबले उचित देखिन नआउने ।

अतः कुनै पनि व्यक्तिले न्यायाधीशबाट भए गरेका काम कारबाहीउपर चित्त नबुझेमा कानूनी प्रक्रिया पुन्याई उजुरी दिनसक्ने संवैधानिक एवम् कानूनी व्यवस्था रहेको, उजुरकर्ताले उजुरी गर्दा कुनै मुद्दामा भएको काम कारबाहीको विषयसँग सम्बन्धित भए सो फैसलाको प्रतिलिपिसमेत साथै पेस गर्नुपर्ने भन्नेसमेत कानूनी व्यवस्था भएको परिप्रेक्ष्यमा उजुरीका साथ पेस भएको फैसलाको प्रतिलिपि अध्ययन गर्दा त्यस्तो न्यायाधीश विरुद्ध छानबिन गर्न आवश्यक देखेमा निज विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया अगाडि बढाउने र त्यस्तो अवस्थामा मात्र आरोपित न्यायाधीशलाई काम कारबाहीबाट निलम्बन गर्नुपर्ने भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । उजुर परेकै आधारमा कुनै पनि न्यायाधीशउपर कारबाहीको प्रक्रिया अगाडि बढाउनुपर्छ र जिम्मेवारीबाट अलग गर्नुपर्छ भन्ने संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था नभए नरहेको हुँदा न्याय प्रशासनलाई प्रभावकारी, स्वतन्त्र, निष्पक्ष एवम् विवादरहित रूपमा सञ्चालन गर्नको लागि न्याय परिषद्ले आवश्यकता र औचित्यको आधारमा उजुरीहरूको छानबिन गर्ने, कारबाही प्रक्रिया अगाडि बढाउने वा उजुरी तामेली राख्न सक्ने नै हुँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था विद्यमान नदेखिएबाट विपक्षीहरूबाट लिखित जवाफसमेत मगाइरहनु पर्ने अवस्था नदेखिँदा प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: राजेन्द्र वाग्ले

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७६ साल जेठ २९ गते रोज ४ शुभम् ।